मरकुस के अनुसार सुसमाचार

पुनर्कथित,
व्याख्यायित,
आज के लिए।

GOOD NEWS

मरकुस के अनुसार सुसमाचार

पुनर्कथित, व्याख्यायित, आज के लिए।

Hans-Jörg Ronsdorf

दूसरा संस्करण, अप्रैल 2020
© Kirche für Alle e.V. – सर्वाधिकार सुरक्षित।
जर्मन संस्करण का ISBN: 978-3-9820715-1-0
Kirche für Alle e.V.
Hans-Jörg Ronsdorf
Albis 6 1/2
87477 Sulzberg
hj-ronsdorf@t-online.de
www.hans-joerg-ronsdorf.de
आवरण डिज़ाइन: टोबियास श्ट्रिकर (Tobias Stricker)

kata Markon

देखो तो, यीशु कितना महिमामय है,

जो सारी सुन्दरता से बढ़कर है!

पहले कुछ बातें

मरकुस के अनुसार सुसमाचार काफ़ी अनोखा है। यह बाल-भरे, बपतिस्मा देने वाले भविष्यद्वक्ता यूहन्ना से शुरू होता है और यीशु के क्रूर क्रूस-मरण और चकित कर देने वाले पुनरुत्थान के साथ समाप्त होता है। मरकुस एक बेचैन करने वाली, हाँ, झकझोर देने वाली कहानी सुनाता है। ऐसी जगहों के साथ जो दुष्टात्माओं से भरी हैं, विस्फोटक संघर्षों के साथ, चंगे किए गए लोगों के अद्भुत चमत्कारों के साथ, भूखों के लिए भोजन के रहस्यमय रूप से बढ़ जाने के साथ और प्रकृति की शक्तियों पर यीशु के अधिकार के साथ।

मरकुस के सुसमाचार में यीशु से मिलना कुछ-कुछ एक साहसिक उपन्यास जैसा है – घटनाओं से भरा, गहरा और श्वेत-श्याम चित्रों से भरा हुआ, जो पढ़ने वाले को बेदम और सवालों से भरा छोड़ देते हैं। **आख़िर यह मनुष्य है कौन?** इसका सही उत्तर मरकुस देता है।

जो पुस्तक आप अपने हाथों में पकड़े हैं, वह मरकुस के सुसमाचार का एक व्याख्यात्मक रूपांतर है। इस पुनर्कथित पाठ के साथ कोई दूसरा अनुवाद भी लीजिए। सबसे अच्छा कोई काफ़ी शब्दशः अनुवाद, जैसे एल्बरफ़ेल्डर (Elberfelder), लूथर (Luther) या आइनहाइट्सयूबरज़ेत्सुंग (Einheitsübersetzung) (जर्मन बाइबल अनुवाद)।

मरकुस चार सुसमाचारों में से एक है। ये यीशु के जीवन के पूरे वृत्तान्त हैं। मरकुस सबसे छोटा है। पर शायद सबसे पुराना। यह एक रोमांचक, एक जीवंत वृत्तान्त है। बिना रुके यह आगे बढ़ता है, लगभग बेदम होकर, यरदन में यीशु के बपतिस्मे से लेकर यरूशलेम में क्रूस पर अंत तक। लगभग 3 वर्षों का समय।

इस सुसमाचार को एक बच्चा भी समझ सकता है। यह साफ़ पानी वाले कुएँ के समान है। पर एक गहरा कुआँ। जितना दिखता है, उससे गहरा। छिपे हुए ख़ज़ाने तैयार पड़े हैं, जो पहली नज़र में दिखाई नहीं देते। यह रूपांतर ऐसे आत्मिक धन तक पहुँचने में सहायता करना चाहता है।

यदि आप सीधे अध्याय 1 के साथ मरकुस के वृत्तान्त में प्रवेश करना चाहते हैं, तो आगे का परिचयात्मक पाठ आप बस छोड़ सकते हैं या बाद में पढ़ सकते हैं।

सुसमाचार का लेखक

लंबे समय तक लोग सोचते थे कि मरकुस केवल मत्ती के सुसमाचार का एक संक्षिप्त रूप है। इस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया जितना दूसरे सुसमाचारों पर। जब तक यह पता नहीं चला कि बात उलटी है: दूसरे सुसमाचार-लेखक मरकुस को पहले से जानते थे और उन्होंने उसके वृत्तान्त को अपने लेखन में उपयोग किया। इस सुसमाचार का **लेखक** पाठ में अपनी पहचान नहीं बताता। यीशु के दो चेलों ने, जो आँखों देखे गवाह थे, मत्ती और यूहन्ना के सुसमाचार लिखे। तो क्यों न पतरस का, बारह प्रेरितों के प्रवक्ता का, एक वृत्तान्त हो? शायद उसे लिखना पसंद नहीं था। वह मछुआरा था। उसने यीशु के जीवन का, राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया और उसकी शिक्षा दी। उसके बाद के सहकर्मी और विश्वासपात्र, यूहन्ना मरकुस ने ध्यान से सुना। और लिखता गया। पतरस और पौलुस का यह सहकर्मी आम तौर पर इस सुसमाचार का लेखक माना जाता है। इसीलिए इसे **मरकुस के अनुसार सुसमाचार** कहते हैं। बहुत बड़े भाग में पतरस के दृष्टिकोण से। एक आँखों देखे गवाह के, और ऐसे व्यक्ति के जो बहुत निकट था। अधिकांश प्रेरितों से भी अधिक निकट, सिवाय यूहन्ना और याकूब के, जो पतरस के साथ मिलकर यीशु के चारों ओर सबसे भीतरी घेरा थे। इस प्रकार यीशु के जीवन के इस वृत्तान्त को मरकुस के पतरस से जुड़े होने के कारण अधिकार मिलता है।

यह सुसमाचार उन बातों से बना है जो पतरस को याद थीं और जिनका उसने प्रचार किया। यह मानो प्रचार की सामग्री है, जिसका उद्देश्य **परमेश्वर की कहानी** सुनाना है: **यीशु की सेवा, उसकी मृत्यु और उसका पुनरुत्थान**। इसीलिए मरकुस अपने वृत्तान्त को सुसमाचार कहता है, क्योंकि इसमें प्रचार किया गया, **घोषित किया गया सुसमाचार** है। वह एक प्रचारक के रूप में लिखता है, जो अपने सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर के उद्धार के शुभ संदेश को आगे पहुँचाता है।

मरकुस ने घटनाओं के ठीक-ठीक ऐतिहासिक क्रम को अधिक महत्व नहीं दिया। यह केवल एक ऐतिहासिक वृत्तान्त नहीं है। नहीं, उसका सुसमाचार एक संदेश है! उसने इसे अपने उद्देश्य के अनुसार संकलित किया है।

एक **सुसमाचार-लेखक** के लिए घटनाओं का ठीक-ठीक क्रम सबसे महत्वपूर्ण बात नहीं है। वह संदेश को धर्मविज्ञान की दृष्टि से विस्तार में भी नहीं समझाता। यह काम बाद में दूसरों को करना था। वह यीशु के जन्म का वर्णन छोड़ देता है और सीधे उसके सार्वजनिक कार्य पर आ जाता है। मानो वह राज्य के सुसमाचार को स्पष्ट, विश्वसनीय और चुनौती देने वाले ढंग से प्रस्तुत करना शुरू करने की प्रतीक्षा ही न कर सकता हो।

मरकुस ने कब लिखा, यह ठीक-ठीक तय नहीं किया जा सकता। कुछ लोग मानते हैं कि पतरस के शहीद होने से पहले, दूसरे मानते हैं कि उसके बाद। ईस्वी सन् 60 और 70 के बीच के समय के बारे में सोचा जाता है। यरूशलेम के विनाश से पहले या बाद, इस पर भी विद्वानों में चर्चा होती है। फिर भी इसे सम्राट नीरो (Nero) के समय में, रोम की आग और उसके बाद हुए मसीहियों के सताव के बाद, रखने के विरुद्ध कोई बात नहीं है।

वह शायद **रोम** के मसीहियों के लिए लिखता है। रोम की आग – ऐसा कहा जाता था – स्वयं सम्राट नीरो ने लगाई थी। उसने संदेह मसीहियों की ओर मोड़ दिया। उसने उन्हें बलि का बकरा बनाकर उनका दुरुपयोग किया। इस प्रकार "अनन्त नगर" में मसीहियों का सबसे क्रूर सताव हुआ। जीवित मशालें बनाकर और जंगली जानवरों के आगे डालकर उन पर सबसे कठोर सताव आया। मरकुस अपने सुसमाचार का एक बड़ा भाग दुःखभोग के वृत्तान्त को, यीशु के पैशन (Passion) को देता है। वह उस परीक्षा और विरोध के बारे में लिखता है जिसका अनुभव यीशु ने किया। यह भली-भाँति सोचा जा सकता है कि उसकी विशेष चिन्ता सताव और दुःख में पड़े मसीहियों को उत्साहित करने की थी, न कि केवल यीशु के जीवन और दुःखभोग का एक ऐतिहासिक वृत्तान्त देने की।

मरकुस के लिए यीशु कौन है?

मरकुस अपने सुसमाचार में यीशु मसीह का वर्णन किसके रूप में करता है? वह यीशु को **परमेश्वर का पुत्र** कहता है। पिता का प्रिय पुत्र। आरंभ में ही यह स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर का पुत्र होने के नाते वह परमेश्वर ही है। पुत्र होने के नाते वह मसीहा है, मसीह, परमेश्वर का अभिषिक्त। वह **मनुष्य का पुत्र** की उपाधि रखता है। यह दानिय्येल 7 पद 13 की एक गूँज है, जहाँ वह “अति प्राचीन” के साथ घनिष्ठ संबंध में खड़ा है, जो सनातन परमेश्वर का एक नाम है। अर्थात् वह केवल एक मनुष्य नहीं है, नासरत के निर्माण-कारीगर का बेटा नहीं, बल्कि वह है जो यह असाधारण, अद्वितीय **सम्मान की उपाधि** रखता है। वह **दाऊद का पुत्र** है, जिसे परमेश्वर के अनन्त राज्य के सिंहासन का अधिकार है।

अंत में वह **सेवक** भी है, भले ही मरकुस उसे सीधे इस नाम से नहीं पुकारता। पर **वह सेवा करने आया** और अपना प्राण बहुतों के लिए, उन सबके लिए जो उस पर भरोसा करते हैं, छुड़ौती के रूप में देने आया।

यीशु का मिशन

जब मरकुस ने लिखा, तब सब कुछ बहुत पहले इतिहास बन चुका था। अतीत। जो बाद में उसके लिए बिलकुल स्पष्ट था, वह उन चेलों, लोगों और उसके शत्रुओं के लिए स्पष्ट नहीं था जो वास्तविक घटनाओं के बीच थे। यीशु का मिशन अधिकतर उनसे छिपा रहा। क्रूस तक। तब कोई यहूदी नहीं, बल्कि एक रोमी सूबेदार था जिसने गहराई से प्रभावित होकर कहा कि वह कौन है: **सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था!** मानो मरकुस ने लोगों की दृष्टि से यीशु की पहचान के तनाव को अंत तक बनाए रखा हो।

यीशु का मिशन था **परमेश्वर के शासन की घोषणा करना** और उसके बारे में शुभ संदेश का प्रचार करना। इस संदेश का उत्तर कैसे दिया जाए? विश्वास और सोच बदलने के द्वारा, अर्थात् पश्चाताप के द्वारा।

उसके द्वारा **परमेश्वर के इस शासन के चिन्ह** होते हैं: उसने अधिकार के साथ शिक्षा दी, उसने दुष्टात्माओं को निकाला, उसने बीमारों को चंगा किया, वह क्षमा लाया, उसने कोढ़ियों को चंगा किया, उसने मुर्दों को जिलाया। यह सब राज्य के सुसमाचार का भाग है। शैतान और उसके राज्य पर आक्रमण होता है। और वह हार जाता है। एक आत्मिक युद्ध, हथियारों के बल के बिना। पर इससे कम नाटकीय नहीं। हाँ, परमेश्वर का राज्य धीरे-धीरे बढ़ता है। वह जैसी अपेक्षा थी, वैसे एक ही झटके में नहीं आ जाता। यहूदी एक बड़े उलटफेर की अपेक्षा कर रहे थे, अर्थात् रोमियों से छुटकारे की। पर यीशु यह स्पष्ट करने से शुरू करता है कि पहले मनुष्यों के मन बदलने चाहिए।

मरकुस के लिए परमेश्वर का शासन यीशु के द्वारा और उसके अनुयायियों में आरंभ हो चुका है। पर यह शासन – आज के दृष्टिकोण से भी – भविष्य में ही पूरी तरह आएगा और पृथ्वी को भर देगा, जब मनुष्य का पुत्र स्वर्ग से लौटेगा।

परमेश्वर का सच्चा शासन केवल क्रूस के द्वारा आता है। मार्ग दुःख से होकर महिमा तक जाता है। क्रूस परमेश्वर की विजय है। हार नहीं। परमेश्वर के मापदंड संसार के मापदंडों से, उस समय के और आज के मापदंडों से, भिन्न हैं। उसके राज्य और उसके शासन के सिद्धान्त, नियम और पहचान-चिन्ह हैं: प्रेम, सेवा, पड़ोसी के लिए समर्पण, नम्रता और शान्ति। हिंसा और दमन नहीं। अनन्त राज्य के भविष्य के जीवन को अभी से पाना और जीना, यही मरकुस का शुभ संदेश है।

पुराने नियम की गूँजें

मरकुस के लिए – और इस प्रकार पतरस के लिए – इब्रानी बाइबल, अर्थात् पुराना नियम, बड़ी भूमिका निभाता है। पर वह मत्ती और लूका की तरह उससे उद्धरण नहीं देता। उसमें संकेत हैं और **पुराने नियम की बहुत-सी गूँजें।** भले ही वे हमेशा सतह पर न दिखें। बहुत बड़ी संख्या में इशारे और छोटे-छोटे संकेत हैं।

नीचे दिए गए प्रश्नों के द्वारा मरकुस के वृत्तान्त में से लाल धागे दिखाई देते हैं: **मरकुस इस्राएल के इतिहास को नए सिरे से कैसे लिखता है?** इसका अर्थ है कि मसीहा यीशु के द्वारा इस्राएल को एक नया अवसर, एक नई शुरुआत, हाँ, एक नया निर्गमन मिलना है। ताकि वह आत्मिक रूप से वहाँ पहुँचे जहाँ परमेश्वर अपनी प्रजा को चाहता है: उसके राज्य में। **इस्राएल का पुराना इतिहास यीशु के जीवन में कैसे फिर से मिलता है, जो सच्चा इस्राएल है?** सुनने में कठिन लगता है, पर यीशु अपने आप को इस्राएल से इस तरह जोड़ लेता है कि वह इस प्रजा के मार्ग पर एक बार फिर चलता है और इसके द्वारा इस्राएल को उसकी वास्तविक बुलाहट के लिए स्वतंत्र करना चाहता है। **मरकुस संसार में कलीसिया की भूमिका का वर्णन करने के लिए पुराने नियम के पवित्रशास्त्र का उपयोग कैसे करता है?** मरकुस स्वयं उस कलीसिया का भाग है जो यीशु के द्वारा अस्तित्व में आई। वह भी प्राचीन पवित्रशास्त्र से सीखती है। आरंभ में कलीसिया के पास केवल एक ही बाइबल थी, और वह पुराना नियम थी।

अपने रूपांतर में मैं मरकुस को पूरा करने के लिए दूसरे सुसमाचारों से उद्धरण नहीं देता। हम उसका संदेश समझना चाहते हैं। **सुसमाचार-सामंजस्य** (Evangelienharmonien) होते हैं, जिनमें सब सुसमाचारों के पाठ साथ-साथ रखे जाते हैं, ताकि घटनाओं का जितना हो सके उतना पूरा चित्र मिल सके। यह पढ़ने का एक और तरीका है, बहुत रोचक भी, पर यहाँ उद्देश्य वह नहीं है।

यूहन्ना मरकुस की मुख्य चिन्ताएँ

इस परिचय के अंत में उन **मुख्य बातों का एक छोटा-सा सार** जो मरकुस के मन में हैं:

यीशु की सच्ची पहचान। यीशु के पार्थिव जीवन के समय यह लगभग सब मनुष्यों से छिपी रहती है। यह उसके स्वर्गारोहण के बाद ही बदलती है, जब प्रेरितों और चेलों के द्वारा राज्य के सुसमाचार का और स्वर्ग पर उठाए गए और सिंहासन पर बैठाए गए मसीह का प्रचार होता है। इस पूर्ण दृष्टिकोण से हम यीशु के जीवन को देख सकते हैं, मानो मन की प्रकाशित आँखों से। हम भेद जानते हैं!

यीशु का पैशन, उसके दुःखभोग का वृत्तान्त, जो दिखाता है कि यीशु वास्तव में कौन है। और इसके साथ सीधे जुड़ा हुआ सताव, दुःख और शहादत, जो सच्ची **शिष्यता** के पहचान-चिन्ह हैं।

परमेश्वर के राज्य का स्वरूप और उसका आना, और मनुष्य के पुत्र के लौटने का प्रश्न।

गलील में, इस्राएल के उत्तरी भाग में, विशेष रुचि, पर साथ ही जातियों के पड़ोसी क्षेत्रों में भी, जिनके पास यीशु अपने आप को भेजा हुआ जानता था।

सुसमाचार और उससे वास्तव में क्या अभिप्राय है।

अलग-अलग **लोगों के समूहों** का उसका वर्णन: यहूदी अगुवों का, यीशु के सच्चे परिवार का और विशेष रूप से उसके चेलों का, बारहों का।

जो कोई मरकुस का संदेश सुनता है या यह सुसमाचार पढ़ता है, वह व्यक्तिगत रूप से यीशु के सामने खड़ा होता है! **वह हर एक से पूछता है: मैं आपके लिए कौन हूँ? क्या आप मुझ पर भरोसा करते हैं? क्या आप मेरे पीछे चलते हैं?**

अभी और आज उद्धार का दिन है, कल नहीं, कभी बाद में नहीं। मरकुस यीशु को इस तरह प्रस्तुत करता है, ताकि हम उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें और उसके वचनों को मानें और उन पर चलें। हाँ, ताकि हम उसके चेले बनें।

सच्चा सम्राट कौन है?

पाठ में जाने से पहले एक छोटी-सी अतिरिक्त बात, जो यीशु के बारे में पहले लिखी गई सब बातों को लेकर उन्हें लेखक मरकुस के समय की राजनीतिक गर्मी में रखती है। यीशु परमेश्वर का पुत्र है, परमेश्वर पिता का प्रिय। कोई भी सम्राट सच्चाई से यह दावा नहीं कर सकता। फिर भी उन्होंने ऐसा किया। पहले रोमी सम्राट औगुस्तुस (Augustus) को "Divi Filius" कहा जाता था, ईश्वरीय का पुत्र। रोमी साम्राज्य के निवासियों के लिए सम्राट एक मसीहा-जैसी आकृति था, जो शान्ति लाया, "Pax Romana"। पर अभिषिक्त, मसीह, केवल यीशु है। प्रतिज्ञा किया हुआ शान्ति का राजकुमार। वेस्पासियन (Vespasian) के नाम दो चमत्कार जोड़े गए: एक अंधे का चंगा होना और एक सूखे हाथ का चंगा होना। इससे स्वर्ग की सहमति का निष्कर्ष निकाला गया। पर यीशु ही है जो अनगिनत चमत्कार करता है और जिसके ऊपर स्वर्ग खुलता है। रोम के मसीही, जो इस सुसमाचार के संभावित पाठक थे, यह जानें कि रोमी साम्राज्य के द्वारा, पशु-समान सम्राट नीरो के द्वारा उनके दुःख की स्थिति में, मसीह, उनका प्रभु और उद्धारकर्ता, बड़ा था और उनके दुःखों में उनसे आगे जा चुका था। डूबा नहीं, बल्कि पुनरुत्थान में अंतिम विजय तक ऊपर चढ़ गया। सताव, दुःख का दबाव और भय मसीहियों को उनकी सीमाओं तक ले आते हैं। इससे असफलता, विश्वासघात और इनकार भी होते हैं। पर मसीह में क्षमा और पुनर्स्थापना है, ऐसा जीवन जो मृत्यु को जीतता है, और उन शक्तियों पर परमेश्वर की विजय का संदेश जो परमेश्वर का विरोध करती हैं। इन सब विषयों को मरकुस बिना उद्देश्य के नहीं छूता। यह एक ऐसा संदेश है जो केवल रोम के मसीहियों के लिए नहीं था, बल्कि जो आज तक जीवित है, पहले से कहीं अधिक।

अध्याय 1

इस तरह शुरू होता है **परमेश्वर की विजय का शुभ संदेश**: यीशु मसीह का सुसमाचार। परमेश्वर के अभिषिक्त का, मसीहा का! परमेश्वर के पुत्र का सुसमाचार। भविष्यद्वक्ता मलाकी और यशायाह ने बहुत पहले ही उस अग्रदूत की घोषणा कर दी थी, जिसे यहोवा, प्रभु, के आगे-आगे चलना था। जो उसके आगमन की घोषणा करे और उसकी तैयारी करे: देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरा मार्ग तैयार करेगा। प्रभु का, यहोवा का मार्ग तैयार करो, उसकी राह सीधी करो, ताकि उसका योग्य स्वागत हो! परमेश्वर न्याय और अनुग्रह में आता है, ताकि सब कुछ फिर से ठीक करे, जैसा मलाकी 3 और यशायाह 40 घोषणा करते हैं। इस उद्धरण में मूसा की दूसरी पुस्तक, निर्गमन 23 पद 20 के शब्द भी गूँजते हैं: देख, मैं एक दूत तेरे आगे भेजता हूँ, कि वह तुझे प्रतिज्ञा किए हुए स्थान तक पहुँचाए। यह प्रतिज्ञा के देश में एक नए प्रवेश के विषय में अनुग्रह की आवाज़ है। स्वयं परमेश्वर के द्वारा एक नया निर्गमन और देश पर एक नया अधिकार। जैसे उस समय, वैसे ही अब परमेश्वर यीशु के व्यक्तित्व और सामर्थ्य में आता है। **परमेश्वर इस्राएल को बचाने के लिए कूच करता है।** 400 वर्षों के बाद, जिनमें भविष्यद्वक्ता चुप रहे थे, हाँ, परमेश्वर ने बोलना बंद कर दिया था, अब भविष्यद्वक्ता यूहन्ना के द्वारा परमेश्वर की जगाने वाली पुकार आई। एक ऐसी प्रजा के पास जो निराश है। दबी हुई और अनिश्चित कि भविष्यद्वाणियाँ पूरी होंगी या नहीं, और कब। पर सब कुछ अपेक्षा से अलग हुआ। **मसीहा ने सिंहासन नहीं खोजा, बल्कि पहले शुद्ध मन और जीवन का जड़ से बदलना खोजा। वह मनुष्यों के मनों में राज्य करना चाहता था।**

अग्रदूत: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, यह अग्रदूत, यरूशलेम में नहीं, बल्कि यहूदिया के जंगल में प्रकट हुआ। उसने प्रचार किया कि यहूदी बपतिस्मा लें और अपना जीवन जड़ से बदलें और परमेश्वर के अधीन करें। ताकि उन्हें अपने पापों की क्षमा मिले। यहूदिया से और राजधानी यरूशलेम से लोग निकलकर उसके पास आए। यद्यपि साधारणतः केवल नए धर्मान्तरित लोगों का, अर्थात् उन अन्यजातियों का जो यहूदी धर्म में आ जाते थे, बपतिस्मा होता था, फिर भी उन्होंने यूहन्ना से यरदन नदी में डुबकी लगवाई और प्रतीक के रूप में अपने पापों को धुलवाया। इस समय वे अपने पापों को मान लेते थे, उन्हें खुलकर कहते थे और उन पर पछताते थे। बपतिस्मे के द्वारा वे पाप के संसार को छोड़ देते थे, जैसे उस समय इस्राएल लाल समुद्र से होकर मिस्र से भाग निकला था। उस समय यरदन नदी से होकर ही इस्राएल कनान देश में प्रवेश कर चुका था, और अब भी इसका अर्थ इस्राएल के लिए एक नई शुरुआत था। कम से कम उसके एक भाग के लिए। यूहन्ना बिना किसी सुख-सुविधा के रहता था। जंगल में अकेला। वह ऊँट के बालों का एक साधारण चोगा पहनता था, जिसे चमड़े का पटुका बाँधे रखता था। वह टिड्डियाँ और जंगली मधु खाकर जीता था। भविष्यद्वक्ता

एलिय्याह के समान। मसीह के, मसीहा के अग्रदूत के रूप में उसने वह बात पुकारकर कही जो सबको जाननी चाहिए थी: मेरे बाद, जब मेरी सेवा समाप्त हो जाएगी, वह आएगा जो मुझसे शक्तिशाली है। वह इतना महान और महिमामय है कि मैं इस योग्य भी नहीं कि झुककर उसकी जूतियों का बन्ध खोलूँ। मैंने तुम्हें पानी में डुबकी दी है। पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। जैसा भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की है। क्योंकि तुम्हें केवल शुद्धि और क्षमा की ही ज़रूरत नहीं, तुम्हें परमेश्वर की सेवा करने के लिए सामर्थ्य की भी ज़रूरत है।

यूहन्ना यीशु को बपतिस्मा देता है

और फिर यह हुआ। अचानक और अनपेक्षित, यद्यपि यूहन्ना उसकी घोषणा कर ही रहा था। यीशु, परमेश्वर का पुत्र, यूहन्ना की ही आयु का एक पुरुष, गलील के नासरत से उसका रिश्तेदार, अचानक यूहन्ना के पास खड़ा था। उन लोगों के बीच जो निकलकर उसके पास यरदन पर आए थे। और उसने, यद्यपि वह मसीहा है, दूसरों की तरह पापी नहीं, यूहन्ना से बपतिस्मा लिया। इस प्रकार मसीहा उन लोगों के पक्ष में आ खड़ा हुआ जो नए सिरे से शुरू करना चाहते थे, और वह उनके आगे-आगे चलने वाला बन गया। जैसे कभी यहोशू, जो इस्राएल को कनान देश में ले गया। जब यूहन्ना और यीशु यरदन नदी से बाहर निकले, तो आकाश अद्भुत रीति से फट गया और पवित्र आत्मा उस पर उतरा, दिखाई देने वाले रूप में, जैसे कोई कबूतर ऊपर से किसी मनुष्य पर उतर आता है। और ऊपर से एक आवाज़ सुनाई दी, जिसने यीशु से कहा: **“केवल तू ही मेरा अति प्रिय पुत्र है, मेरा सब कुछ, तू ही मेरा पूरा आनन्द है**!” 30 वर्ष से वह परमेश्वर की प्रसन्नता के अनुसार जी रहा था, पर अब उसकी सार्वजनिक सेवा का समय आ गया था। यह केवल साढ़े तीन वर्ष की होने वाली थी। हाँ, आकाश यशायाह की उस प्रार्थना के उत्तर में फट गया, जो अध्याय 64 पद 1 में है, जिसे उसने कठोर मनों और इस्राएल पर पराई जातियों के अधिकार के कारण निराश होकर पुकारा था। परमेश्वर आत्मा में होकर मसीहा पर आया, ताकि दुर्दशा को पलट दे, बातों को उलट दे और फिर से राज्य करे। इसकी शुरुआत इस्राएलियों के मनों में होनी थी।

यीशु, सेवा में उसका जीवन

यीशु में परमेश्वर की विजय के शुभ संदेश से पहले संघर्ष आता है। यह उसके बपतिस्मे के तुरन्त बाद शुरू होता है। क्योंकि जो आत्मा उस पर उतरा था, वह उसे तुरन्त यहूदिया के जंगल में ले जाता है। वहाँ वह चालीस दिन रहा। जैसे उस समय इस्राएल 40 वर्ष जंगल में रहा था। शैतान ने, जो इब्लीस और परमेश्वर का शत्रु है, इस समय में उसे बहकाने की कोशिश की। ताकि वह समझौतों और आज्ञा न मानने के द्वारा मनुष्यों के लिए यह संघर्ष छोड़ दे। इन दिनों में वह अकेला था, जैसे उससे पहले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला। वह जंगली पशुओं के बीच था। पर परमेश्वर के स्वर्गदूत उसकी रक्षा करने और उसे बल देने के लिए उसकी सेवा करते थे। इस तरह उसके स्वर्गीय पिता ने उसे जताया कि वह वहाँ है। **मनुष्यों और पूरी पृथ्वी के उद्धार के युद्ध का यह पहला, महत्वपूर्ण भाग परमेश्वर के पुत्र ने अपने लिए और इस तरह हमारे लिए**

जीत लिया। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मृत्यु के लिए पकड़वा दिया गया और उसकी आवाज़ चुप हो गई, तो यीशु गलील लौट आया। तब से वह परमेश्वर के राज्य के शुभ संदेश का प्रचार करने लगा: समय अब आ गया है, हाँ, जो पहले से कहा गया था वह पूरा हो रहा है। परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है और सामर्थ्य के साथ संसार में टूट पड़ रहा है। अब समय है सोच बदलने का, पश्चाताप करने का, पाप छोड़ने का और परमेश्वर की विजय के शुभ संदेश पर विश्वास करने का। केवल इसी तरह मनुष्य राजा के शासन के अधीन और परमेश्वर की आशीष के अधीन आता है। यह सुसमाचार कोई शिक्षा या सिद्धान्त नहीं है। यह एक व्यक्ति है। परमेश्वर का पुत्र, जो हमारे पास आया है। वह पाप, बीमारी, भय, दुष्टात्मा के वश, मृत्यु और शैतान के विरुद्ध संघर्ष उठाता है। **वह एक नया, अंतिम निर्गमन शुरू करता है, ताकि इस्राएल को और सब मनुष्यों को पाप की बन्धुआई और उसके सब परिणामों से बाहर निकाल लाए।**

पहले चेले – यीशु मछुओं को अपने पीछे चलने के लिए बुलाता है

जब वह गलील की झील के किनारे-किनारे जा रहा था, तो वह दो मछुओं को देखता है, शमौन और उसके भाई अन्द्रियास को, जो झील में अपने जाल डाल रहे थे। और यीशु ने उनसे कहा: **आओ, मेरे पीछे चले आओ**। मैं तुम्हें मनुष्यों के मछुए बनाऊँगा। और तुरन्त, बिना हिचकिचाए, वे अपने जाल छोड़कर उसके पीछे हो लिए। और थोड़ा ही आगे फिर दो मछुए थे, जो अपनी नावों के पास अपने जाल सुधार रहे थे: जब्दी का पुत्र याकूब और उसका भाई यूहन्ना। और उन्हें भी उसने उन दोनों की तरह बुलाया। वे भी तुरन्त उसके पीछे हो लिए और अपने पिता को मज़दूरों के साथ छोड़ दिया। **वह कौन था जो बस यह कह सकता था: मेरे पीछे चला आ?** आने वाले वर्षों में, और जल्द ही, वे यह जानने वाले थे। उन्हें अंदाज़ा भी नहीं था कि वे ही, ये साधारण मछुए, उस समय के संसार को उलट-पुलट करने वाले थे। जो काम यीशु ने उनके साथ मिलकर शुरू किया, उसे वे आगे बढ़ाने वाले थे।

कफरनहूम के आराधनालय में

और यीशु अपने चेलों के साथ कफरनहूम में आता है। और सब्त के दिन वह सीधे आराधनालय में गया। शिक्षा के स्थान में। वह, साधारण निर्माण-कारीगर, वहाँ शिक्षा देने लगा। और सब उसके शब्दों से चकित थे, क्योंकि वह ऐसे व्यक्ति की तरह शिक्षा देता था जिसके पास **अधिकार** था। जीवंत, मन को छूने वाले, हाँ, जीवन के वचन। शास्त्रियों से जैसा सुनते आए थे, उससे बिलकुल भिन्न। वे केवल मूसा और अपने विद्वानों के उद्धरण दे सकते थे, पर वह ऐसे बोलता था मानो वह साक्षात् बुद्धि हो, एक दूसरे मूसा के समान।

इस आराधनालय में एक मनुष्य था जिसमें एक अशुद्ध, दुष्ट आत्मा थी। यह आत्मा इस मनुष्य को अपने वश में रखती थी और उससे वह करवाती थी जो वह और कभी न करता। ये आत्माएँ अशुद्ध थीं और जिन पर वे अधिकार कर लेती थीं, उन्हें ऐसे काम करवाकर अशुद्ध कर देती थीं जो उनकी मनुष्यता को पूरी तरह बिगाड़ देते थे। यह मनुष्य, हाँ, वह दुष्ट आत्मा, उसमें की वह दुष्टात्मा, यीशु से बोली: हे यीशु नासरी, हमें तुझसे क्या काम? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानती हूँ और ठीक-ठीक जानती हूँ कि तू कौन

है, **परमेश्वर का पवित्र जन**! और यीशु ने ज़ोर देकर उसे आज्ञा दी: चुप रह और उसमें से निकल जा! इस मनुष्य को छोड़ने की इच्छा न रखते हुए उसने उस मनुष्य को इधर-उधर झकझोरा और ऊँचे शब्द से अपनी हार चिल्लाई। और उसमें से निकल गई। सब घबरा गए, क्योंकि ऐसा उनमें से किसी ने कभी नहीं देखा था। और सब आपस में सोचने और कहने लगे: यह क्या है? यह कैसी नई शिक्षा है? क्योंकि वह अटल अधिकार से उन दुष्ट आत्माओं को भी आज्ञा देता है जिनके सामने हम बेबस हैं, और वे उसकी मानती हैं, हाँ, वे उसके सामने से भाग जाती हैं? **वह बोलता है और वैसा ही हो जाता है जैसा वह कहता है।** और यह घटना जंगल की आग की तरह गलील में फैल गई।

शमौन पतरस के घर में

और तुरन्त उसके बाद वे आराधनालय से निकलकर शमौन और अन्द्रियास के घर आए। याकूब और यूहन्ना भी साथ थे। शमौन की सास बुखार में बिस्तर पर पड़ी थी। उन्होंने यीशु को यह बिना किसी विशेष आशा के बताया। कम से कम उसे पता तो होना चाहिए। तब यीशु उसके पास गया, उसका हाथ पकड़ा और बुखार तुरन्त उसे छोड़ गया। वह उसी क्षण बुखार से मुक्त हो गई, और उसने तुरन्त उनकी सेवा की और उनके लिए भोजन बनाया।

जब साँझ हुई और सूरज डूब गया, तो लोग सब बीमारों और दुःखियों और दुष्ट आत्माओं के वश में पड़े सब लोगों को उसके पास लाए। वे अभी शमौन के घर में ही थे और लोग, हाँ, लगभग पूरा कफरनहूम गाँव, द्वार पर खड़ा था। और जो तरह-तरह की बीमारियों से पीड़ित थे, उनमें से जितनों को वह चंगा कर सका, उसने चंगा किया। और उसने बहुत-सी दुष्टात्माओं को निकाला। ये अदृश्य, अशुद्ध और दुष्ट आत्माएँ हैं। और यीशु ने उन्हें उसके विषय में बोलने से मना किया, क्योंकि वे उसे पहचानती थीं। वे उसे तब से जानती थीं जब वह मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आया भी नहीं था। वे जानती थीं कि वह **परमेश्वर का पवित्र जन** है, **जिसने मनुष्यों के लिए संघर्ष शुरू कर दिया था, ताकि उन्हें उनसे छुड़ाए। और बीमारियों से और उनके पापों से।**

अगली सुबह, बहुत तड़के, जब सब अभी सो रहे थे और अभी अँधेरा था, वह उठकर बाहर चला गया। वह एक सुनसान और वीरान जगह में गया। अकेले प्रार्थना करने के लिए। वह अपने पिता के साथ सहभागिता खोज रहा था और परमेश्वर के सिद्ध सेवक के रूप में सामर्थ्य, बुद्धि और मार्गदर्शन के लिए विनती कर रहा था। जब पतरस और दूसरों ने देखा कि वह घर में नहीं है, तो वे उसे ढूँढने निकले। जब उन्होंने उसे पा लिया, तो उससे कहा: सब आपको ढूँढ रहे हैं। पर उसने कहा: आओ, हम दूसरी बस्तियों में भी चलें, ताकि वहाँ भी प्रचार करूँ, क्योंकि मैं इसी के लिए आया हूँ। मैं एक ही जगह नहीं रुक सकता। और भी बहुत लोगों को शुभ संदेश सुनना है। और जिन-जिन बस्तियों में वे पहुँचे, वहाँ वह आराधनालयों में जाकर सुसमाचार का, शुभ संदेश का प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।

सड़क पर कोढ़ी

रास्ते में एक कोढ़ी उसके पास आता है। नगर के बाहर सड़क पर, क्योंकि उसे नगर में जाने की कभी अनुमति नहीं थी। वह उसके सामने गिर पड़ता है और उससे विनती करता है: यदि आप चाहें, तो मुझे मेरे कोढ़ से शुद्ध कर सकते हैं! यीशु अपने भीतर गहराई तक इस निराश पुकार से, पर उसके भरोसे से भी, द्रवित हुआ। उसने गहरी सहानुभूति और करुणा के साथ अपना हाथ बढ़ाया। **उसने उसे छुआ**। बिना किसी डर के कि वह स्वयं इस अत्यन्त संक्रामक चर्म-रोग से संक्रमित हो जाएगा। यीशु ने कहा: मैं चाहता हूँ, शुद्ध हो जा! और तुरन्त कोढ़ चला गया, वह पूरी तरह शुद्ध हो गया। वह, जिसे जीते-जी मरने का दण्ड मिला था, उसे जीवन वापस मिल गया था। और यीशु ने उसे गंभीरता से आज्ञा दी कि अपना मुँह बंद रखे, और उसे याजक के पास भेज दिया। वह मूसा की उस विधि के अनुसार, जो लैव्यव्यवस्था अध्याय 14 में है, याजक के पास जाए, शुद्धि की भेंट चढ़ाए और याजक से अपने को शुद्ध घोषित करवाए। पर वह जाकर हर जगह इसकी चर्चा करने लगा। हाँ, वह चुप न रह सका और जहाँ भी हो सका, अपनी चंगाई का उत्सव मनाता रहा।

इसका परिणाम यह हुआ कि यीशु अब खुले तौर पर नगर में जा ही नहीं सकता था। इसलिए यीशु बाहर वीरान जगहों में रहता था। पर वहाँ भी लोग चारों ओर से उसके पास उमड़ पड़ते थे।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ ऐसा सीखा है जिसे आप अपने जीवन में करना चाहते हैं?

यीशु में आपको किस बात से उत्साह मिलता है?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए! उसके प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं, क्या कोई बात आपको स्पष्ट नहीं है – उसे लिख लीजिए!

अध्याय 2

एक लकवे के रोगी के लिए क्षमा और चंगाई

कुछ दिनों के बाद वह फिर कफरनहूम गया। एक घर में। यह बात बस्ती में फैल गई। और फिर सब आ गए। वे द्वार पर और हर जगह खड़े थे, यहाँ तक कि भीतर जाने का कोई रास्ता न रहा। और यीशु उन्हें परमेश्वर का वचन, परमेश्वर के राज्य का शुभ संदेश सुना रहा था। तब **चार पुरुष आए, जो एक लकवे के रोगी को उसकी चटाई पर उठाए हुए थे,** ताकि उसे यीशु के पास ले आएँ। पर बड़ी भीड़ के कारण वे यीशु तक नहीं पहुँच सके। बिना देर किए वे उसे लेकर घर की छत पर चढ़ गए, और भूसे और मिट्टी की छत को खोल डाला। यह एक साधारण छत थी, जिसे आसानी से ठीक किया जा सकता था। और उन्होंने लकवे के रोगी को उस छेद में से नीचे घर में उतार दिया, जहाँ यीशु था। सीधे उसके पाँवों के सामने। एक नाटकीय काम। बिना शब्दों के चंगाई की एक विनती। जब उसने देखा कि ये पुरुष क्या कर रहे हैं, और उनका विश्वास देखा कि वह इस मनुष्य को चंगा कर सकता है, तो उसने लकवे के रोगी से कहा: **हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए!** शायद, जितनों ने यह देखा उन्होंने सोचा, उसका मतलब छत के टूटने से था। पर ये शब्द कहीं अधिक गहरे थे और इनका अर्थ कहीं अधिक था। यद्यपि वह क्षमा के लिए यीशु के पास नहीं आया था, यीशु पहले उसे वह सबसे ज़रूरी चीज़ देता है जिसकी किसी मनुष्य को आवश्यकता है। मन की चंगाई और शुद्ध विवेक। परमेश्वर की क्षमा सबसे ज़रूरी है। और मनुष्य से मनुष्य की क्षमा शान्ति का सबसे शक्तिशाली बीज है। वहाँ कुछ शास्त्री बैठे थे, जो इन शब्दों से हक्के-बक्के रह गए। यह क्या कह रहा है? यह परमेश्वर की निन्दा करता है। पाप कौन क्षमा कर सकता है – केवल परमेश्वर ही। इसे याजक के पास जाना होगा और केवल वहीं एक बलिदान के साथ क्षमा मिल सकती है। यह वे अपने मन में सोच रहे थे। यीशु ने अपनी आत्मा में तुरन्त उनकी प्रतिक्रिया जान ली। तुम अपने मनों में क्या सोच रहे हो? तुम्हारे विचार में क्या सहज है, उससे यह कहना: तेरे पाप क्षमा हुए, या यह: उठ, अपनी खाट उठा और चल-फिर? पर इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर भी पाप क्षमा करने का वैसा ही अधिकार है जैसा स्वर्ग में परमेश्वर को, वह लकवे के रोगी से कहता है: उठ, अपनी खाट उठा और अपने घर चला जा। तब लकवे का रोगी तुरन्त उठा और अपनी खाट उठा ली। उन सबके सामने जो घर के भीतर और घर के सामने इकट्ठे थे, वह स्वस्थ और चंगा होकर उनके पास से निकल गया। सब उत्साह से भर उठे और परमेश्वर की स्तुति करने लगे। क्योंकि केवल वही यह चमत्कार कर सकता था। और परमेश्वर सचमुच उस घर में खड़ा था, बस वे यह नहीं जानते थे। ऐसा उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था।

लेवी, चुंगी लेने वाला

फिर यीशु और उसके चेले फिर से पास की झील के किनारे गए। फिर से सारी भीड़ उसके पास आई। वहाँ उसने उन्हें परमेश्वर की बातें ऐसे शब्दों में सिखाई जो उन्होंने कभी नहीं सुने थे। वहाँ जाते हुए उसने हलफई के पुत्र लेवी को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, वहाँ जहाँ हेरोदेस के पुत्रों के एक शासन-क्षेत्र से दूसरे में जाने का रास्ता था। यह एक घृणित पेशा था, जिसे रोमियों का संरक्षण मिला हुआ था। कोई यह चुंगी नहीं देना चाहता था, सबसे बढ़कर अपने ही लोगों में से किसी को नहीं। वह, एक इस्राएली होते हुए, एक गद्दार की तरह दूर रखा जाता था।

यीशु ने उससे कहा, जैसा वह पहले दूसरे चेलों से कह चुका था: **मेरे पीछे चला आ!** इस बात से बिलकुल हैरान कि किसी को उसमें रुचि है और कोई उसे व्यक्तिगत रूप से उसके नाम से पुकार रहा है, वह तुरन्त उठा, अपना सामान सदा के लिए समेट लिया और उसके पीछे हो लिया। और लेवी ने, जो मत्ती है, यीशु को अपने घर बुलाया और एक आनन्दपूर्ण भोज आरंभ किया। उसके बहुत-से साथी भी आ गए। और वे आराम से भोजन पर बैठे थे। यीशु और उसके चेले, चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ। वे लोग जो आराधनालय से बाहर कर दिए गए थे। बस्ती में सब उन्हें जानते थे और उनसे दूर रहते थे। उनमें से बहुत-से उसके पीछे चलने लगे, क्योंकि उन्होंने उसकी दया देखी और अपने आप को उसकी ओर खिंचा हुआ पाया। जब शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखा, तो वे एक बार फिर स्तब्ध रह गए। वह इन लोगों के साथ उत्सव कैसे मना सकता है? उन्होंने यह बात चेलों से कही, क्योंकि उनमें उससे सीधे कहने का साहस नहीं था। पर यीशु ने उन्हें सुन लिया और कहा: वैद्य की ज़रूरत भले-चंगों को नहीं, बल्कि बीमारों को है। वैद्य केवल स्वस्थ लोगों के पास ही क्यों रहे? **मैं उद्धार और चंगाई लाने आया हूँ, इस्राएल के लिए और सारे संसार के लिए।** मैं पापियों को राज्य में बुलाने आया हूँ। धर्मियों को नहीं। या उन्हें नहीं जो अपने आप को धर्मी समझते हैं। पापी पापी ही न बने रहें, मैं क्षमा और मनों की चंगाई लाता हूँ। मैं केवल पश्चाताप का प्रचार नहीं करता, बल्कि मैं उनका मित्र भी बनता हूँ और उनके साथ भोजन की संगति रखता हूँ।

उपवास के बारे में यीशु

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले और फरीसियों के चेले उपवास करते थे। वे कुछ समय तक भोजन नहीं करते थे। उन्होंने यीशु से पूछा कि उसके चेले उपवास क्यों नहीं करते। तब उसने उन्हें उत्तर दिया: क्या बराती, जब तक दूल्हा उनके साथ है, उपवास कर सकते हैं? जब तक दूल्हा उनके साथ है, वे सचमुच उपवास नहीं कर सकते। पर वे दिन आएँगे जब वे उपवास करेंगे। तब, जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, हाँ, जब शास्त्री और फरीसी दूल्हे को मार डालेंगे और सोचेंगे कि वे विवाह-उत्सव को समाप्त कर सकते हैं। बड़ा विवाह-भोज परमेश्वर के उस नए संसार का एक अद्भुत चित्र है जो मसीह के द्वारा रचा जाता है। एक नया संसार, जिसमें हर एक के पास आवश्यकता से अधिक होगा और सबके लिए शान्ति और धार्मिकता होगी। कोई भी पुराने वस्त्र पर नए कपड़े का पैबंद नहीं लगाता। नहीं तो नया पैबंद फट जाता है, नया पुराने,

घिसे हुए कपड़े से, और फटन पहले से भी बुरी हो जाती है। और कोई नया दाखरस, जो अभी उफन रहा है, पुरानी मशकों में नहीं भरता। क्योंकि नया दाखरस पुरानी मशकों को फाड़ देगा। तब दोनों नष्ट हो जाएँगे। नया दाखरस नई मशकों में भरा जाना चाहिए। **यीशु कुछ बिलकुल नया लाया। चंगाई, क्षमा, दया, ठुकराए हुओं के साथ निकटता और नए सिरे से शुरू करने का अवसर।** यह शास्त्रियों और फरीसियों की जड़ हो चुकी सोच और परम्पराओं में नहीं बैठता था। उन्होंने पुराने को बहुत पहले ही अनगिनत आज्ञाओं और निषेधों और अनावश्यक परम्पराओं की एक मानवीय व्यवस्था में फुला दिया था। इस तरह वे मूसा और पवित्रशास्त्र से दूर हो गए थे। पर पापियों को सदा के लिए संगति से बाहर रखने का अन्त यीशु के अनुग्रह में हो गया। यीशु ने अपने समय के यहूदियों को और आज भी सब मनुष्यों को चुनौती दी कि उसकी सुनें और उसके पीछे चलें। उसके पीछे, जो जीवन है और नया जीवन देता है। सबके लिए, विशेषकर निकाले हुओं, ठुकराए हुओं और पापियों के लिए। नया उसमें आरंभ हो चुका था और पुराने को हटना और पीछे छूट जाना था।

सब्त के बारे में यीशु

सब्त के दिन यीशु अनाज के खेतों में से होकर जा रहा था। उसके साथ उसके चेले थे, जो चलते-चलते बालें तोड़ रहे थे। तब फरीसियों ने उससे कहा: देखिए, आपके चेले ऐसा काम कर रहे हैं जो वर्जित है। दूसरे लोग यदि ऐसा करते, तो उन्हें कोई परवाह न होती। पर यीशु और उसके चेलों पर वे कड़ी नज़र रखे हुए थे, ताकि कुछ ऐसा मिल जाए जिससे वे उस पर दोष लगा सकें। तब उसने उनसे कहा: क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया, जब वह और उसके साथी बहुत भूखे थे? जब वह महायाजक अबियातार के समय परमेश्वर के भवन में गया और भेंट की रोटियाँ खाईं, जिन्हें याजकों के सिवाय कोई नहीं खा सकता? और उसने सबको उनमें से दिया। उसने उनसे कहा: सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया है, ताकि वह एक थका देने वाले सप्ताह के बाद आराम कर सके और परमेश्वर का धन्यवाद कर सके। मनुष्य सब्त के लिए नहीं बनाया गया। सब्त मनुष्य के लिए दिया गया है। मनुष्य पहले था। तुम यह जान लो: मनुष्य का पुत्र सब्त का भी प्रभु है। यीशु ने यहाँ अप्रत्यक्ष रूप से संकेत किया कि वह दाऊद का पुत्र है, वह राजा, जिसे अभी पहचाना नहीं गया था और जिसका अभी अपने सिंहासन पर राज्याभिषेक नहीं हुआ था। और सब्त के प्रभु के रूप में वही था जिसने सब्त बनाया था।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ ऐसा सीखा है जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

अध्याय 3

सब्त के दिन आराधनालय में चंगाई

और वह फिर कफरनहूम के आराधनालय में गया, उसी दिन, सब्त के दिन। वहाँ एक मनुष्य था जिसका एक हाथ सूखा हुआ और बेकार था। और वे उसकी घात में थे कि क्या वह सब्त के दिन उसे चंगा करता है। कि वह ऐसा कर सकता है, यह तो उन्हें पहले से स्पष्ट था, पर अभी उनके लिए इसका कोई अर्थ नहीं था। क्योंकि वे बड़ी बेचैनी से उस पर दोष लगाने का कोई कारण ढूँढ रहे थे। और यीशु सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहता है: यहाँ आओ और बीच में खड़े हो जाओ। सब तुम्हें देखें। फिर उसने उनसे कहा जो उसकी घात में थे: सब्त के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना? क्या उचित है, प्राण बचाना या सहायता न करके मार डालना? वे बिना एक शब्द बोले बैठे रहे और चुप रहे। विवेक के इस प्रश्न पर वे कहते भी क्या? क्या हो, यदि उन्हें स्वयं सहायता की ज़रूरत पड़े और वह उन्हें सब्त के दिन मिल सके? तब उसने उनकी ओर देखा, उन सबकी ओर जो वहाँ चुपचाप बैठे थे और अपने होठों से यह नहीं कह पा रहे थे कि **हर समय भला करना ही चाहिए** और बिना किसी प्रश्न के प्राण को सदा और हर समय बचाना ही चाहिए, चाहे सब्त हो या न हो। उसने उन पर, चारों ओर सब पर, क्रोध से दृष्टि डाली। उसने उन्हें सिकुड़े हुए हाथ का शाप देकर दण्ड नहीं दिया। नहीं, वह उनके मनों की इस हठ और कठोरता से बहुत दुःखी था। फिर उसने बीच में खड़े मनुष्य की ओर देखा और उससे कहा: अपना हाथ बढ़ाओ! और उसने उसे बढ़ाया और वह उसी क्षण अच्छा हो गया। उसने भलाई की, और वे उसे रोकना चाहते थे।

तब शास्त्री क्रोध से भरकर बाहर चले गए और हेरोदियों के साथ, जो राजनीतिक अगुवे थे, सलाह करने लगे कि उसे कैसे मार डालें। उनके पास स्वयं अपनी योजना पूरी करने का अधिकार नहीं था, बल्कि उन्हें राजनीतिक सत्ता के साथ मिलना था, पर पहले उसे मनाना था। जो भी हो, उनका निर्णय हो चुका था, प्रश्न केवल यह था कि वे कब वार कर सकते हैं।

गन्नेसरत की झील पर बहुतों की चंगाई

और यीशु अपने चेलों के साथ झील की ओर चला गया। गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, यहूदिया और यरूशलेम से भी। और इदूमिया से और यरदन के पार से भी और सूर और सैदा के आस-पास के क्षेत्र से भी। वे इतने अधिक थे। उन्होंने सुना था कि वह क्या करता है और कि वह एक भी मनुष्य को नहीं लौटाता। इसलिए वे सब आए। यह एक सनसनी थी। इस भीड़ से दब न जाए, इसलिए उसने अपने चेलों से एक नाव तैयार रखने को कहा। क्योंकि जो भी आता, वह सबको चंगा करता था। भीड़ धक्का देती हुई आगे बढ़ती थी। और वे दूसरों के ऊपर से होकर उस पर टूट पड़ते थे, ताकि उसे छू लें। और जब दुष्टात्माग्रस्त लोग आते, तो वे उसके सामने गिर पड़ते, घुटनों पर। और उनमें की अशुद्ध आत्माएँ घबराकर

और बेचैन होकर चिल्लाती थीं: तू परमेश्वर का पुत्र है! जो उन्होंने पहचाना, उससे उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ और वह उन्हें अच्छा नहीं लगा, क्योंकि वे शक्तिहीन थीं। उन्होंने भाँप लिया कि उनकी हार का समय आ गया है। उन्हें आभास था कि वे यह लड़ाई हार जाएँगी। इसलिए उन्होंने इन बातों के द्वारा उस पर नियंत्रण बनाए रखने की कोशिश की।

पर यीशु के विषय में सच्चाई प्रकट करना उनका काम नहीं था। और अभी समय भी पूरा नहीं हुआ था। और यीशु ने उन्हें कड़ी डाँट दी, ताकि वे सबके सामने यह प्रकट न करें कि वह कौन है।

यीशु बारह चेलों को बुलाता है

और वह एक पहाड़ पर चढ़ गया और जिन्हें वह चाहता था, उन सबको अपने पास बुलाया। और वे उसके पास आए। ये उसके अनुयायी थे, न कि केवल ऐसे लोग जो चंगाई के लिए आए थे। उनमें से उसने बारह को चुना। ये उसके साथ रहें। ये सीखें और अनुभव करें जो यीशु अनुभव करता था, ताकि तैयार किए जाएँ। इन्हें वह भेजने वाला था कि वही करें जो वह करता था: प्रचार करना और अधिकार के साथ दुष्ट आत्माओं को, दुष्टात्माओं को निकालना। संघर्ष जारी है। इस बुलाहट और सेवा का विस्तार होना था, क्योंकि मनुष्य के रूप में अकेला यीशु सीमित था। और एक दिन वह उनके बीच दिखाई देने वाले रूप में नहीं रहेगा। और उसने उनमें से बारह को चुना। इस्राएल के बारह गोत्रों के समान। बारह प्रेरितों में यह दिखाई देता है कि परमेश्वर की दृष्टि पूरे इस्राएल पर है और राज्य में इस्राएल की पुनर्स्थापना पहले से देखी जा रही है। बात केवल चंगाई के एक मिशन की नहीं है, बल्कि हर प्रकार से नवीनीकरण की है। ये थे **बारहों**:

- शमौन, जिसका नाम उसने पतरस (पत्थर) रखा
- जब्दी का पुत्र याकूब
- याकूब का भाई यूहन्ना। इन दोनों को उसने बूअनरगिस, अर्थात् गर्जन के पुत्र, कहा।
- अन्द्रियास
- फिलिप्पुस
- बरतुल्मै
- मत्ती
- थोमा
- हलफई का पुत्र याकूब
- तद्दै
- शमौन कनानी

- यहूदा इस्करियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।

मसीहा का परिवार – पहला भाग

यीशु एक घर में आता है। और फिर बहुत-से लोग उसके पास आते हैं। वह और उसके चेले रोटी खाने तक का समय नहीं निकाल पाते। यह बात उसके परिवार ने सुनी, और वे उसे ढूँढने निकल पड़े। अपने भाई को लेकर इस हो-हल्ले से वे तंग आ चुके थे। उन्होंने कहा कि उसका दिमाग़ बिलकुल फिर गया है। लोग उनकी ओर उँगली उठाते थे, उन्हें शर्म आती थी।

आत्मा की निन्दा

यरूशलेम से महत्वपूर्ण शास्त्री नीचे आए थे। उन्होंने सुना और देखा था कि क्या हो रहा है। उन्होंने उसके बारे में जल्दी में और पहले से कहीं कठोर निर्णय सुनाया: उसमें बालज़बूल, दुष्टात्माओं का सरदार, काम करता है। उसी के द्वारा और उसी की शक्ति से वह दुष्टात्माग्रस्त लोगों में से दुष्टात्माओं को निकालता है। तब यीशु ने उन्हें अपने पास बुलाया और दृष्टान्तों में उनसे कहा: शैतान शैतान को कैसे निकाल सकता है? यदि किसी राज्य में फूट पड़ जाए और वह आपस में लड़े, तो वह राज्य टिक नहीं सकेगा। यदि किसी घर में आपस में फूट पड़ जाए, तो वह घर टिक नहीं सकेगा। यदि शैतान, दुष्टात्माओं का सरदार, अपने ही विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है और अपने ही से लड़ता है, तो वह बच नहीं सकता। यह उसका अन्त होगा। कोई भी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल नहीं लूट सकता, जब तक कि वह पहले बलवन्त को हराकर बाँध न ले। तभी वह घर को लूट सकता है। **विजेता मैं हूँ** और मैं माल लूटना शुरू कर चुका हूँ, जैसा तुम देख सकते हो।

मैं तुमसे सच कहता हूँ: मनुष्यों के सब पाप क्षमा किए जाएँगे और सब निन्दा भी। पर जो पवित्र आत्मा के विरुद्ध निन्दा करता है, जिसकी सामर्थ्य से मैं दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, उसे अनन्त काल तक क्षमा नहीं मिलती। वह इस प्रकार अनन्त पाप का दोषी ठहरता है। उनकी निन्दा यह थी कि उन्होंने यीशु पर यह आरोप लगाया कि उसमें एक अशुद्ध आत्मा है, जिसकी शक्ति से वह ये सब काम करता है। जो यह मानता है और इसी पर अड़ा रहता है, उसे बिना पश्चाताप के क्षमा नहीं मिलेगी।

मसीहा का परिवार – भाग 2

इस बीच उसकी माता और उसके भाई आ पहुँचे थे और द्वार के बाहर खड़े थे। लोग उसके चारों ओर बैठे उसकी सुन रहे थे। तब यह संदेश उस तक पहुँचा: आपकी माता और भाई और बहनें बाहर खड़े हैं और आपको ढूँढ रहे हैं। तब उसने उन्हें उत्तर दिया: मेरी माता, मेरे भाई और बहनें कौन हैं? और उसने चारों ओर देखा और उन सब पर दृष्टि डाली जो उसके चारों ओर बैठे थे। फिर उसने कहा: देखो, तुम सब मेरी माता और मेरे भाई हो! **जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वही मेरा भाई और मेरी बहन और मेरी माता है!**

यही परमेश्वर का सच्चा परिवार है, जो आज 2000 वर्षों के बाद सारी पृथ्वी पर फैल चुका है और एक दिन पिता के घर में रहेगा। सदा के लिए परमेश्वर के परिवार के रूप में।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, शायद कुछ ऐसा भी जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं, क्या कोई बात आपको स्पष्ट नहीं है, तो उसे लिख लीजिए!

अध्याय 4

यीशु दृष्टान्तों में परमेश्वर के राज्य को समझाता है

बोने वाले और चार प्रकार की भूमि का दृष्टान्त: "सुनो"

और यीशु ने प्रचार का अपना काम जारी रखा। एक बार फिर गन्नेसरत की झील पर। और अधिक लोग आते गए। ताकि दब न जाए और फिर भी जितने हो सकें उतने लोगों तक पहुँचे, उसने एक नाव ली और किनारे से कुछ मीटर दूर चला गया। एक अखाड़े की तरह वह बहुत-से लोगों तक पहुँचा। पानी की सतह उसके शब्दों को सब सुनने वालों तक पहुँचाती थी। और उसने लोगों को और अपने चेलों को बहुत-सी बातें उपमाओं में, दृष्टान्तों में सिखाई। अपनी शिक्षा में उसने उनसे कहा: **सुनो!** कल्पना करो, किसान बीज लेकर खेत में जाता है और बोता है, बीज को जितना हो सके उतना बराबर बिखेरते हुए। बोते समय कुछ बीज रास्ते पर गिरा। तब पक्षी आए और सब चुग गए। दूसरा बीज पथरीली भूमि पर गिरा, जहाँ थोड़ी मिट्टी थी। वहाँ बीज जल्दी उग आया और बढ़ने लगा। जब सूरज उस पर तपने लगा, तो अंकुर जल्दी सूख गए, क्योंकि उनकी जड़ गहरी नहीं थी।

दूसरा बीज झाड़ियों के बीच गिरा। ये भी जल्दी बढ़ीं, पर झाड़ियों के नीचे बढ़ता हुआ बीज फिर दब गया। यहाँ भी कोई फल नहीं हुआ। फिर बीज अच्छी भूमि पर गिरा। वह उगा और ऊँचा बढ़ा और फल लाया। अलग-अलग मात्रा में: एक बाल में 30, दूसरी में 60 और एक और में तो 100 दाने। **जिसके सुनने के कान हों, वह ध्यान से, मन लगाकर और खुले मन से सुने!** फिर बाद में जब सब लोग घर चले गए थे, बारहों ने और जितने अभी उसके चारों ओर थे, उन सबने उससे पूछा: इन दृष्टान्तों का क्या अर्थ है? आप इनसे क्या कहना चाहते हैं? तब उसने, जो स्वयं ईश्वरीय बोने वाला है, उनसे कहा: तुम्हें, जो मेरे साथ हो और मेरे पीछे चलते हो, परमेश्वर के राज्य के भेद को समझने का वरदान दिया गया है। तुम्हारे लिए यह अब भेद नहीं, बल्कि ज्ञान और समझ है, क्योंकि यह तुम पर प्रकट किया गया है। पर जो बाहर हैं, जो सचमुच खुले मन से नहीं सुनते, उन्हें यह दृष्टान्तों में सुनाया जाता है। जैसा यशायाह 6 पद 10 पहले ही कहता है: ताकि वे देखते हुए देखें, फिर भी न पहचानें, और सुनते हुए सुनें, फिर भी न समझें, ऐसा न हो कि वे फिरें और उन्हें क्षमा मिले। बहुत-से कठोर और कठोर हो चुके मन हैं, जो सुनते और देखते हैं कि मैं क्या कहता और करता हूँ। पर क्या-क्या होना ज़रूरी है कि वे विश्वास करें?

और वह उनसे कहता है: क्या तुम यह दृष्टान्त भी नहीं समझे? तो तुम बाकी सब दृष्टान्त कैसे समझोगे? बोने वाला परमेश्वर का वचन बोता है, उसका प्रचार करके और उसे आगे पहुँचाकर, जैसा मैं करता हूँ, ताकि वह मनों में, हाँ, मन की भूमि पर गिरे। रास्ते के किनारे वाले ऐसे लोग हैं जो वचन सुनते तो हैं, पर जहाँ शैतान, इब्लीस, आकर वचन को उठा ले जाता है और कुछ नहीं बचता। वह हर हाल में रोकना चाहता है कि

परमेश्वर का राजकीय शासन सब मनुष्यों तक पहुँचे। कुछ ऐसे हैं जो परमेश्वर के वचन को, शुभ संदेश को, आनन्द से ग्रहण करते हैं। यह वह बीज है जो थोड़ी-सी मिट्टी वाली पथरीली भूमि पर गिरता है। इनकी जड़ नहीं होती, ये मौसम की तरह बदलने वाले हैं, पल भर के लोग। जब सुसमाचार के कारण क्लेश या सताव से विश्वास की परीक्षा होती है, तो वे बिलकुल चौंक जाते हैं। निराश होकर वे विश्वास को फिर से उठाकर फेंक देते हैं। फिर वे हैं जो झाड़ियों के बीच बोए गए हैं। वचन उनके मन तक पहुँचा है, बढ़ने लगता है। पर फिर जीवन की चिन्ताएँ आती हैं, जिनके कोई जल्दी समाधान नहीं होते, जिनकी अपेक्षा उन्होंने शायद सुसमाचार से की थी। धन और करियर का प्रलोभन भी जीवन के लक्ष्य को वचन से हटा देता है। बहुत-सी चीज़ों की अभिलाषाएँ जीवन में जगह पा लेती हैं। ऐसी बातें सुसमाचार के वचन को दबा देती हैं। यह बस थोड़ी देर का जागना था। और फिर वे हैं जिनमें वचन अच्छी भूमि पर पड़ता है। जहाँ मन फिराने और विश्वासयोग्य रहने की तत्परता है, जहाँ वचन ग्रहण किया जाता है और फल लाता है और जिनके लिए वह सब कुछ से अधिक महत्वपूर्ण है। कठिनाइयों और प्रश्नों के बावजूद। ऐसे लोग फल लाते हैं, कोई तीस गुना, कोई साठ गुना या सौ गुना। ऐसा फल, जिसे परमेश्वर स्वयं उनमें बढ़ाता और पकाता है।

दीपक का दृष्टान्त

यीशु ने उनसे कहा: दीपक इसलिए नहीं होता कि उसे किसी बर्तन के नीचे या खाट के नीचे रखा जाए। उसे वहाँ रखना चाहिए जहाँ वह सब कुछ रोशन कर दे। अँधेरे में छिपी हर बात एक दिन प्रकट की जाएगी, हर गुप्त बात भी उजाले में आएगी।

मेरा संदेश, राज्य का सुसमाचार, छिपा नहीं रहेगा। जब मैं जी उठूँगा और अपने पिता के सिंहासन पर होऊँगा, तब वह सारे संसार में पहुँचाया जाएगा।

जिसके सुनने के कान हों, वह ध्यान से, मन लगाकर और खुले मन से सुने!

जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए नापा और बाँटा जाएगा। जैसे तुम मुझे परखोगे, वैसा ही पाओगे। यदि तुम मुझे ग्रहण करते हो, तो तुम सब कुछ पाते हो। जिसके पास मैं हूँ, उसे मुझसे और भी अधिक, हाँ, सब कुछ मिलेगा। जो केवल उत्सुक है कि मैं कौन हूँ, जो मुझ पर विश्वास नहीं करता और मेरे पीछे नहीं चलता, वह मुझमें हर रुचि खो देगा। और परमेश्वर के राज्य में उसका कोई भाग न होगा।

बीज के बढ़ने का दृष्टान्त

परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य जाकर भूमि पर बीज बोए। ऐसा करने के बाद वह प्रतीक्षा करने, सोने जाने और फिर उठने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकता। और ऐसा बहुत बार। जैसे बीज भी पहले भूमि में सोता है, जब तक कि वह अंकुरित होकर बढ़ न जाए। बीज कैसे बढ़ता है और यह कैसे होता है, वह नहीं जानता। भूमि मानो अपने आप फल लाती है – एक पुनरुत्थान के समान –, पहले घास, फिर बाल और फिर बाल में गेहूँ के दाने बढ़ते हैं। जब दाना पक जाता है, तो वह हँसिया लेकर निकलता है और फ़सल

काटकर ले आता है। हाँ, फ़सल लाई जाती है, जैसा योएल 3 पद 13 पहले ही घोषणा करता है। छोटी शुरुआतें ज़रूरी और मूल्यवान हैं। और उन्हें कभी तुच्छ न समझना चाहिए। बढ़ने में समय लगता है। परमेश्वर का राजकीय शासन एक ही झटके में दिखाई देने वाला और हर जगह मौजूद नहीं होता। हर चीज़ को पकने और बढ़ने के लिए समय चाहिए। पर परमेश्वर की लंबे समय से प्रतीक्षित फ़सल आएगी। **हाँ, वह आएगी। वचन बोओ और धीरज रखो!**

सबसे छोटे राई के दाने का दृष्टान्त

और उसने कहा: हम परमेश्वर के राज्य की तुलना और किससे करें? एक राई के दाने से, जो सबसे छोटे और साधारण बीज के रूप में भूमि में डाला जाता है। पर फिर वह उगता है और बड़ा हो जाता है। सब साग-पात से बड़ा। पौधे में डालियाँ निकलती हैं, इतनी बड़ी कि उनकी छाया में पक्षी भी अपने घोंसले बनाते हैं। इसकी शुरुआत छोटी थी, यीशु और बारहों के साथ, पर अंत में परमेश्वर का राज्य सारी पृथ्वी पर फैल जाएगा। और भी बहुत-से दृष्टान्तों में वह लोगों से बात करता था। पर केवल दृष्टान्तों में। अपने चेलों को वह उन्हें अलग से और विस्तार से समझाता था।

यीशु गन्नेसरत की झील पर आँधी को वश में करता है

उसी दिन, साँझ को, यीशु अपने चेलों से कहता है: आओ, हम झील के उस पार चलें। उन्होंने भीड़ से विदा ली। चेलों ने नाव तैयार की और यीशु को, जैसा वह था, साथ ले लिया। थका और निढाल। और नावें भी उनके साथ हो लीं। तब अचानक कहीं से एक प्रचंड आँधी उठी। ऊँचाइयों से तेज़ हवाएँ नीचे की ओर झपटीं। एक शत्रु शक्ति की तरह। हाँ, यह परमेश्वर के पुत्र पर एक आक्रमण था। लहरें नाव से टकराकर भीतर आ रही थीं, यहाँ तक कि वह पानी से भरने लगी। एक ख़तरनाक स्थिति। यीशु नाव के पिछले भाग में था। वह एक तकिए पर सो गया था, इस भरोसे में कि उसके स्वर्गीय पिता की सुरक्षा हर समय उसके साथ है। चेलों ने उसे जगाया और उलाहना देते हुए कहा: हे गुरु, क्या आपको कोई परवाह नहीं कि हम नाश हो रहे हैं? यीशु नींद से जागा। उसने आँधी को डाँटा और धमकाया: शान्त हो जा, थम जा! और जैसे आँधी आई थी, वैसे ही थम गई। बड़ा सन्नाटा छा गया। और उसने उनसे कहा: तुम क्यों घबराते हो? क्या तुम्हें विश्वास नहीं? मैं तो यहाँ हूँ। और चेले बहुत डर गए, लगभग वैसे ही जैसे वे आँधी से डरे थे। और घबराकर वे आपस में फुसफुसाने लगे: **यह कौन है, जिसकी झील और हवा भी आज्ञा मानती हैं? हमारा वास्ता किससे पड़ा है?**

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, कुछ ऐसा जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं या कोई बात समझ में नहीं आई? उसे लिख लीजिए!

अध्याय 5

उस पार गिरगसा में दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य का छुटकारा

परमेश्वर अपने आप को उन पर प्रकट करता है जिन्होंने उसके विषय में पूछा भी नहीं था (यशायाह अध्याय 65 पद 1 से 5)

वे नाव से झील के उस पार, गिरासेनियों के देश में आते हैं। उन दिनों यह इस्राएल नहीं, बल्कि परदेश था, दिकापुलिस। यह सीरिया प्रान्त में दस नगरों का एक क्षेत्र था। जब वह वहाँ नाव से उतरा, तो तुरन्त एक मनुष्य उससे मिलने आया। इसमें एक अशुद्ध आत्मा थी, जिसके वश में वह था। वह कब्रों की गुफाओं में, मुर्दों के बीच रहता था। नगर में वह नहीं रह सकता था। क्योंकि उसे कोई वश में नहीं कर सकता था, वह सबके लिए ख़तरा था। ज़ंजीर से भी उसे बाँधा नहीं जा सकता था। बहुत बार उसे बेड़ियाँ पहनाई गई थीं और ज़ंजीरों से बाँधा गया था, पर वह इतना बलवान था कि वह उन्हें बार-बार तोड़ देता था। कोई इतना बलवान नहीं था कि उसे वश में कर सके, क्योंकि वह एक जंगली पशु के समान था। रात-दिन वह कब्रों की गुफाओं में और पहाड़ियों पर रहता था। वह अशुद्धता का साक्षात् रूप था। वह लाशों के पीछे पड़ा रहता था। वह जीवित मृत्यु का रूप है। वह ज़ोर से चिल्लाता और अपने आप को पत्थरों से घायल करता था। नंगा, अकेला, टूटा-फूटा। वह सबसे अधिक मनुष्यता खो चुका और सबसे दयनीय व्यक्ति था, जिससे अब यीशु का सामना हुआ।

क्या यह मनुष्य पूरे संसार का चित्र नहीं, जो अपनी अव्यवस्था में छुटकारे और चंगाई के लिए तरसता है?

जब इस मनुष्य ने यीशु को दूर से देखा, तो वह दौड़कर उसके पास आया और उसके सामने भूमि पर गिर पड़ा। वह ज़ोर से चिल्लाया, पर ये शब्द अशुद्ध आत्मा के थे: हे यीशु, परमप्रधान परमेश्वर के पुत्र, मुझे तुझसे क्या काम? तू यहाँ क्यों है? तेरे सामने मेरा कोई बस नहीं। तू बलवन्त है। मैं तुझे शपथ देता हूँ, मुझे पीड़ा न दे, जैसे मैंने इस मनुष्य को पीड़ा दी है! क्योंकि यीशु ने उससे कहा था: हे अशुद्ध दुष्टात्मा, हे सताने वाली आत्मा, इस मनुष्य में से निकल आ! और यीशु ने उससे पूछा: हे अशुद्ध आत्मा, तेरा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया: मेरा नाम सेना है, क्योंकि हम बहुत हैं। रोमियों की एक सेना-टुकड़ी (लीजन) में 6000 सैनिक और 120 घुड़सवार होते थे। उस मनुष्य में केवल एक नहीं, बल्कि बहुत-सी दुष्टात्माएँ थीं। और दुष्टात्माओं ने उससे कई बार और गिड़गिड़ाकर विनती की कि वह उन्हें इस क्षेत्र से बाहर न भेजे। खड़ी ढलान वाले किनारे पर सूअरों का एक बड़ा झुंड चर रहा था। और अशुद्ध आत्माओं ने उससे विनती की कि उन्हें सूअरों में जाने दे, क्योंकि वे हमेशा कोई ठिकाना ढूँढती हैं, मनुष्य, और यदि और कोई उपाय न हो, तो पशु भी। और यीशु ने उन्हें जाने दिया। जब अशुद्ध आत्माएँ उन सूअरों में गईं, जो यहूदियों के लिए अशुद्ध थे, तो उन्होंने

अपना विनाशकारी काम जारी रखा। झुंड पहाड़ से नीचे झील में कूद पड़ा और सब डूब गए। इसलिए नहीं कि यीशु ऐसा चाहता था, बल्कि दुष्टात्माएँ ऐसा चाहती थीं। सूअर लगभग 2000 थे। शायद वे इस तरह लोगों को यीशु के विरुद्ध भड़काना चाहती थीं। और इसमें वे सफल हुई। **पर वह मनुष्य अब शुद्ध और स्वतंत्र था**। सूअर चराने वाले भाग गए, जब उन्होंने घबराकर देखा कि क्या हुआ। उन्होंने नगर और गाँवों में यह सुनाया। और लोग देखने के लिए निकल आए। वे यीशु के पास आते हैं। उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता, क्योंकि वहाँ वह दुष्टात्माग्रस्त मनुष्य कपड़े पहने और पूरी तरह होश में और सामान्य होकर यीशु के पास बैठा है। जिसमें सेना थी, अशुद्ध आत्माओं की बड़ी संख्या थी, वह फिर से मनुष्य है, पशु के समान नहीं। उन पर भय छा जाता है। यह सब उन्हें बिलकुल डरावना लगता है। और जिन्होंने सब कुछ अपनी आँखों से देखा था, दुष्टात्माग्रस्त का छुटकारा और सूअरों का झील में गिरना, उन्होंने नए आने वालों को यह सुनाया। और आनन्द करने या यीशु को आमंत्रित करने के बजाय, वे उससे विनती करते हैं कि उनके क्षेत्र से चला जाए। वे उन लोगों का उदाहरण हैं जो बाहर हैं, जो देखते हैं फिर भी नहीं पहचानते और सुनते हैं फिर भी नहीं समझते। यीशु फिर नाव के पास गया और उस पर चढ़ गया। इस किनारे पर उसका मिशन, अन्यजातियों के क्षेत्र में उसकी चढ़ाई, सफलता से पूरी हो चुकी थी। आने वाले राजकीय शासन का संकेत दे दिया गया था। जैसे गलील में, वैसे ही यहाँ भी। चंगा हुआ मनुष्य हर हाल में यीशु के साथ रहना चाहता था, अपने रिश्तेदारों से बिलकुल अलग। उसके पीछे चलना चाहता था। वह अपने छुड़ाने वाले के साथ रहना चाहता था, सदा के लिए। पर यीशु ने उसे अनुमति नहीं दी। इसके बदले उसने उससे कहा: अपने परिवार के पास जाओ और उन्हें बताओ कि प्रभु ने तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है और तुम पर कितनी दया की है। और वह चला गया और पूरे दिकापुलिस में प्रचार करने लगा कि यीशु ने, हाँ, परमेश्वर ने उसके लिए कितना कुछ किया था। और स्पष्ट रूप से आगे भी करने को तैयार था। हाँ, उसने यीशु की प्रचार-सेवा को, जो झील पार करके लौट गया था, आगे बढ़ाया। और जितनों ने सुना, सब अचम्भा करने लगे। और वह भी उससे कहीं अधिक, जितना वे खोए हुए सूअरों पर नाराज़ हुए थे।

इस पाठ में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने अपने प्रतिदिन के जीवन के लिए कुछ सीखा है?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं या कोई बात समझ में नहीं आई? उसे लिख लीजिए!

याईर की बेटी का जिलाया जाना – भाग 1

यीशु अशुद्धों को छूता है – वे फिर से जी सकते हैं

उस पार पहुँचकर, कफरनहूम के पास, सदा की तरह फिर बहुत-से लोग उसे देखने के लिए झील के किनारे इकट्ठे हो गए। याईर भी, जो आराधनालय के सरदारों में से एक था, वहाँ था। अपने पद और आराधनालय के सरदार की प्रतिष्ठा से जुड़ी सब आपत्तियों और संभावित जोखिमों के बावजूद। उसे एक ख़ास बात आगे बढ़ा रही थी। जब उसने उसे देखा, तो वह उसके पास गया और उसके पाँवों पर गिर पड़ा। उसने उससे बहुत विनती की और कहा: मेरी बेटी, जो मेरे लिए इतनी अनमोल है और जिससे हम इतना प्रेम करते हैं, मरने पर है। कृपया उस पर हाथ रखिए, ताकि वह चंगी होकर जीवित रहे! यीशु ने याईर की निराशा देखी और वह उसके साथ उसके घर की ओर चल पड़ा। लोगों ने यह सुना और एक घनी भीड़ उसके पीछे हो ली।

पुराने रक्तस्राव से पीड़ित स्त्री

इस घनी भीड़ में एक स्त्री थी, जिसे 12 वर्ष से रक्तस्राव था जो रुकता नहीं था। इस कारण वह व्यवस्था के अनुसार अशुद्ध थी। बिना पति के, बिना संगति के, सदा लोगों से अलग। अकेली और एकाकी। उसने बहुत दुःख उठाया था और वैद्यों के पास चंगाई पाने के लिए सब कुछ आज़मा लिया था। उसकी सारी सम्पत्ति इसमें चली गई थी। और अच्छी होने के बदले उसकी दशा और भी बिगड़ गई थी। फिर भी उसने बीमारी को कभी स्वीकार नहीं किया था और भीतर से हार नहीं मानी थी, बल्कि चंगाई खोजती रही थी। अब उसने यीशु के बारे में सुना था, चंगा करने वाले के बारे में, महान वैद्य के बारे में, हाँ, सब वैद्यों के वैद्य के बारे में। उसे पक्का विश्वास था कि यदि वह केवल उसके वस्त्र को छू ले, तो चंगी हो जाएगी। अशुद्ध होने के कारण वह उससे कभी सीधे बात नहीं कर सकती थी। भीड़ में वह पीछे से उसे छूने में सफल हो गई, चुपके से, उसके मुँह की ओर देखे बिना। और ऐसा ही हुआ: वह उसी क्षण चंगी हो गई। उसने यह अनुभव किया। पर यीशु ने भी कुछ अनुभव किया, अर्थात् वह चंगा करने वाली सामर्थ्य जो उसमें से निकली थी। छूने से वह अशुद्ध नहीं हुआ था। बात ठीक उलटी थी। क्योंकि वह **परमेश्वर का पवित्र जन** था। और वह तुरन्त मुड़ा और पूछा: मेरे वस्त्र किसने छुए? क्या याईर के घर के रास्ते में यह अभी उसके लिए महत्वपूर्ण था? याईर की बेटी के लिए समय कम होता जा रहा था। वह यह अभी क्यों जानना चाहता था? हाँ, चंगी हुई व्यक्ति को यह जानना था कि यीशु उसे जानता है, और उसकी पीड़ा को भी। उसके चेले उलझन में पड़ गए: लोग आप पर गिरे पड़ रहे हैं और आप पूछते भी हैं कि मुझे किसने छुआ। पर यीशु ने चारों ओर देखा, ताकि उसे देखे जिसने उसे छुआ था। स्त्री ने भाँप लिया कि यीशु उसी की बात कर रहा है, और वह डर गई। अब वह और छिप नहीं सकती थी और काँपती हुई उसके सामने घुटनों पर गिर पड़ी, उस पवित्र जन के सामने। उसने उसे सब कुछ बता दिया जो उस पर बीता था और यह भी कि अब उसे केवल उसी में अपनी अंतिम आशा दिखाई दी थी। और उसने उसे उत्तर दिया: **बेटी, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें बचा लिया है। शान्ति से जाओ और फिर से जीना शुरू करो**। तुम अपने रोग से चंगी हो गई हो। चाहे जीवन की भीड़ कितनी ही घनी हो, चाहे स्थिति कितनी ही निराशाजनक हो, चाहे आप कितने ही अयोग्य हों या अपने आप को अयोग्य

समझें, विश्वास के साथ अपना हाथ यीशु की ओर बढ़ाइए! जीवन के उस वृक्ष से, जो यीशु है, एक पत्ते की तरह चंगाई ले लीजिए!

याईर की बेटी का जिलाया जाना – भाग 2

वह अभी स्त्री से बात कर ही रहा था कि आराधनालय के सरदार के कुछ परिचित याईर के पास अय्यूब के समान दुःखद समाचार लेकर आते हैं: तेरी बेटी मर गई है। अब गुरु को और क्यों कष्ट देता है? घर चल। यीशु ने यह सुन लिया था और फिर याईर से कहा: **मत डरो! केवल विश्वास करो! मुझ पर भरोसा रखो!** फिर वह अपने चेलों में से केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को, बारहों के भीतरी घेरे को, साथ लेता है। वे उस घर पर पहुँचते हैं। शोर, विलाप का चिल्लाना और रोना, बहुत है। यीशु पूछता है: तुम यह कैसा शोर मचा रहे हो और क्यों रो रहे हो? बच्ची मरी नहीं है। वह सो रही है। तब शोक मनाने वाले उसकी हँसी उड़ाने लगे, जैसे वे आज भी करते हैं, जब लोग बस यीशु पर भरोसा करते हैं। फिर यीशु ने सब लोगों को बाहर भेज दिया। केवल पिता, माता और उसके तीन चेले लड़की के पास जा सके। और यीशु बच्ची का हाथ पकड़ता है और कहता है: तलीता कूमी! इसका अनुवाद है: हे लड़की, मैं तुझसे कहता हूँ, उठने का समय हो गया है! और तुरन्त लड़की उठी और चलने-फिरने लगी। जीवन और शक्ति लौट आए थे। वह 12 वर्ष की थी। और वे आनन्द से भर उठे और अपना आनन्द शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाए। और यीशु ने उन सबको, जिन्होंने उस कमरे में यह देखा था, आज्ञा दी कि इसके बारे में किसी को न बताएँ। वह मुर्दों को जिलाने वाले अद्भुत व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध नहीं होना चाहता था, बल्कि उसके रूप में जो मनों को बदलना और जिलाना चाहता था, ताकि परमेश्वर का राज्य आकार ले। और वह चाहता था कि लड़की को भोजन दिया जाए, ताकि बीमारी के बाद उसे बल मिले। **यीशु मृत्यु का सामना करता है, ठीक वैसे ही जैसे असाध्य रोग का। और जीतता है। मृत्यु, जो सारी सृष्टि को दासता में रखती है, शीघ्र ही जी उठे हुए के जीवन के सामने हट जाएगी। परमेश्वर का राज्य आ रहा है। बिना रुके। जहाँ यीशु रहा है, वहाँ कुछ भी पहले जैसा नहीं रहता। क्योंकि वह आया, सब कुछ नया हो जाएगा।**

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, कुछ ऐसा जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या पाठ के बारे में आपके कुछ प्रश्न हैं? क्या कोई बात आपको स्पष्ट नहीं है? उसे लिख लीजिए!

अध्याय 6

यीशु के अपने नगर नासरत में अविश्वास

वहाँ से वह उस नगर में गया जहाँ वह अपने परिवार के साथ बड़ा हुआ था, अपने नगर नासरत में। उसके चेले उसके पीछे हो लिए। जब सब्त का दिन आया, तो वह सदा की तरह और दूसरे यहूदियों की तरह आराधनालय में गया और शिक्षा देने लगा। और क्योंकि वह शास्त्रियों से भिन्न, अधिकार के साथ शिक्षा देता था, सुनने वाले अचम्भे से भर गए। और वे कहने लगे: इसे ये बातें कहाँ से मिलीं? इसे कैसी बुद्धि दी गई है! और इसके हाथों से कैसे असाधारण आश्चर्यकर्म होते हैं! यह तो वही साधारण कारीगर है, कभी शास्त्री नहीं रहा, मरियम का बेटा, जिसका पिता अब जीवित नहीं। याकूब, योसेस, यहूदा और शमौन का भाई। और इसकी बहनें भी यहीं हमारे नगर में हमारे बीच हैं। (वे पहले भी उसके पीछे दौड़ चुके थे, क्योंकि उन्होंने सोचा था कि उसका दिमाग़ फिर गया है।) और उन्होंने उसके कारण ठोकर खाई। उसके प्रति उनका ऊपर से अच्छा दिखने वाला रवैया बदल गया। वे उसे जानते थे और फिर भी नहीं जानते थे। उन्होंने अपने आप से यह नहीं पूछा कि इस सबका उनके लिए व्यक्तिगत रूप से क्या अर्थ है। तब वे जान जाते कि यह सारी बुद्धि कहाँ से आई थी। और यीशु ने उनसे कहा: भविष्यद्वक्ता का आदर होता है और उसकी सुनी जाती है। पर अपने नगर में नहीं, अपने रिश्तेदारों के बीच और अपने घर में नहीं। उन्होंने नहीं समझा कि बात उन्हीं की हो रही है। और वह वहाँ कोई आश्चर्यकर्म नहीं कर सका, क्योंकि वे उसके प्रति संदेह से भरे, हाँ, उसे ठुकराने वाले थे। **उनके लिए वह केवल कारीगर था**।

फिर भी वहाँ कुछ दुर्बल थे, बीमार, जिन पर उसने हाथ रखे और उन्हें चंगा किया। कुछ, जो उसके पास आए या लाए गए। **उसने नासरत में अविश्वास पर अचम्भा किया**। लगातार उसका सामना अविश्वास से होता था, फिर भी वह चंगा करता था, क्योंकि लोग उसके पास आते थे। पर यहाँ अधिकतर लोग घर पर ही रहे, क्योंकि उन्होंने नहीं पहचाना कि वह कौन है और कि वह उनके बीच भी क्या करने में समर्थ और इच्छुक था। जो इस ठोकर को सह नहीं सकता कि एक साधारण कारीगर सचमुच परमेश्वर का पुत्र है, वह यीशु मसीह के सच्चे ज्ञान तक नहीं पहुँचेगा। फिर वह आस-पास के गाँवों में घूमता रहा और लोगों को राज्य के सुसमाचार की शिक्षा देता रहा।

बारहों का मिशन

फिर वह एक निश्चित उद्देश्य से बारहों को अपने पास बुलाता है। उसने उन्हें दो-दो के समूहों में बाँटा। जैसा उसने सोचा कि वे एक-दूसरे के साथ ठीक बैठेंगे। दो-दो होकर वे एक-दूसरे को सहारा, सुरक्षा और प्रोत्साहन दे सकते थे। और फिर उसने उन्हें भेजा कि आस-पास के क्षेत्र में जाएँ और वही करें जो वह करता था। क्योंकि उसने उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर, दुष्टात्माओं पर अधिकार दिया, ताकि उन्हें निकालें और यीशु के

द्वारा राजकीय शासन के आरंभ को प्रकट करें। इसमें पश्चाताप और मन फिराने का प्रचार करना भी शामिल था। उसने उन्हें आज्ञा दी कि कुछ साथ न लें। न रसद, न झोली और न पैसे। केवल एक लाठी। मूसा की लाठी या भविष्यद्वक्ता की लाठी के समान। उन्हें इस्राएल को परमेश्वर की उपस्थिति में वापस ले जाना था। और पाँवों में जूतियाँ होनी चाहिए थीं। और दो कुरते भी नहीं, केवल एक। उन्हें, जैसे वह स्वयं, केवल परमेश्वर पर भरोसा रखना था। उन्हें ऐसे गरीबों के रूप में निकलना था जिनके पास कुछ नहीं। गरीबों के पास। **पश्चाताप उनके अपने जीवन में भी दिखाई देना चाहिए था। वे स्वयं और उनका व्यवहार कभी इस बात का कारण न बनें कि लोग उनके संदेश को ठुकरा दें। उनकी सुरक्षा, उनका भरण-पोषण और उनकी सुविधा उनके भेजे जाने में कभी पहले स्थान पर न हों।** एक मिशन जो अत्यावश्यक था, जिसे तुरन्त और बिना बड़ी तैयारी के होना था। एक भेजा जाना विशेष रूप से उस समय के लिए, जब यीशु यहाँ, गलील में था। अपने स्वर्गारोहण के समय उसने उन्हें फिर से भेजा, और उनके साथ उन सबको जो आज यीशु के पीछे चलते हैं। हमारे समय में, दूसरे देशों में, दूसरी परिस्थितियों में। जैसे उस समय, वैसे ही आज भी महत्वपूर्ण यह है कि राज्य के सुसमाचार का प्रचार किया जाए, मन फिराने का, पर साथ ही आत्मा, प्राण और शरीर की चंगाई के द्वारा पुनर्स्थापना का भी। जब अपने भेजे जाने में तुम्हें किसी घर में बुलाया जाए, चाहे वह गरीब का हो या धनवान का, जब कान और मन खुल जाएँ, तो वहाँ ठहरो और तब तक रहो जब तक आगे बढ़ने का समय न आ जाए। आगे बढ़ते जाओ, क्योंकि जितने हो सकें उतने लोगों को यह सुनना है। पर जहाँ वे तुम्हारी न सुनें और तुम्हें अपने घर न बुलाएँ, वहाँ अपनी जूतियों की धूल झाड़ दो। उन्हें यह जानना होगा कि सुसमाचार कोई मामूली बात नहीं है। यह अनुग्रह का एक अत्यावश्यक संदेश है। इसे ठुकराना एक बड़ी भूल है। परमेश्वर के राजकीय शासन के लिए केवल हाँ या ना है। और वे निकल पड़े और पश्चाताप की, परमेश्वर की ओर सोच बदलने की घोषणा करने लगे। उन्होंने बहुत-सी दुष्टात्माओं को निकाला। उन्होंने बहुत-से बीमारों पर तेल मलकर उन्हें चंगा किया। जहाँ यीशु था और जहाँ वे थे, वहाँ परमेश्वर का राज्य था। उनके काम इसका प्रमाण थे। वे यीशु के अधिकार में चल रहे थे। उसके नाम में। आज जहाँ भी द्वार खुलते हैं, जहाँ भी अवसर मिलते हैं, वहाँ बिना समय गँवाए काम करना होगा, तुरन्त!

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर काटा जाता है

यद्यपि चेलों को आत्मिक अधिकार मिला, फिर भी उन्हें, और आज तक यीशु के अनुयायियों को, हर बात के लिए तैयार रहना पड़ा और पड़ता है। जो यीशु को राजा के रूप में प्रचार करता है, उसे शासकों, राजाओं और कैसरों के, शास्त्रियों और फरीसियों के संसार में विरोध का सामना करना पड़ेगा। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ ऐसा ही हुआ। उसकी कहानी इस कठोर घटना के द्वारा हमें **संसार और उसके राजाओं का स्वभाव** और **यीशु का स्वभाव** स्पष्ट दिखाती है। राजा हेरोदेस अन्तिपास (Antipas), हेरोदेस महान का एक पुत्र, जिसने बैतलहम में बच्चों के वध की आज्ञा दी थी, यीशु के बारे में और जो लोग उसके बारे में कहते थे, उसके बारे में सुनता था। साधारण जनता के लोग उसके बारे में ऐसी बातें कहते थे जो हेरोदेस को बेचैन करती थीं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, जिसे उसने मरवा डाला था, मुर्दों में से जी उठा है और इसीलिए

उसके द्वारा ऐसी चमत्कारी शक्तियाँ काम करती हैं। दूसरे उसके बारे में कहते थे कि वह एलिय्याह है। और दूसरे कहते थे कि वह एक भविष्यद्वक्ता है। इससे हेरोदेस ने यह निष्कर्ष निकाला कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, जिसका सिर उसने कटवाया था, जी उठा है। हेरोदेस ने कुछ समय पहले यूहन्ना को पकड़वाकर बन्दीगृह में डलवा दिया था। यह सब अपनी पत्नी हेरोदियास के कारण, जो पहले उसके सौतेले भाई फिलिप्पुस की पत्नी थी। उसने उसे उससे छीनकर उससे विवाह कर लिया था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने बिना हिचकिचाए और राजा से डरे बिना उससे कहा था: मूसा की व्यवस्था के अनुसार अपने भाई की पत्नी को रखना तेरे लिए उचित नहीं। हेरोदियास सच्चाई सह न सकी, क्योंकि यूहन्ना सही था। वह उसकी घात में रहती थी और उसे मार डालना चाहती थी, पर सफल न हुई। क्योंकि हेरोदेस यूहन्ना का बहुत आदर करता था। उसके लिए वह एक धर्मी और पवित्र पुरुष था। वह उसकी रक्षा करता था। अक्सर जब वह उसकी सुनता, तो उलझन में पड़ जाता, क्योंकि यूहन्ना उसे बताता था कि उसे क्या बदलना चाहिए। वह उसकी बातें ख़ुशी से सुनता था, पर बदलता नहीं था। पर फिर वह दिन आया जब हेरोदियास ने बड़ी निर्ममता से अवसर का लाभ उठाया और हेरोदेस ने अपने ही हाथ बाँध लिए और यूहन्ना की रक्षा न कर सका। अपने जन्मदिन पर हेरोदेस ने एक भोज दिया। उसने प्रसिद्ध लोगों को, बहुत-से प्रतिष्ठित अधिकारियों और सेनापतियों और गलील के प्रमुख लोगों को आमंत्रित किया। यह एक धूमधाम भरा और मदहोश कर देने वाला उत्सव था। फिर हेरोदियास की बेटी पुरुषों के सामने नाचने के लिए भीतर आई। उसके नाच ने हेरोदेस और भोजन पर बैठे सब लोगों को मोह लिया। हेरोदेस इतना मुग्ध हो गया कि उसने उससे कहा: जो चाहे माँग, मैं तुझे दूँगा। यदि तू माँगे, तो अपने आधे राज्य तक मैं तुझे दे दूँगा। हेरोदेस नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा है। बहुत अधिक पी चुके थे। रोमियों के बिना, जो उसे सहन करते थे, वह ऐसा कभी नहीं कर सकता था। उसने अपना प्रस्ताव कई बार दोहराया। बेटी बाहर अपनी माँ के पास गई, ताकि इस उदार प्रस्ताव के बारे में उससे बात करे। वह नहीं जानती थी कि क्या माँगे। पर हेरोदियास ने अवसर पकड़ लिया। उसकी घड़ी आ गई थी: वह यूहन्ना का सिर माँगे। और वह भी तुरन्त। उसका सिर एक थाल में लाया जाए। जब हेरोदेस ने यह इच्छा सुनी, तो वह बहुत दुःखी और व्याकुल हुआ। हाँ, उसने तो शपथ भी खाई थी कि लड़की की इच्छा पूरी करेगा। और अब, जब सब मेहमान यह सुन चुके थे, वह पीछे नहीं हट सकता था। उसने तुरन्त जल्लाद को बन्दीगृह भेजा, जिसने यूहन्ना का सिर काट दिया। वह सिर को एक थाल में रखकर लड़की के पास लाया, जो उसे अपनी माँ के पास ले गई। जब यूहन्ना के चेलों ने यह सुना, तो वे उसका शव ले गए और उसे दफ़ना दिया।

चेलों का अपने मिशन से यीशु के पास लौटना

भेजे गए चेले अपने मिशन से लौटे और यीशु के चारों ओर इकट्ठे हुए। उन्होंने आनन्द से उसे, जो ध्यान से सुन रहा था, बताया कि उन्होंने क्या किया और क्या सिखाया था, हाँ, जो कुछ उन्होंने अनुभव किया था, सब कुछ। यीशु ने अपने चेलों को देखा और उन्हें साथ ले गया, ताकि उन्हें किसी सुनसान जगह में थोड़ा आराम मिले। क्योंकि उनके चारों ओर लगातार बहुत-से लोग रहते थे, अपनी बीमारियों और प्रश्नों के साथ।

उन्हें खाने तक का समय नहीं मिलता था। तो वे नाव पर सवार होकर एक सुनसान जगह को चले, जहाँ वे अकेले रह सकें। पर लोगों ने उन्हें जाते देखा और सुन लिया था कि वे कहाँ जाना चाहते हैं। यह बात फैल गई और वे सब गाँवों से पैदल उस जगह आए और यीशु के अपने चेलों के साथ पहुँचने से पहले ही वहाँ थे।

बहुत-सी स्त्रियों और बच्चों के साथ 5000 पुरुष तृप्त होते हैं

जब वे नाव से उतरे, तो यीशु ने बड़ी भीड़ देखी। वे उसके पीछे दौड़े चले आए थे। **इससे उसका मन द्रवित हो गया। उसे, अच्छे चरवाहे को, तरस आया।** क्योंकि ये बहुत-से लोग उन भेड़ों के समान थे जिनका कोई चरवाहा न हो। इस्राएल को अक्सर ऐसा कहा जाता था, जब वह बिना अगुवे और बिना राजा के था। फिर वह शिक्षा देने लगा, विस्तार से, काफ़ी देर तक, समझ में आने वाले और जीवंत ढंग से: **जीवन के और बड़ी बुद्धि के वचन**। जब कुछ समय बीत गया, तो उसके चेले उसके पास आते हैं, जो दिन और साँझ के आगे के बारे में चिन्तित हो गए थे। यह जगह सुनसान है – इसीलिए तो वे वहाँ गए थे – और बहुत देर हो चुकी है। यहाँ कहीं खाने को कुछ नहीं है। लोगों को आस-पास की बस्तियों और गाँवों में भेज दीजिए, ताकि वे अपने लिए भोजन ले लें। पर यीशु ने चेलों की ओर देखा और एक चौंका देने वाली बात कही: **तुम ही उन्हें खाने को दो!** हैरान, हाँ, उलझन में पड़कर वे कहते हैं: हम इतने लोगों के लिए रोटी कहाँ से लाएँ? हमारे पास केवल 200 दीनार हैं, इतने से कभी पूरा नहीं पड़ेगा। पर उसने उनसे पूछा: तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाओ और देखो कि यहाँ कितनी रोटियाँ जुटा सकते हो। वे लौटकर आए और उन्हें पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ मिली थीं। फिर यीशु ने निर्देश दिया कि ये बहुत-से लोग टोलियों में बँटकर इकट्ठे हो जाएँ। हरी घास पर 50-50 और 100-100 की टोलियों में। वसन्त ऋतु थी, घास नई और हरी थी। **वह, अच्छा चरवाहा, उन्हें हरी-हरी चराइयों में ले गया**। फिर यीशु ने वे पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लीं। उसने स्वर्ग की ओर देखा और अपने परमेश्वर और पिता की ओर मुड़ा। उसने भोजन के लिए उसका धन्यवाद और स्तुति की। फिर उसने रोटियाँ तोड़ीं, ताकि हर चेला लोगों को उनमें से दे सके। दोनों सूखी मछलियाँ भी उसने चेलों में बाँट दीं, जिन्होंने उन्हें आगे दिया। बड़ी भीड़ ने खाया और अद्भुत रीति से रोटी कम नहीं हुई। सब तृप्त हो गए। बचे हुए टुकड़े उन्होंने इकट्ठे किए और वे उससे कहीं अधिक थे जितना उन्होंने बाँटा था: बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरियाँ भरी गईं और बारह चेलों ने उन्हें इकट्ठा किया। और लगभग 5000 पुरुष थे, स्त्रियों और बच्चों के अलावा, जो रोटियों और मछलियों से तृप्त हुए। **यह उस नई सृष्टि का एक चिन्ह था जो यीशु में आरंभ होती है और एक दिन सारी पृथ्वी के लिए वास्तविकता बनेगी,** जब किसी को भूखा नहीं रहना पड़ेगा और सब तृप्त होंगे। यीशु सच्चे राजा और चरवाहे के रूप में प्रजा का भरण-पोषण करता है, हेरोदेस के विपरीत, जो अपने महल में, लोगों से अलग, अपने लिए भरपूरी में उत्सव मनाता था। यीशु नया और बड़ा मूसा है, जो भीड़ को व्यवस्थित ढंग से बैठाता है, उन्हें एक सुनसान जगह में रोटी देता है, जैसे जंगल में।

कौन जाने, लोगों ने समझा भी या नहीं कि यहाँ एक बड़ा चमत्कार हो रहा था। यीशु लोगों को भरपूर शिक्षा और बहुतायत से भोजन देता है। वह समय आने वाला था, जब यीशु अपनी मृत्यु और अपने

पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग पर चढ़ जाएगा, और यह काम, जैसे यहाँ झील के किनारे, सब चेलों को सौंपा जाएगा: **अब तुम्हारी बारी है! तुम्हें यह करना है! मेरे अधिकार और मेरी सामर्थ्य में।** चुनौतियाँ जो भी हों, उन्हें सुलझने में चाहे जितना समय लगे, चमत्कार के साथ या बिना, **हार मत मानो**। यीशु के चेलों को यह शोभा नहीं देता कि वे शिकायत करें और लोगों को लौटा दें। वह तब उपस्थित होगा और काम करेगा, जब सब संभावनाएँ आज़मा ली गई हों और हम विश्वास में कदम उठाने का साहस करें।

उस पार की यात्रा – यीशु झील पर चलता है

और तुरन्त वह अपने चेलों को आज्ञा देता है कि नाव पर चढ़कर झील के पार बैतसैदा को आगे चले जाएँ। वह स्वयं लोगों को विदा करना चाहता था। जब वह उन्हें विदा कर चुका, तो प्रार्थना करने के लिए पहाड़ पर चला गया। **अकेले**। उसके लिए यह जीवन के लिए आवश्यक था। परमेश्वर के साथ सहभागिता और भेंट। उसकी प्रार्थना में वे चेले भी शामिल थे जो झील पर थे। जब साँझ हुई, तो चेले झील के बीच में थे और वह किनारे पर। और यीशु ने देखा कि वे कितनी मेहनत से खे रहे हैं और हवा के विरुद्ध मुश्किल से आगे बढ़ पा रहे हैं। एक ऐसी स्थिति, जिसमें हम भी कभी-कभी होते हैं, जहाँ कुछ आगे नहीं बढ़ता। गहरी रात में, भोर होने से पहले, वे अब भी झील पर ही थे। तब यीशु उनके पास आया। वह झील पर ऐसे चल रहा था जैसे सूखी भूमि पर। ऐसा लगा मानो वह उनके पास से आगे निकल जाना चाहता हो। परमेश्वर के उस प्रकटन के समान, जो मूसा के सामने से होकर निकला। हाँ, यह परमेश्वर का प्रकटन था! पहाड़ पर नहीं, बल्कि उस समुद्र पर जिससे इस्राएली डरते थे। यीशु चेलों को केवल चौंकाना नहीं चाहता था, बल्कि उन्हें दिखाना चाहता था कि परमेश्वर उपस्थित है। देह में, मनुष्य के रूप में। **मैं यहाँ हूँ!** तुम्हारे लिए! जब उन्होंने उसे देखा, तो समझा कि कोई भूत देख रहे हैं। वे इतना डर गए कि भय से चिल्ला उठे। पर वह उनके पास आया और बोला: घबराओ मत, मैं हूँ। **वह "मैं हूँ", स्वयं यहोवा**। डरो मत। वह उनके पास नाव पर चढ़ आया और जो हवा उनके विरुद्ध चल रही थी, वह मानो उड़ गई। चेले बिलकुल हक्के-बक्के और हिल गए। वे बहुत ही अचम्भित हुए। वास्तव में उन्हें यीशु से हर बात की आशा रखनी चाहिए थी, जबकि कुछ ही घंटे पहले हज़ारों लोग पाँच रोटियों और दो मछलियों से तृप्त हुए थे। उनके मन अभी बंद थे। यहाँ तक कि वे भी, जो उसके सबसे निकट थे, अब तक नहीं जानते थे कि वह वास्तव में कौन है। वह, मसीहा, जिसकी वे और इस्राएल प्रतीक्षा कर रहे थे, ठीक वही कर रहा था जो करने में मसीहा को समर्थ होना था। उसे हर चीज़ पर अधिकार होना था और फिर भी साथ ही हमारे जैसा मनुष्य होना था। थका हुआ, परमेश्वर पर निर्भर और अंत में मरना भी। अब, जब समय आ गया था और वह उपस्थित था, वे इसे समझ नहीं पाए। हमारे साथ कैसा है, जबकि मरकुस ने हमें उसके बारे में इतना कुछ बताया है? **वह, वही, आज हमारा प्रभु है।** वह अपने चेलों पर नज़र रखता है, पहाड़ से उसने उन्हें देखा था, रात में, और वह सहायता करने आया।

हज़ारों बीमार चंगे होते हैं

फिर वे बैतसैदा नहीं, बल्कि गन्नेसरत पहुँचे और वहाँ नाव लगाई। जब वे उतरे, तो लोगों ने उन्हें पहचान लिया। यह बात फिर से जंगल की आग की तरह फैल गई। सब बीमारों को उनकी खाटों और बिछौनों पर यीशु के पास लाया गया। हर जगह से उन्हें लाया गया। और जहाँ भी यीशु जाता, नगरों, गाँवों और बस्तियों में, बाज़ारों में, वहाँ बीमारों को बाहर ले आते। और वे उससे विनती करते कि बीमार केवल उसके वस्त्र के आँचल को छू लें, ताकि चंगे हो जाएँ। और **जितनों ने उसे छुआ, वे उसी क्षण चंगे हो गए**। ठीक उस रक्तस्राव वाली स्त्री की तरह, जिसने पीछे से यीशु को छुआ था और उसी क्षण चंगी हो गई थी।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, शायद कुछ ऐसा भी जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं? उन्हें लिख लीजिए!

अध्याय 7

मनुष्यों की आज्ञाएँ और परमेश्वर की आज्ञाएँ

यीशु गलील में था। वहाँ उसने बाकी सब क्षेत्रों से अधिक काम किया। उसका प्रकट होना, उसके वचन और काम सारे देश में चर्चा का विषय बन चुके थे और यरूशलेम में भी जाने जाते थे। तब यरूशलेम से कुछ फरीसी और शास्त्री निकले, ताकि देश के उत्तर में जाकर देखें कि सब ठीक है या नहीं। इन्होंने यीशु के कुछ चेलों को बिना हाथ धोए खाना शुरू करते देखा। उनकी दृष्टि में और उनकी परम्परा के अनुसार वे बिना धोए विधि के अनुसार अशुद्ध थे। क्योंकि सब फरीसी और सब यहूदी खाने से पहले अपने हाथ धोते हैं, कम से कम मुट्ठी भर पानी से। इस तरह वे अपने पूर्वजों की परम्परा का पालन करते हैं। यह तब भी लागू होता है जब वे बाज़ार से आकर खाते हैं। ऐसे बहुत-से धोने और शुद्ध करने के काम वे घड़ों, कटोरों, ताँबे के बर्तनों या खाटों और गद्दियों पर करते हैं। इसलिए शास्त्रियों और फरीसियों ने उससे पूछा: आपके चेले पुरनियों की परम्पराओं और नियमों को क्यों नहीं मानते और अशुद्ध हाथों से खाते हैं? यीशु ने उन्हें उत्तर दिया: भविष्यद्वक्ता यशायाह ने तुम्हारे विषय में कितनी ठीक भविष्यद्वाणी की, जैसा उसके अध्याय 29 में पढ़ा जा सकता है: **ये लोग केवल होठों से और खोखले शब्दों से मेरा आदर करते हैं, क्योंकि उनका मन मुझसे बहुत दूर है और उसे सचमुच मुझमें कोई रुचि नहीं।**

उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को छोड़ दिया है और उसके बदले अब मनुष्यों की परम्पराओं को मानते हैं। तुम इतने चतुर हो कि परमेश्वर की आज्ञा से बचकर निकल जाते हो और उसे व्यर्थ कर देते हो, ताकि उसके बदले अपनी आज्ञाएँ और नियम बना लो। मूसा ने कहा है: अपने पिता और अपनी माता का आदर कर! और: जो पिता या माता को शाप दे, वह मार डाला जाए। पर तुम क्या करते हो? जो तुम्हारे माता-पिता को बुढ़ापे में चाहिए, जो तुम्हें उन्हें देना चाहिए, उसे तुम मन्दिर की भेंट कह देते हो। उन्हें वह नहीं मिलता जिसकी उन्हें ज़रूरत है। इस तरह तुम परमेश्वर की अच्छी आज्ञा को निष्फल कर देते हो और उसकी जगह अपने नियम रख देते हो। ऐसी धूर्तताओं की मैं तुम्हें और भी गिनती गिना सकता हूँ। फिर वह भीड़ की ओर मुड़ा और कहा: ध्यान से और मन लगाकर मेरी सुनो और समझो: ऐसी कोई चीज़ नहीं जो बाहर से मनुष्य के भीतर जाकर उसे अशुद्ध कर सके। वह उसके मन में नहीं, बल्कि उसके पेट में जाती है और वहाँ से फिर बाहर निकल जाती है। फिर वह भीड़ के पास से चला गया और एक घर में गया। वहाँ उसके चेलों ने उससे उस बात के बारे में पूछा जो उसने कही थी। उसने कहा: क्या तुम भी ऐसे नासमझ हो और नहीं समझते कि जो कुछ मनुष्य के भीतर जाता है, वह उसे अशुद्ध नहीं कर सकता? वह पेट में जाता है और वहाँ से बाहर निकल जाता है। **इसके विपरीत, जो मनुष्य में से निकलता है, वही उसे अशुद्ध करता है।** क्योंकि **मनुष्य के भीतर से, उसके मन से, बुरे विचार और योजनाएँ निकलती हैं: व्यभिचार, चोरी, हत्या, परस्त्रीगमन, लोभ, दुष्टता, छल, लुचपन, कुदृष्टि, निन्दा, अहंकार, मूर्खता और भी बहुत कुछ। ये सब**

बुराइयाँ स्वयं मनुष्यों से, उनके भीतर से निकलती हैं। यही मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, बिना धुले हाथ नहीं। क्या कोई मनुष्य अपने विचारों और भावनाओं के संसार का एक फ़ोटो सब लोगों को दिखाने को तैयार होगा? उसमें क्या दिखाई देगा? शायद वे बातें भी जिन्हें यीशु यहाँ गिनाता है। कोई भी अपने बारे में यह दावा नहीं कर सकता कि उसके मन में ऐसा कुछ नहीं है। विधि-संबंधी, बाहरी अशुद्धता से कोई परमेश्वर के सामने अशुद्ध नहीं होता। अन्यजाति भी नहीं, इसलिए कि वे अन्यजाति हैं और यहूदी नहीं। सबके मन में पाप है, यहूदी भी और अन्यजाति भी अशुद्ध हैं और उन्हें यीशु के द्वारा, उस एकमात्र पवित्र जन के द्वारा, शुद्धि की ज़रूरत है। यह बात यीशु अब अगली घटना में भी दिखाता है। यहूदियों के लिए अन्यजाति अपने आप में अशुद्ध थे। पर यीशु ऐसा नहीं देखता और अपने काम से इसे प्रमाणित करता है। **यीशु के साथ एक नया युग आरंभ हो चुका था**।

एक गैर-यहूदी स्त्री की बेटी चंगी होती है

वहाँ से वह और उसके चेले सूर के क्षेत्र में गए। वहाँ वह छिपने के लिए एक घर में गया, ताकि किसी को पता न चले कि वह वहाँ है। पर जैसा अक्सर होता था, ऐसा न हो सका। जैसे ही एक स्त्री ने उसके बारे में सुना, वह तुरन्त उसके पास आई और उसके पाँवों पर गिर पड़ी। उसकी छोटी बेटी में एक अशुद्ध आत्मा, एक दुष्टात्मा थी। वह यूनानी थी, जन्म से सूरूफिनीकी। उसने उससे विनती की कि वह उसकी बेटी में से दुष्टात्मा को निकाल दे। पर उसने उससे कहा: पहले बच्चों को तृप्त होने दो। बच्चों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं। वह समझ गई कि यीशु क्या कह रहा है, क्योंकि वह यहूदियों के लिए उनके मसीहा के रूप में आया था। इसलिए उसने कुछ ऐसा कहा जिसने यीशु को प्रभावित किया: कुत्ते भी तो उन टुकड़ों को खाते हैं जो बच्चों की मेज़ के नीचे गिरते हैं। **क्योंकि तुमने यह कहा है और टुकड़ों से सन्तुष्ट हो, तुम्हें रोटी मिलती है**। अपनी बेटी के पास जाओ, दुष्टात्मा निकल गई है। फिर वह जल्दी से अपने घर गई और निराश नहीं हुई। बच्ची खाट पर शान्ति से लेटी थी और दुष्टात्मा सचमुच निकल चुकी थी।

एक बहरा-गूँगा फिर से सुनता है और साफ़ बोल सकता है

फिर उसने सूर को छोड़ा और सैदा से होता हुआ फिर गन्नेसरत की झील पर, दिकापुलिस के बीच में आया। वहीं तो उसने उस दुष्टात्माग्रस्त को चंगा किया था जो बहुत-सी दुष्टात्माओं से बँधा था। तब वे एक बहरे को उसके पास लाते हैं, जो बहुत मुश्किल से बोल पाता था और जिसकी बात मुश्किल से समझ में आती थी। वे उससे विनती करते हैं कि उस पर हाथ रखे और वह चंगा हो जाए। तब यीशु उसे भीड़ से थोड़ा दूर, अलग ले गया। और उसने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डालीं, अपनी उँगलियों पर थूक लगाया और उस मनुष्य की जीभ पर रखा। **फिर उसने स्वर्ग की ओर, अपने परमेश्वर और पिता की ओर देखा, आह भरी और कहा: इप्फत्तह!** इसका अर्थ है “खुल जा”। उसी क्षण उसके कान खुल गए, और जो बन्धन उसकी जीभ को बाँधे हुए थे, वे खुल गए। वह स्पष्ट और साफ़ बोल सकता था। यीशु ने लोगों को इसे फैलाने से मना किया। पर जैसा अक्सर होता था, जितना अधिक वह उनसे यह कहता, लोग उतना ही अधिक उसके

चमत्कारों का प्रचार करते। चंगाई के इस चमत्कार पर वे बिलकुल अपने आपे में न रहे। ऐसा उन्होंने कभी अनुभव नहीं किया था, इसकी आशा करने का साहस भी नहीं किया था। उन्होंने, अन्यजातियों ने, कहा: **उसने सब कुछ अच्छा किया है**। वह बहरों को सुनने योग्य और गूँगों को फिर से बोलने योग्य बनाता है।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, कुछ ऐसा जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं? कोई बात समझ में नहीं आई? उसे लिख लीजिए!

अध्याय 8

4000 लोग तृप्त होते हैं

एक बार फिर बहुत-से लोग यीशु के पास थे। वे अन्यजातियों के क्षेत्र में थे। और फिर ऐसा हुआ कि खाने को कुछ नहीं था। तो उसने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और कहा: **मुझे इन सब लोगों पर तरस आता है**। मेरे कारण वे तीन दिन से यहाँ हैं और उनके पास खाने को कुछ नहीं। यदि वे अब ख़ाली पेट घर जाएँ, और कुछ को दूर जाना है, तो वे रास्ते में गिर पड़ेंगे। उसके चेलों ने उत्तर दिया: यहाँ बाहर जंगल में हम इतनी रोटियाँ कहाँ से लाएँ? यीशु ने पूछा: तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? सात, उन्होंने कहा, और उन्हें 5000 लोगों को खिलाने के समय के यही शब्द याद आ सकते थे। फिर वह आज्ञा देता है कि लोग बैठ जाएँ। उसने सात रोटियाँ लीं, उन पर धन्यवाद की प्रार्थना की और रोटियों को टुकड़ों में तोड़कर चेलों को दिया, जिन्होंने वैसा ही किया और लोगों में बाँट दिया। उनके पास कुछ छोटी सूखी मछलियाँ भी थीं। उन पर उसने धन्यवाद किया और उन्हें बँटवा दिया। **सब तृप्त हो गए।** उन्होंने बची हुई रोटी की सात टोकरियाँ भी इकट्ठी कीं। 4000 लोग थे, जिन्हें यीशु ने **मन और शरीर में** तृप्त करके घर भेजा। क्या उस स्त्री ने पहले यह नहीं कहा था कि कुत्ते भी उन टुकड़ों से तृप्त होते हैं जो मेज़ के नीचे गिरते हैं? यहाँ यीशु ने बहुत-से गैर-यहूदियों को जीवन के वचनों से और खाने के लिए रोटियों से तृप्त किया था। वह स्वयं अपने चेलों के साथ फिर नाव पर चढ़ा और वे दलमनूता को गए।

हमें स्वर्ग से एक चिन्ह चाहिए!

अब फरीसी इकट्ठे हुए और यीशु से विवाद करने लगे। वे उसकी परीक्षा करना और उसे परखना चाहते थे, शैतान की तरह, उससे स्वर्ग से एक चिन्ह माँगकर। ताकि वह अपने को मसीहा प्रमाणित करे। एक चिन्ह कि इस्राएल उसके द्वारा स्वतंत्र किया जाएगा। पर यीशु ने अपनी आत्मा में आह भरी, क्योंकि आलोचना और अविश्वास इतने बड़े थे। ये लोग चिन्ह क्यों माँगते हैं? मेरे द्वारा तो बहुत-से चिन्ह हो चुके हैं। नहीं, एक बात निश्चित है: इन लोगों को कभी वैसा चिन्ह नहीं मिलेगा जैसा वे चाहते हैं। मैं नहीं होने दूँगा कि उन्हें कोई चिन्ह मिले। उन्हें वैसा मसीहा भी नहीं मिलेगा जैसी वे कल्पना करते हैं। विश्वास के बिना नहीं। वह उन्हें छोड़कर अपने चेलों के साथ फिर नाव पर चढ़ा और झील के उस पार चला गया।

चेले चिन्ह देखते हैं, पर उनमें भी भरोसा नहीं

चेले रोटियाँ साथ लेना भूल गए थे। उनके पास केवल एक ही थी। शायद वह स्वयं यीशु था, लाक्षणिक अर्थ में। नाव में यीशु ने चेलों से कहा: फरीसियों के ख़मीर से सावधान रहो। उनके कपट से और उनकी मानवीय आज्ञाओं से और उनके अविश्वास से, जिसमें वे स्वर्ग से चिन्ह माँगते हैं। हेरोदेस के ख़मीर से भी सावधान

रहो। उसके अत्याचारी शासन और ठाट-बाट की लालसा से, हाँ, उसकी अभक्ति से। इस प्रकार के ख़मीर को अपने मन में फैलने और उसे बिगाड़ने न दो।

जब चेलों ने ख़मीर शब्द सुना, तो उन्होंने तुरन्त सोचा कि वे रोटियाँ भूल गए हैं और वह उन्हें इसी पर ध्यान दिलाना चाहता है। यीशु को विश्वास नहीं हुआ: तुम उन रोटियों के बारे में क्यों सोच रहे हो जिन्हें तुम भूल गए हो?! रोटियों की ओर मत देखो, केवल मेरी ओर देखो। क्या तुम अब भी नहीं समझते? तुम क्यों नहीं समझते? क्या तुम्हारा मन अब भी बंद है? यशायाह ने यह प्रजा के विषय में कहा था (मरकुस 4:12), पर क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है? तुम्हारी आँखें हैं और तुम नहीं देखते। तुम्हारे कान हैं और तुम नहीं सुनते। तुम्हें यह भी याद नहीं, जब केवल पाँच रोटियों से 5000 लोग तृप्त हुए थे। खाने के बाद तुमने कितनी टोकरियाँ उठाई थीं? उन्होंने कहा: बारह। जब कुछ ही समय पहले सात रोटियों ने 4000 लोगों को तृप्त किया, तब कितनी टोकरियाँ बची थीं? सात, उन्होंने कहा। इस पर उसने कहा: क्या तुम अब भी नहीं समझते? हम केवल 13 लोग हैं और तुम डरते हो क्योंकि हमारे पास केवल एक रोटी है? अपने अल्प विश्वास से तुम मेरे साथ यह क्या कर रहे हो? पर तुम देखोगे और सुनोगे और सीखोगे। मैं हार नहीं मानता और मैं तुमसे हार नहीं मानता। आज तक वह अपने चेलों से कभी हार नहीं मानता।

एक अंधे की चंगाई

फिर वे बैतसैदा आते हैं। वहाँ वे एक अंधे को उसके पास लाते हैं, इस विनती के साथ कि वह उसे छुए और उसे देखने योग्य बना दे। उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उसने उसकी आँखों पर थूका और उस पर हाथ रखे और फिर पूछा: तुम्हें क्या दिखाई देता है? पहली बार इस मनुष्य ने कुछ देखा, पर अभी धुँधला: मुझे मनुष्य पेड़ों के समान चलते-फिरते दिखाई देते हैं। फिर यीशु ने दूसरी बार उसकी आँखों पर हाथ रखे। उस मनुष्य ने चारों ओर देखा और अब साफ़-साफ़ देखने लगा, जैसे स्वस्थ आँखों से।

फिर यीशु ने उसे आज्ञा दी कि सीधे घर जाए और गाँव में न जाए कि सब कुछ फैला दे। यह चेलों के लिए एक पाठ था। वे चिन्ह तो देखते थे, पर अब भी धुँधले। उन्होंने नहीं पहचाना कि वह कौन है। उन्हें भी पूरी तरह साफ़ देखने के लिए दूसरे स्पर्श की ज़रूरत थी। वह तब आने वाला था, जब यीशु जी उठेगा।

जब पतरस ने कहा: आप मसीह हैं!

फिर यीशु अपने चेलों के साथ आगे उत्तर की ओर, कैसरिया फिलिप्पी को गया। वहाँ मूर्तियों के बहुत-से मन्दिर थे। और यरदन का एक सोता, जिसे अधोलोक का द्वार कहा जाता था। जब वे इस लंबे रास्ते पर थे, तो बात करने का समय मिला। यीशु ने अपने चेलों से पूछा: लोग, जो कुछ उन्होंने मेरे पास अनुभव किया है उस सबके बाद, क्या कहते हैं कि मैं कौन हूँ? चेलों ने कुछ बातें सुनी थीं और उससे कहा: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला। कुछ कहते हैं: एलिय्याह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक। कुछ मिनटों के बाद यीशु ने अपने चेलों से पूछा: तुम, जो मुझे अच्छी तरह जानते हो, तुम क्या मानते हो कि मैं कौन हूँ? पतरस ने, जो चेलों

का प्रवक्ता था, सीधे कहा: **आप अभिषिक्त हैं। मसीहा। मसीह**। जिसकी इस्राएल प्रतीक्षा कर रहा है। जो इस्राएल को स्वतंत्र करता है। उसने अपने चेलों को ज़ोर देकर, हाँ, कड़ाई से आज्ञा दी कि इसके विषय में कुछ न कहें। अभी समय नहीं आया था। **वह वैसा मसीहा नहीं था जैसी वे कल्पना करते थे। कुछ और होना था, उनकी अपेक्षा से भिन्न।**

मृत्यु की पहली घोषणा

फिर, जब पतरस यह सच्चा वचन – सब चेलों की ओर से भी – कह चुका, तो यीशु ने उनसे, तीन बार में से पहली बार, बिलकुल खुलकर और विस्तार से कहा: मनुष्य का पुत्र, वह मैं हूँ। मुझे बहुत दुःख उठाना है और पुरनियों, प्रधान याजकों और शास्त्रियों के द्वारा ठुकराया जाना है। **मैं मार डाला जाऊँगा, पर तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा। ऐसा ही होगा और ऐसा ही होना ज़रूरी है। मेरे लिए कोई और मार्ग नहीं है।**

पतरस ने, जिसके लिए यीशु मसीहा था, उसे अलग ले जाकर यह बात उसके मन से निकालनी चाही। उसकी समझ के अनुसार ऐसा कभी नहीं हो सकता था और होना भी नहीं चाहिए था। वह परमेश्वर की योजना नहीं जानता था। पतरस के लिए उस क्षण क्रूस मूर्खता था, न परमेश्वर का ज्ञान, न उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य।

यीशु ने दूसरे चेलों को देखा, जो ठीक वैसा ही सोचते थे। और उसने पतरस को डाँटा और सबके सामने कड़ी फटकार लगाई। हे शैतान, मेरे पीछे हट! तू परमेश्वर की तरह नहीं सोचता और यह नहीं सोचता कि वह क्या चाहता है। तू सब कुछ मनुष्यों की तरह देखता है। पर मनुष्य जैसे सोचते और करते हैं, वह समाधान नहीं है। कुछ बिलकुल और चाहिए।

केवल एक क्रूस पर चढ़ाया गया और जी उठा मसीह ही संसार का उद्धारकर्ता और राजा बनेगा। शैतान रोकना चाहता है कि मैं सब मनुष्यों के लिए ठीक यही बनूँ। वह रोकना चाहता है कि परमेश्वर को उसका परिवार मिले।

यीशु के पीछे चलने का अर्थ है उसी मार्ग पर चलना जिस पर वह चला

फिर उसने भीड़ को अपने पास बुलाया, जो वह और समय अपनी ओर से कम ही करता था। वे हमेशा अपने आप आते थे। पर जो उसे कहना था, वह इतना महत्वपूर्ण था। जो मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आप का इनकार करे। वह परमेश्वर को अपने जीवन में पहला स्थान और नियंत्रण दे। वह अपना क्रूस उठाए, जैसा मैं करूँगा, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो अपने प्राण को पकड़े रखना और बचाना चाहे, वह उसे खोएगा। **पर ध्यान से सुनो, जो कोई मेरे कारण या शुभ संदेश के, सुसमाचार के कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे अनन्त काल के लिए बचाएगा।** क्योंकि मनुष्य को क्या लाभ, यदि वह सारे संसार को प्राप्त करे और वह उसका हो जाए, पर अंत में मृत्यु के द्वारा अपना प्राण खो दे? वह अपने प्राण को किस मूल्य पर वापस ख़रीद सकता है? पृथ्वी की सब वस्तुओं का स्वामी होना भी इसके लिए काफ़ी नहीं होगा!

इस प्रजा के इन व्यभिचारी और पापी लोगों के सामने मेरे नाम को और जो मैंने सिखाया है उसे मान लेने में लज्जित न हो। पर जो लज्जित होता है और ऐसा करने का साहस नहीं रखता, उससे मनुष्य का पुत्र भी लज्जित होगा और उसका साथ नहीं देगा, जब वह अपने पिता की महिमा में पवित्र स्वर्गदूतों के साथ फिर आएगा।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, शायद कुछ ऐसा भी जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं या कोई बात समझ में नहीं आई? उसे लिख लीजिए!

अध्याय 9

हेर्मोन पर्वत पर चमकती महिमा

यीशु ने अपने चेलों से कहा: जो यहाँ मेरे पास खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तब तक नहीं मरेंगे जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य के साथ आया हुआ न देख लें। और छः दिन के बाद उनमें से तीन के लिए वह समय आने वाला था। उन्हें कुछ अंदाज़ा नहीं था। यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को अपने साथ एक ऊँचे पहाड़ पर ले जाता है, कैसरिया फिलिप्पी के पास हेर्मोन पर। वे अकेले यीशु के साथ पहाड़ पर चढ़े थे। अचानक उनके सामने उसका रूप बदल गया। उसके वस्त्र चमकते हुए सफ़ेद हो गए। इतने सफ़ेद, जितने पृथ्वी पर कहीं नहीं मिल सकते। ऐसा सफ़ेद वस्त्र केवल अति प्राचीन का था, स्वयं परमेश्वर का, जिसके विषय में दानिय्येल अध्याय 7 पद 9 में कहता है। और अचानक वहाँ **एलिय्याह मूसा** के साथ प्रकट हुआ। वे यीशु से बातें कर रहे थे। इन दोनों के विषय में मलाकी ने अध्याय 3 पद 1 और अध्याय 4 पद 4 से 6 में, इब्रानी बाइबल के बिलकुल अंतिम पदों में, कहा था। एलिय्याह आएगा और सब कुछ फिर से ठीक कर देगा। यह इस्राएल में सबकी जानी हुई बात थी और **चेलों ने समझ लिया कि ये दोनों निकट आते अन्त, न्याय और उद्धार का चिन्ह ही होंगे**। तब पतरस ने घबराहट में एक सुझाव दिया। वह नहीं जानता था कि क्यों और क्या कह रहा है। हे गुरु, आइए, हम आप तीनों के लिए एक-एक तम्बू खड़ा करें। चेले डर के मारे सुध-बुध खो बैठे थे। पीछे चलना पहाड़ पर, रोज़मर्रा के जीवन से दूर, बस जाना नहीं है। पर रोज़मर्रा के जीवन के लिए पहाड़ पर मिला **दर्शन** ज़रूरी है। यह घटना एक पूर्वदर्शन थी, चेलों का रोज़मर्रा का जीवन नहीं। उससे उनका सामना बहुत जल्द फिर होने वाला था। जब पतरस यह कह रहा था, तो एक बादल आया जिसने उन पर छाया कर ली। यह परमेश्वर पिता की उपस्थिति थी। और बादल में से एक आवाज़ आई, जिसने वही कहा जो यरदन पर एक बार पहले सुना गया था, जब यीशु ने बपतिस्मा लिया था: **यह मेरा सबसे अधिक प्रिय पुत्र है। केवल इसी की सुनो। पहले एलिय्याह की नहीं, मूसा की नहीं, बल्कि इसकी।** इसके वचन मायने रखते हैं! जो तुमने देखा है, उससे भी अधिक। **इसकी सुनो!** और फिर वे दोनों ग़ायब हो गए और केवल यीशु दिखाई दे रहा था। **वह, रब्बी, मसीहा, परमेश्वर का पुत्र और स्वयं परमेश्वर, उसे वह पूरा और सम्पूर्ण करना था जो एलिय्याह और मूसा ने शुरू किया था और जिसकी भविष्यद्वाणी की थी। केवल मसीहा ही परमेश्वर की योजना और राज्य को सामर्थ्य के साथ स्थापित कर सकता था। पर केवल गुलगुता से होकर।** यह एक पूर्वदर्शन था, आने वाली बातों के एक ट्रेलर की तरह। किसी राजनीतिक या सैनिक हस्तक्षेप से भिन्न, परमेश्वर का राजकीय शासन क्रूस, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के द्वारा पृथ्वी पर स्थापित होना था। फिर जब वे पहाड़ से नीचे उतर रहे थे, तो यीशु ने उन्हें ज़ोर देकर आज्ञा दी कि जो उन्होंने देखा है, उसके विषय में किसी को न बताएँ। जब वह मुर्दों में से जी उठेगा, तभी सब कुछ पूरा हो चुका होगा और वे इसके बारे में

बता सकेंगे, और तब उन्होंने ऐसा किया भी। क्योंकि तब तक उन्हें समझ जाना था कि मसीह को महिमा में जाने से पहले दुःख उठाना था। नीचे उतरते हुए तीनों चेले इस पर चर्चा करते रहे कि इसका क्या अर्थ है, मुर्दों में से जी उठना। यह बात उन्हें बहुत सोच में डाले रही। क्योंकि इब्रानी बाइबल से वे केवल अन्त के दिनों में सब मनुष्यों के एक सामान्य पुनरुत्थान को जानते थे।

भविष्यद्वक्ता एलिय्याह के आने के विषय में

चेलों ने एलिय्याह को देखा था। उन्हें व्यवस्था के उन शिक्षकों की याद आई जो कहते थे कि अन्त से पहले एलिय्याह का आना ज़रूरी है। इसलिए चेलों ने यीशु से पूछा: यदि वह मसीहा है, तो एलिय्याह कब और कहाँ आया था? उसने उन्हें उत्तर दिया: निश्चय ही एलिय्याह पहले आता है, ताकि परमेश्वर की सारी प्रजा को फिर से ठीक करे। पर मेरे प्रिय चेलो, पवित्रशास्त्र यह भी क्यों कहता है कि मनुष्य का पुत्र बहुत दुःख उठाएगा और तुच्छ समझा जाएगा? मैं तुमसे कहता हूँ कि एलिय्याह आ चुका है, अर्थात् यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवा में, जिसने प्रजा को पश्चाताप के लिए पुकारा। और उसके साथ उन्होंने जो चाहा वही किया। जैसा एलिय्याह के साथ हुआ, और 1 राजा अध्याय 19 में लिखा है, अधर्मी रानी ईज़ेबेल के द्वारा। यूहन्ना एक अधर्मी स्त्री के कारण मारा गया। अब एलिय्याह का, अर्थात् यूहन्ना का, मिशन पूरा हो चुका था। और यीशु को, जिसका वह अग्रदूत था, वही अनुभव करना था जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने किया। पर उसके द्वारा, जो मरा और जी उठा, सब बातों की सिद्ध पुनर्स्थापना होनी थी। यह उस समय कोई नहीं समझता था। जैसे कभी मूसा निर्गमन 24 और 34 में पहाड़ पर गया, परमेश्वर की महिमामय चमकती उपस्थिति में। चमकते चेहरे के साथ वह फिर प्रजा के पास नीचे आया। इसी तरह **यीशु सच्चा मूसा था**, जिसके वचन व्यवस्था हैं। और परमेश्वर पिता पुष्टि करता है कि हमें उसकी सुननी चाहिए। यीशु और चेले पहाड़ पर गए थे और अब फिर नीचे आ रहे थे। रोज़मर्रा में और प्रतिदिन के जीवन में।

दुष्टात्माग्रस्त लड़के का छुटकारा

जब वे फिर दूसरे चेलों के पास आए, तो वहाँ एक भीड़ थी। उसके बीच में दूसरे चेले थे और शास्त्री, जो उनसे बहस कर रहे थे। जब भीड़ ने उसे देखा, तो वे चकित हुए और उसका अभिवादन किया। वह आ गया था जिसकी सब चर्चा कर रहे थे। उसने उनसे पूछा: तुम किस बारे में बहस कर रहे हो? भीड़ में से एक मनुष्य ने उससे कहा: हे गुरु, मैं अपने बेटे को आपके चेलों के पास लाया था। क्योंकि उसमें एक गूँगी आत्मा है और वह बोल नहीं सकता। यह दुष्ट आत्मा मेरे बेटे को पकड़कर ज़मीन पर पटक देती है। फिर उसके मुँह से झाग निकलने लगता है और वह दाँत पीसता है। फिर उसका सारा शरीर तख़्ते की तरह अकड़ जाता है, जैसे मिर्गी के दौरे में। पर यह कोई बीमारी नहीं, बल्कि दुष्टात्मा का वश था। मैंने आपके चेलों से कहा कि वे उसे निकाल दें। पर वे इतने सामर्थी नहीं थे। इससे मैं उलझन में पड़ गया, आपके चेले बेबस लगे। तब यीशु ने ऐसे कहा कि सब सुन सकें, और ऐसे मानो वह भीड़ और अपने चेलों में कोई भेद न कर रहा हो: **कैसी अविश्वासी पीढ़ी है, जो परमेश्वर से कुछ भी होने का भरोसा नहीं रखती**! मैं कब तक यह

सहता रहूँगा? उसे मेरे पास लाओ! तब वे लड़के को उसके पास ले आए। जैसे ही दुष्ट आत्मा ने देखा कि यीशु ही उसे अपने पास बुला रहा है, वह भड़क उठी और निराशा में अपनी शक्ति दिखाने की कोशिश करने लगी। क्योंकि उसने लड़के को पकड़कर ज़मीन पर पटक दिया और उसके मुँह से झाग निकलने लगा। जब यीशु ने यह देखा, तो उसने पिता से पूछा: तुम्हारे बेटे को यह कब से है? बचपन से, पिता ने कहा। और वह उसे कभी आग में तो कभी पानी में गिरा देना चाहती है, ताकि उसे मार डाले। कृपया, यदि आप कर सकें, तो हमारी सहायता कीजिए और हम पर दया कीजिए।

यीशु ने उत्तर दिया: **यदि आप कर सकें? इसका क्या मतलब है?** जो परमेश्वर पर विश्वास करता है, उसके लिए सब कुछ संभव है! तब पिता चिल्ला उठा: **मैं विश्वास तो करता हूँ – पर मुझसे होता नहीं। कृपया पूरा भरोसा करने में मेरी सहायता कीजिए!** विश्वास और अविश्वास के मिश्रण के साथ, कभी विश्वास करता, कभी संदेह करता, वह यीशु के सामने खड़ा है। जैसे हम कठिन परिस्थितियों में। यीशु ने देखा कि और-और लोग दौड़े चले आ रहे हैं। तब उसने दुष्ट और अशुद्ध आत्मा को डाँटा और उससे कहा: हे बहरी और गूँगी आत्मा, इसमें से निकल जा और इस लड़के में फिर कभी न लौटना। और तब आत्मा अचानक चिल्लाई और लड़के को इधर-उधर झकझोरा। यीशु ने, जो बलवन्त है, इस आत्मा को हरा दिया, जिसने एक बार फिर अपने को प्रकट किया। आख़िरी बार, भागने से पहले। जब आत्मा चली गई, तो लड़का मुर्दे के समान हो गया। जितनों ने यह देखा, उन सबने यही सोचा। पर फिर यीशु ने उसका हाथ पकड़ा और उसे उठाया और लड़का खड़ा हो गया। बिलकुल सामान्य, इस सताने वाली आत्मा से स्वतंत्र, यीशु उसे जीवन में वापस ले आया। सबके लिए एक पाठ, कि वह स्वयं मुर्दों में से जी उठने वाला था।

फिर वह अपने चेलों के साथ एक घर में गया था। उन्हें तो यीशु से दुष्टात्माओं पर अधिकार मिला था और वे सोच में पड़ गए कि यह क्या बात थी। जब वे अकेले थे, तो उन्होंने उससे पूछा: हम उसे क्यों नहीं निकाल सके? यीशु ने उन्हें उत्तर दिया: इस प्रकार की आत्मा तुम्हारे द्वारा केवल विशेष गहराई वाली प्रार्थना से ही निकाली जा सकती है। अलग-अलग आत्माएँ होती हैं, यह विशेष रूप से बलवान है। क्या तुम इतने व्यस्त थे कि तुम्हारे पास प्रार्थना करने का समय नहीं था? तुम्हारे शब्द या तरीका निर्णायक नहीं हैं, बल्कि मुझसे तुम्हारा संबंध। प्रार्थना का अनुशासन और विश्वास निर्णायक हैं। अपने आप पर और अपने अनुभव पर भरोसा करने से सावधान रहो। **तुम्हें बार-बार नए सिरे से परमेश्वर पर भरोसा करना होगा, ताकि बार-बार नए सिरे से उसकी सामर्थ्य पाओ।**

चेलों के सामने शुरुआत से भी कठिन चुनौतियाँ प्रतीक्षा करती दिखती हैं। वैसे भी यीशु के पीछे चलने का मार्ग अब कठिन होता जा रहा था। क्योंकि उसे यरूशलेम जाना था। उसने चेलों को अपना अन्त समझाने की कोशिश की। विश्वास से अधिक-से-अधिक माँगा जाता है और इसी से वह बढ़ता है। विश्वास के मार्ग की शुरुआत में सबसे बड़ा विश्वास नहीं माँगा जाता, बल्कि उसे थोड़ा-थोड़ा करके, नई-नई और अक्सर बड़ी-बड़ी चुनौतियों के साथ, दृढ़ किया जाता है। जब हम पूरी तरह परमेश्वर पर निर्भर रहने का साहस करते हैं।

उसके दुःखों की दूसरी घोषणा

फिर वे वहाँ से आगे गलील में से होकर गए। और यीशु नहीं चाहता था कि किसी को इसका पता चले। रास्ते में उसने अपने चेलों को शिक्षा दी और उन्हें स्पष्ट किया: **मनुष्य का पुत्र बेबस होकर मनुष्यों के हाथों में पकड़वाया जाएगा।** वे उसे मार डालेंगे। और वह इसके विरुद्ध कुछ नहीं करेगा। पर तीन दिन के बाद वह मुर्दों में से जी उठेगा। इस बार यह कोई दृष्टान्त नहीं था, बल्कि अक्षरशः और वास्तविक घटना थी जो होने वाली थी। चेले यह नहीं समझे। उसे कौन पकड़वाएगा? यह बात उनके लिए अनजानी थी और वे उससे पूछने का साहस भी नहीं करते थे। शायद वे डरते थे कि पतरस की तरह उन्हें भी फटकार सुननी पड़ेगी।

सबसे बड़ा कौन है?

फिर वे कफरनहूम आए। घर में उसने अपने चेलों से पूछा: रास्ते में तुम किस बात पर झगड़ रहे थे? वह जानता था। लज्जा के मारे कोई कुछ नहीं बोला। उन्हें आभास था कि यह यीशु को अच्छा नहीं लगेगा। क्योंकि वे इस बात पर झगड़ रहे थे कि बारहों में सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण कौन है या जल्द ही मसीहा के, अपने गुरु के, राज्य में कौन होगा। तब यीशु बैठ गया और बारहों को अपने पास बुलाकर कहा: यदि तुममें से कोई पहला होना चाहता है, तो उसे अंतिम होना होगा: तुम्हारा सेवक। **यीशु मनुष्यों की सामान्य सोच को उलट देता है। और इसमें वह स्वयं सबसे बड़ा आदर्श है।** उन्हें यह समझाने के लिए उसने एक बच्चे को बुलाया, उसे उनके बीच खड़ा किया और उसे अपनी बाँहों में ले लिया। उस समय बच्चों का कोई सम्मान नहीं था, कोई प्रतिष्ठा नहीं, अधिकार कम थे और उन पर ध्यान नहीं दिया जाता था। उसने कहा: जो मेरे नाम से ऐसे बच्चे को ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है। और जो मुझे ग्रहण करता है, वह साथ ही उसे ग्रहण करता है जिसने मुझे भेजा है: मेरे पिता को। जब कोई एक बच्चे को ग्रहण करता है, तो उसे झुकना पड़ता है, बिलकुल नीचे तक, और अपने आप को छोटा करना पड़ता है। यदि कोई यीशु को ग्रहण करता है, उस सेवक को जो तुच्छ समझा गया, तो उसे अपने आप को छोटा करना और पूरी तरह परमेश्वर पर छोड़ देना होगा। और उसके जैसा बनना होगा।

जो हमारे विरुद्ध नहीं, वह हमारी ओर है

यूहन्ना ने यीशु से कहा: हे गुरु, हमने किसी को देखा जो आपके नाम से दुष्टात्माओं को निकालता है। पर वह हममें से नहीं था और हमारे पीछे भी नहीं चलता था। इसलिए हमने उसे ऐसा करने से रोका। पर यीशु ने उत्तर दिया: उसे मत रोको! जो मेरे नाम से सामर्थ्य के काम करता है, वह जल्दी ही हमारे विरुद्ध बुरा नहीं बोलेगा। जो हमारे विरुद्ध नहीं, वह हमारी ओर है! **यह मत सोचो कि तुम सबसे महत्वपूर्ण या सबसे बलवान हो।** उस लड़के को याद करो जिसकी तुम सहायता नहीं कर सके। अब तुम एक ऐसे व्यक्ति को रोकते हो जो दुष्टात्माओं को निकालता है। इसी तरह कभी यहोशू ने मूसा से कहा था कि वह उन दो पुरुषों को रोके जो आत्मा के द्वारा भविष्यद्वाणी कर रहे थे। पर मूसा ने गिनती अध्याय 11 पद 26 से 29 में कहा

कि उसे अच्छा लगेगा यदि थोड़े नहीं, बल्कि सब भविष्यद्वाणी करें। जो तुम्हें इसलिए एक कटोरा पानी पिलाता है कि तुम मेरे हो, उसे इसका प्रतिफल निश्चय मिलेगा। इसका ध्यान मैं रखूँगा। क्योंकि बहुत-से होंगे, अनजान, साधारण, जिन पर केवल इसलिए ध्यान जाता है कि वे मेरे नाम से एक कटोरा पानी देते हैं। और तुम सताव की ऐसी परिस्थितियों में पड़ोगे, जहाँ एक कटोरा पानी तुम्हारे लिए उस क्षण की सबसे अनमोल वस्तु होगा। तब तुम वे छोटे होगे, जिनकी ओर लोग झुकते हैं।

पाप के लिए बहकाना और उसके परिणाम

और जो कोई इन छोटे और मामूली लोगों में से किसी के विश्वास के लिए फंदा बिछाता है और उसे पाप के लिए बहकाता है, उसके लिए भला होता कि उसके गले में चक्की का पाट बाँधकर उसे समुद्र में फेंक दिया जाता। पाप के लिए यह बहकाना यीशु की दृष्टि में इतना बुरा है।

यीशु के पीछे चलने का अर्थ है युद्ध में होना। बहकावा और विरोध हर जगह घात में हैं। बुराई की शक्ति सक्रिय है, सब चेलों के जीवन में भी। बात आत्म-सिद्धि की नहीं, बल्कि एक स्पष्ट रवैये की है, जब बुराई लुभाती है और हममें जाग उठती है। पहला होने की लालसा ऐसा ही एक बुरा प्रलोभन था। **पीछे चलने और क्रूस के मार्ग पर बलिदान और आत्म-त्याग की माँग है**। इसलिए यीशु एक भयानक बात कहता है, जो अक्षरशः नहीं, पर इस कारण कम गंभीरता से भी नहीं कही गई: और यदि तुम्हारा अपना हाथ तुम्हारे विश्वास के लिए फंदा बन जाए और तुम्हें पाप के लिए बहकाए, तो उसे काट डालो! क्योंकि तुम्हारे लिए भला है कि टुण्डे होकर अनन्त जीवन में प्रवेश करो, इसकी अपेक्षा कि दो हाथ रहते नरक में, उस आग में जाओ जो कभी नहीं बुझती। और यदि तुम्हारा अपना पाँव तुम्हारे विश्वास के लिए फंदा बन जाए और तुम्हें पाप के लिए बहकाए, तो उसे काट डालो! क्योंकि तुम्हारे लिए भला है कि लँगड़े होकर अनन्त जीवन में प्रवेश करो, इसकी अपेक्षा कि दो पाँव रहते नरक में, उस आग में जाओ जो कभी नहीं बुझती। यदि तुम्हारी आँख तुम्हें पाप के लिए बहकाए, तो उसे निकाल डालो! तुम्हारे लिए भला है कि केवल एक आँख के साथ परमेश्वर के नए संसार में, उसके अनन्त राजकीय शासन में, प्रवेश करो, इसकी अपेक्षा कि दो आँखें रहते नरक में डाले जाओ। जहाँ कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। हाथ, पाँव और आँख पूरे मनुष्य को दर्शाते हैं, कि वह कैसे पाप के लिए बहकाया जा सकता है और पाप की ओर सक्रिय हो सकता है। अनन्त जीवन पाप के क्षणिक सुख से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। **यीशु का यह आह्वान, स्वयं नरक की तरह, एक कठोर चित्र है कि पाप को और पाप के लिए बहकाए जाने को कितनी गंभीरता से लेना चाहिए।** नरक, गेहेन्ना, एक वास्तविक स्थान था, यरूशलेम के दक्षिणी किनारे पर हिन्नोम की घाटी। कूड़े का एक ढेर, जहाँ लगातार आग जलती रहती थी और कचरे के कारण, जिसमें लाशें भी होती थीं, कीड़ों को हमेशा नया भोजन मिलता रहता था। यह स्थान, जो इस्राएल के इतिहास में घृणित मूर्तिपूजा और बच्चों की बलि से जुड़ा था, यीशु के लिए उस स्थान का प्रतीक है जहाँ अधर्मी और बिना छुटकारा पाए मनुष्य जाते हैं। यीशु के दिनों में यहूदी भी ऐसा ही मानते थे। इसलिए उसने कोई नई बात नहीं कही थी।

चेलों के जीवन में नमक के विषय में तीन गंभीर वचन

हर एक आग से नमकीन और शुद्ध किया जाएगा। इसी तरह चेले और सारी कलीसिया सताव की आग से शुद्ध किए जाएँगे। ठीक वैसे ही जैसे उस समय एक बलिदान को नमक से शुद्ध किया जाता था। नमक अच्छी चीज़ है। पर यदि वह शक्तिहीन और प्रभावहीन हो जाए, तो किससे प्रभाव लाया जाए या उसे फिर से बहाल किया जाए? पृथ्वी का नमक बनो, वह करके जो मैं कहता हूँ, और वैसे बोलकर और काम करके जैसे मैंने किया है। अपने बीच नमक का शक्तिशाली प्रभाव रखो, आपस में शान्ति से रहकर। यदि तुम शान्ति के राजकुमार के पीछे चलते हो, तो उसकी शान्ति तुम पर राज्य करे। शान्तिपूर्ण संगति में रहो। उनके साथ भी भोजन की संगति रखो, जो कुछ ही समय पहले तुम्हारे पीछे नहीं चलना चाहते थे। उन छोटों के साथ भी, जिनका कोई सम्मान नहीं। इसमें अपनी प्रतिष्ठा को लेकर झगड़ना बंद करो। तुम सब भाई और बहनें हो।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ ऐसा सीखा है जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

आप यीशु के विषय में क्या सीखते हैं?

अध्याय 10

यहूदिया के मार्ग पर यीशु

फिर वे निकल पड़े और यहूदिया के क्षेत्र में आए। और यरदन के पार फिर बहुत-से लोग उसके पास आए। सदा की तरह उसने इस अवसर का उपयोग उन्हें शिक्षा देने के लिए किया, क्योंकि वे उसकी सुनते थे।

फरीसी तलाक़ के प्रश्न से उसकी परीक्षा करते हैं

जहाँ भीड़ थी, वहाँ यीशु था। फरीसियों के लिए सबके सामने उसे चुनौती देने का एक अच्छा अवसर। उन्होंने इस इरादे से उससे पूछा कि वह कोई ग़लत या कम से कम संदेहजनक उत्तर दे बैठे: क्या पुरुष के लिए अपनी पत्नी को छोड़ देना उचित है? उन दिनों शास्त्रियों में अलग-अलग मत थे कि मूसा को कैसे समझा जाए। क्या केवल व्यभिचार ही, या कोई भी कारण, पुरुष को अपनी पत्नी को छोड़ देने का अधिकार देता था? फरीसियों के लिए यह अधिक सुविधाजनक था कि किसी स्त्री को कम महत्वपूर्ण कारणों से भी भेजा जा सके। हाँ, त्यागपत्र के साथ। यीशु ने हाथ धोने को महत्वहीन बताया था, क्योंकि जब अशुद्धता की बात हो, तो मनुष्य का भीतरी भाग कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वह इस प्रश्न का क्या उत्तर देगा?

यीशु ने तलाक़ के प्रति उनके पूरी तरह ग़लत रवैये को भाँप लिया और अपने उलटे प्रश्न से उसे उजागर कर देता है: मूसा ने इसके बारे में क्या कहा है? उन्होंने कहा: मूसा ने त्यागपत्र लिखकर स्त्री को छोड़ देने की अनुमति दी है। पर यीशु ने उनसे कहा: मूसा ने यह केवल इसलिए किया, क्योंकि तुमने परमेश्वर और उसकी अच्छी व्यवस्था के प्रति अपने मन कठोर कर लिए हैं। तुम केवल यह पूछते हो कि तुम किस बात की छूट ले सकते हो, ताकि फिर भी वही करो जो तुम चाहते हो। तुम यह नहीं पूछते कि स्त्री का अपने बच्चों के साथ क्या होगा, जब उसे बस भेज दिया जाता है। तुम्हें यह पूछना चाहिए कि परमेश्वर क्या चाहता है, न कि यह कि किसी तरह अब भी क्या उचित है। क्योंकि आरंभ से ऐसा नहीं था, जब परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को बनाया। क्योंकि पुरुष अपने पिता और अपनी माता को छोड़ देगा और अपनी पत्नी के साथ प्राण और शरीर से एक दृढ़ और नई एकता बन जाएगा। ऐसी एकता कि वे अब दो नहीं, बल्कि एक हैं। जिसे परमेश्वर ने इस प्रकार जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। यह बात भी मूसा ने उत्पत्ति में कही थी और यह विवाह के लिए परमेश्वर के उद्देश्य के अनुसार था। स्त्री को छोड़ने के विषय में मूसा की आज्ञा स्त्री की रक्षा के लिए थी और ऐसे अलगावों के बुरे परिणामों को जितना हो सके उतना कम रखने के लिए थी। ठुकराई हुई स्त्री असहाय और असुरक्षित होती थी। मूसा ने तलाक़ या त्याग को कोई अच्छी बात नहीं बनाया। प्रभु ने इब्रानी बाइबल की अंतिम पुस्तक में, मलाकी 2 पद 16 में, स्पष्ट कहा था: **मैं तलाक़ से घृणा करता हूँ!** फरीसियों ने पवित्रशास्त्र को ग़लत समझा और विवाह के लिए परमेश्वर की अच्छी इच्छा को नहीं पहचाना।

और जैसा अक्सर होता था, जब वे एक घर में अकेले थे, तो चेलों ने उससे तलाक़ के बारे में पूछा। उसने उनसे कहा: जो अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी से विवाह करता है, वह उसके विरुद्ध व्यभिचार करता है। और ठीक ऐसा ही है, जब स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे से विवाह करती है। यह उसके विरुद्ध व्यभिचार है।

यीशु उस बात का खंडन करता है जिसे फरीसी पवित्रशास्त्र के अनुसार मानते थे। चेले अचम्भित थे। पर यीशु स्पष्ट करता है कि उसके राज्य में परमेश्वर का शासन कैसा दिखता है। उसकी आज्ञाएँ लागू होती हैं, उसकी सृष्टि की व्यवस्था, जो सदा आशीष के लिए होती हैं। बात यह नहीं कि मूसा ने किस बात की अनुमति दी है, बल्कि यह कि परमेश्वर की इच्छा क्या है।

यीशु और बच्चे

स्त्रियों और बच्चों के साथ अक्सर दुर्व्यवहार और बलात्कार होता था, क्योंकि पुरुष-प्रधान समाज में उनकी कोई आवाज़ नहीं थी। जैसे तलाक़ के विषय में यीशु स्त्री का पक्ष लेता है और उसे मनमानी से बचाता है, वैसे ही अब वह बच्चों की ओर मुड़ता है। क्योंकि माताएँ अपने बच्चों को उसके पास लाती थीं, ताकि वह उन्हें छुए। पर चेलों ने उन्हें डाँटा कि ऐसा न करें। अभी-अभी यीशु ने उन्हें इस विषय में पाठ पढ़ाए थे कि अपनी बड़ाई की होड़ में उन्हें **बच्चों से क्या सीखना चाहिए**। यीशु ने ठीक-ठीक देखा कि चेले कैसा व्यवहार कर रहे हैं। और यह उसे बिलकुल अच्छा नहीं लगा। उसने उनसे कहा: **सब बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें कभी मत रोको!** मैं तुमसे सच कहता हूँ: जो कोई परमेश्वर के राज्य को उस तरह ग्रहण नहीं करता, जैसे कोई बच्चे को ग्रहण करता है, अपने आप को छोटा करके, वह इस राज्य में प्रवेश ही नहीं करेगा। और उसने उन्हें कसकर अपनी बाँहों में लिया और उन पर आशीष देते हुए हाथ रखकर उन्हें आशीष दी।

धनवान और अनन्त जीवन

जब वे फिर बाहर निकलकर रास्ते पर थे, तो एक व्यक्ति आया और धूल भरी सड़क पर उसके सामने घुटने टेककर उससे एक जलता हुआ प्रश्न पूछा: हे उत्तम गुरु, **अनन्त जीवन पाने के लिए मुझे क्या करना होगा**? तुम मुझे उत्तम क्यों कहते हो? केवल एक ही उत्तम है, और वह परमेश्वर है! उसकी आज्ञाएँ तो तुम जानते हो: हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, और पिता और माता का आदर करना। तब उसने कहा: हे गुरु, इन सब बातों को मैं लड़कपन से मानता आया हूँ। जब यीशु ने उसे इस तरह अपने सामने देखा और सुना कि वह क्या कह रहा है, तो उसे उससे प्रेम हो गया। पर कुछ निर्णायक बात थी जिसकी उसमें कमी थी, क्योंकि यीशु ने उसके मन में झाँककर देखा। उसने उससे कहा: **अनन्त जीवन पाने के लिए तुममें एक बात की कमी है: अपनी सारी सम्पत्ति बेचकर गरीबों को दे दो। तब तुम्हें स्वर्ग में धन मिलेगा। अनन्त जीवन! और फिर आकर मेरे पीछे हो लो।** जब उसने यह सुना, तो वह उदास हो गया और घबराकर यीशु के पास से चला गया। यह माँग उसके लिए बहुत कठोर थी,

क्योंकि उसके पास बहुत सम्पत्ति थी। इस सम्पत्ति से वह अनन्त जीवन नहीं ख़रीद सकता था। जिन आज्ञाओं का नाम यीशु ने लिया, उन सबको उसने माना था। पर पहली और सबसे बड़ी आज्ञा, परमेश्वर से प्रेम करना और उसे अपने जीवन में पहला स्थान देना, उसे वह भूल गया था। उसकी सम्पत्ति उसके लिए परमेश्वर से अधिक महत्वपूर्ण थी। फिर यीशु ने चारों ओर, अपने चेलों की ओर देखा, जिन्होंने यह देखा था, और कहा: जिनके पास धन और सम्पत्ति है, उनके लिए परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। चेले इन शब्दों से चौंक गए। क्या परमेश्वर का राज्य सबके लिए खुला नहीं था? पर यीशु यह बात फिर से कहता है: हे बच्चो, परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कितना कठिन है। परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है। धनवान अपनी सम्पत्ति पर भरोसा रखता है, उसे किसी बात की कमी नहीं और परमेश्वर का राज्य उसकी दृष्टि में उसे कुछ ख़ास नहीं देता। तब चेले बहुत ही चकित हुए और आपस में कहने लगे: **तो फिर किसका उद्धार हो सकता है?** तब यीशु ने उनकी ओर देखा और कहा: मनुष्यों के लिए यह असंभव है, पर परमेश्वर के लिए नहीं। **परमेश्वर के लिए सब कुछ संभव है। वह हर मन को सुसमाचार पर विश्वास करने और मेरे पीछे चलने के लिए प्रेरित कर सकता है।**

क्या पीछे चलना सार्थक है?

यीशु के इन शब्दों ने पतरस को गहराई से झकझोर दिया। उन्होंने स्वयं सब कुछ छोड़ दिया था और उसके पीछे हो लिए थे। क्या यह अनन्त जीवन पाने के लिए पर्याप्त होगा? हमें इससे आख़िर क्या मिलेगा, पतरस पूछता है, जब हमने आपके पीछे चलने के लिए सब कुछ छोड़ दिया है? यीशु ने उत्तर दिया: ऐसा कोई नहीं, जिसने मेरे कारण या सुसमाचार के कारण अपना घर, भाइयों या बहनों या माता या पिता या बच्चों या खेतों को छोड़ दिया हो और सौ गुना न पाए। इसी समय में, इस संसार के जीवन में, घर, भाई, बहनें, माताएँ, बच्चे और खेत – पर सताव के साथ। पर निश्चय और अंततः आने वाले युग में, परमेश्वर के नए संसार की महिमा में, अनन्त जीवन। यहाँ राज्य का "अभी से – पर अभी नहीं" पहचाना जा सकता है। परमेश्वर के नए संसार का भविष्य अभी से वर्तमान समय में काम करता है। सौ गुना वर्तमान समय में कोई भौतिक लाभ नहीं, बल्कि चेलों की पारिवारिक संगति में और उनकी सम्पत्ति में भरपूर भागीदारी है।

पर बहुत-से जो पहले हैं, पिछले होंगे। और इस जीवन में बहुत-से जो पिछले हैं, आने वाले अनन्त जीवन में पहले होंगे। जो हम इस जीवन में देखते हैं, ज़रूरी नहीं कि वह उसके अनुरूप हो जो वह परमेश्वर के लिए वास्तव में है। परमेश्वर मनों में देखता है और उसका आदर करेगा जो उसे सबसे अधिक भाता है, जिसने इस जीवन में हर बात में उसे प्राथमिकता दी।

यीशु तीसरी बार अपनी मृत्यु के विषय में बोलता है

वे, यीशु और बारहों और दूसरी स्त्रियाँ और पुरुष जो यीशु के पीछे चलते थे, यरदन की घाटी से ऊपर यरूशलेम की ओर जा रहे थे। यीशु उनके आगे-आगे अकेला चल रहा था। जब उन्होंने उसे अपने आगे चलते देखा, तो वे डर गए। उसके रूप ने उन्हें भयभीत कर दिया। कुछ ठीक नहीं था। सब कुछ और दिनों से इतना

अलग था। फिर उसने बारहों को अपने पास लिया और बताया कि यरूशलेम में उसके साथ क्या होने वाला है। मनुष्य का पुत्र प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा। वे उसे मृत्यु-दण्ड के योग्य ठहराएँगे और अन्यजातियों के हाथ सौंप देंगे। वे उसका ठट्ठा करेंगे और उस पर थूकेंगे, उसे कोड़े मारेंगे और मार डालेंगे। पर तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।

राज्य में सबसे अच्छे स्थानों को लेकर विवाद

तब दोनों भाई, याकूब और यूहन्ना, जब्दी के पुत्र, एक संदिग्ध निवेदन लेकर यीशु के पास आते हैं: हे गुरु, हमारी आपसे एक विनती है। कृपया उसे पूरी कीजिए। यीशु पूछता है: मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ? जब आपका महिमामय राज्य आरंभ हो, तो हमें यह दीजिए कि हम आपके दाहिने और बाएँ बैठें। यीशु ने उन्हें उत्तर दिया: तुम्हें कुछ पता नहीं कि तुम क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह कटोरा पी सकते हो जो मैं पीने वाला हूँ? या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो मैं लेने वाला हूँ? इस विजयी सम्मान के स्थान को पाने के लिए दुःख का यह कटोरा पीना और दुःख का यह भयानक बपतिस्मा अनुभव करना होगा। बिना अधिक सोचे उन्होंने कहा: हम कर सकते हैं। यीशु फिर उनसे कहता है: जो कटोरा मैं पीता हूँ, उसे तुम पियोगे। दुःख के जिस बपतिस्मे को मैं सहता हूँ, उससे तुम्हारा बपतिस्मा होगा। पर मेरे दाहिने और मेरे बाएँ बैठाना मेरा निर्णय नहीं, बल्कि वह उनके लिए है जिनके लिए वह तैयार किया गया है। मैंने तो तुमसे कहा था: पिछले पहले होंगे। जब दसों ने यह बातचीत और दोनों चेलों की यह माँग सुनी, तो वे उन पर नाराज़ होने लगे।

राज्य में सच्ची महानता

तब यीशु ने उन सबको अपने पास बुलाया और उन्हें एक महत्वपूर्ण बात सिखाई: तुम अच्छी तरह जानते हो कि जातियों पर शासन करने वाले उन्हें लगातार दबाते हैं। सत्ताधारियों की आदत है कि अपनी शक्ति का स्वार्थ के लिए और अपनी सत्ता की कुर्सी बचाए रखने के लिए दुरुपयोग करें। चेलों के परिवार में, तुम्हारे बीच, ऐसा कभी नहीं होगा। जो तुममें बड़ा होना चाहता है, उसे सबका सेवक होना होगा। जो तुममें पहला होना चाहता है, वह सबका दास बने। क्योंकि परमेश्वर का मापदंड उलटा है। वह मनुष्य के पुत्र के द्वारा प्रकट होता है, जो अपनी सेवा करवाने नहीं आया। **वह सेवा करने और अपना प्राण बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में देने आया है। उसका प्राण बहुतों के छुटकारे के लिए और उन्हें पाप और मृत्यु की बन्धुआई से मोल लेकर छुड़ाने के लिए "बदले में" दिया जाएगा।**

अंधा बरतिमाई चंगा होता है

यीशु और उसके चेले यरीहो पहुँचे। नगर में यीशु और चेलों के चारों ओर एक बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। जब वे नगर से फिर यरूशलेम की ओर निकले, तो वह उनके पीछे हो ली। वहाँ एक अंधा भिखारी बैठा था, इस आशा में कि फसह के पर्व के लिए यरूशलेम जाने वाले तीर्थयात्रियों से भीख मिलेगी। उसका नाम बरतिमाई था, तिमाई का पुत्र। तब उसने सुना कि यीशु, वह नासरी, आया है। तब वह तुरन्त चिल्लाने लगा:

हे दाऊद के पुत्र, यीशु, मुझ पर दया कीजिए! उसने पहले भी कई बार यीशु के बारे में और उसके कामों के बारे में सुना था। इसी क्षण की उसने आशा की थी। और अब यह क्षण आ गया था। पर लोगों ने उसकी सहायता नहीं की। वे उसे यीशु के पास नहीं ले गए। इससे भी बुरा: उन्होंने उसे धमकाया कि चुप रहे। पर वह और भी ज़ोर से चिल्लाया। **उद्धारकर्ता, संसार के मुक्तिदाता ने उसकी सुन ली।** यीशु रुक गया और कहा: उसे बुलाओ! तुरन्त वे अंधे को बुलाते हैं और उससे कहते हैं: तेरा भाग्य अच्छा है। उठ, वह तुझे बुला रहा है। वह तुझे देखना चाहता है! उसने अपना चोगा गिरा दिया, उछलकर खड़ा हुआ और दौड़कर उसके पास गया। यीशु ने उससे कहा: मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ? अंधे ने उससे कहा: हे मेरे प्रभु और गुरु, यह कि मैं देख सकूँ! शान्त हो जाओ, यीशु ने कहा। क्योंकि तुमने मुझ पर ऐसा भरोसा किया, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें चंगा कर दिया है। और वह तुरन्त साफ़-साफ़ देखने लगा। फिर वह यीशु के साथ रहना चाहता था। अपने उद्धारकर्ता के साथ। जब यीशु आगे ऊपर यरूशलेम की ओर चला, तो वह उसके पीछे हो लिया। सब अनुयायियों और चेलों की आँखें खुलनी ज़रूरी हैं कि यीशु को यरूशलेम जाना था, ताकि दुःख उठाए और वहाँ अपना प्राण बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में दे। **उसका प्राण छुड़ौती के रूप में, ताकि बहुतों को शैतान, पाप और स्वार्थ की दासता से मोल लेकर छुड़ाए!** यूहन्ना और याकूब दुःखों और मृत्यु के विषय में अंधे थे और केवल सत्ता के बारे में सोचते थे। जब यीशु ने उनसे भी बरतिमाई की तरह पूछा कि वह उनके लिए क्या करे, तो वे सिंहासन चाहते थे। बरतिमाई धूल में बैठा था और उद्धार खोज रहा था।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, शायद कुछ ऐसा भी जिसे आप अपने जीवन में उतारना चाहते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं या कोई बात समझ में नहीं आई? उसे लिख लीजिए!

अध्याय 11

यीशु गदहे पर सवार होकर यरूशलेम जाता है और राजा के रूप में उसका स्वागत होता है

जब यीशु अपने चेलों के साथ जैतून के पहाड़ के पास बैतफगे और बैतनिय्याह के निकट पहुँचता है, तो उसने अपने दो चेलों को एक काम देकर आगे भेजा। उन्हें अगले गाँव में एक गदही का बच्चा मिलना था, एक बछेड़ा, जिस पर अब तक कोई मनुष्य सवार नहीं हुआ। उसे खोलकर हमारे पास ले आओ। और यदि कोई पूछे: यह क्या है, तुम क्या कर रहे हो? तो कहना: प्रभु को इसकी ज़रूरत है और वह इसे जल्द ही वापस भेज देगा। दोनों ने बछेड़े को बाहर द्वार के पास बँधा हुआ पाया। उन्होंने उसे खोला। जो पास खड़े थे, उन्होंने जैसी अपेक्षा थी वैसा ही कहा: तुम यह क्या कर रहे हो? उन्होंने ठीक वैसा ही उत्तर दिया जैसा यीशु ने उनसे कहा था। और उन्होंने अनुमति दे दी।

फिर वे उस गदही के बच्चे को यीशु के पास लाए, उस पर अपने कपड़े डाले और यीशु उस पर बैठ गया। फिर यीशु बछेड़े पर सवार होकर महान राजा के नगर की ओर चला। वह, शान्ति का राजा, नम्रता से गदहे पर सवार, जैसा भविष्यद्वक्ता जकर्याह ने अध्याय 9 पद 9 में भविष्यद्वाणी की है। चेलों ने संकेत दिया था कि वह मसीह है। बहुत-सी बातें इसके पक्ष में थीं और लोगों ने उसका योग्य स्वागत किया। उन्होंने राजकीय सम्मान के चिन्ह के रूप में अपने कपड़े उसके आगे सड़क पर बिछा दिए। एक कालीन की तरह। दूसरों ने हरी डालियाँ तोड़कर सड़क पर बिछा दीं। बहुत-से लोग, जिनमें तीर्थयात्रियों की एक बड़ी भीड़ भी थी जो यीशु के साथ गलील से आई थी, उसके आगे-आगे चल रहे थे, दूसरे, जो पीछे-पीछे आ रहे थे, ऊँचे शब्द से पुकार रहे थे: होशाना – परमेश्वर की स्तुति हो! धन्य है वह जो परमेश्वर की ओर से आता है! आख़िरकार दाऊद का राज्य आ गया है! स्वर्ग में परमेश्वर की स्तुति हो! जैसा भजन संहिता 118 पद 26 कहता है। पर यीशु चुप रहा, क्योंकि उसका मिशन, जैसा उसने बार-बार स्पष्ट किया था, वह राजा बनना नहीं था जो इस्राएल को सैनिक और राजनीतिक रूप से स्वतंत्र करना चाहता। क्रूस उसके जीवन और उसके राज्य पर छाया हुआ था। और उसके भावी अनुयायियों पर भी। केवल एक सप्ताह में वह अपना क्रूस नगर से बाहर गुलगुता तक उठाकर ले जाने वाला था। जब हम यीशु की जय-जयकार करते हैं, तो उसकी जो हमारे पापों के लिए मरने आया, न कि उसकी जो हमें सम्मान दिलाने आया। हमें पहले उसका स्वागत उसके रूप में करना है जो परमेश्वर के राज्य के लिए अपना प्राण देता है, न कि उसके रूप में जो दाऊद का राज्य खड़ा करता है।

नगर में जय-जयकार जल्दी ही थम जाती है। यीशु सीधे मन्दिर में गया और वहाँ चारों ओर देखा। साँझ को वह फसह के पर्व के दूसरे बहुत-से तीर्थयात्रियों की तरह नगर से बाहर चला गया, ताकि आस-पास की

बस्तियों में रात बिताए। वह अपने चेलों के साथ वापस बैतनिय्याह गया।

पुराना इस्राएल और उसका मन्दिर – बिना फल का अंजीर का पेड़

अगली सुबह, जब वे फिर यरूशलेम जा रहे थे, यीशु को भूख लगी। दूर से उसने हरे पत्तों वाला एक अंजीर का पेड़ देखा, जैसा वसन्त में सामान्य है। वह उसके पास गया, ताकि उस पर शुरुआती अंजीर पाए। पर उसे कोई नहीं मिला, केवल पत्ते। अभी देर से पकने वाले अंजीरों का समय नहीं था। तब चेलों ने उसे पेड़ से यह कहते सुना: अब से कोई तेरा फल कभी न खाए!

ऐसे शब्द यीशु ने और कभी नहीं कहे। उसके वचनों में आशीष देने, चंगा करने, सिखाने, पर साथ ही न्याय करने की भी सामर्थ्य है। मन्दिर में उसका जाना और जो कुछ उसे वहाँ सिखाना और करना था, वह अंजीर के पेड़ पर किए गए इस प्रतीकात्मक काम के अनुरूप है। इस्राएल और उसका विशाल मन्दिर-केन्द्र, जो उसकी पहचान का स्थान था, जल्द ही अपने अन्त को पहुँचने वाला था और किसी नई चीज़ के लिए जगह छोड़ने वाला था।

यीशु व्यापारियों को मन्दिर से भगाता है

यरूशलेम पहुँचकर वह सीधे मन्दिर में गया। वहाँ, अपने ठीक आस-पास, वह ख़रीदने और बेचने वालों को बाहर निकालने लगा। सर्राफ़ों और कबूतर बेचने वालों की मेज़ें उसने उलट दीं। उसने किसी को भी मन्दिर में से होकर कोई सामान ले जाने नहीं दिया।

फिर उसने उन सबको, जिन्होंने यह देखा था, सिखाया: क्या पवित्रशास्त्र यशायाह अध्याय 56 पद 7 में नहीं कहता: मेरा घर सब जातियों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा? पर तुमने इसे ऐसी जगह बना दिया है जो जातियों को बुलाने के बजाय बाहर रखती है। इस घर को तुमने अपना घर बना लिया है। अपनी ही बड़ाई का उत्सव मनाने के लिए। परमेश्वर के घर को तुमने डाकुओं की खोह बना दिया है।

मन्दिर बिगड़कर डाकुओं की खोह बन गया था। सांसारिक हो चुका, और ऐसे डाकुओं के द्वारा चलाया और संगठित किया जाता हुआ जिन्होंने मन्दिर को अपना छिपने का स्थान और अपना अधिकार-क्षेत्र घोषित कर दिया था। जहाँ उनके नियम चलते थे। जैसा यिर्मयाह ने पहले ही अध्याय 7 पद 11 में कहा था: झूठ बोलना, चोरी करना, हत्या करना, व्यभिचार करना, झूठी शपथ खाना – यही उनका दुःखद चित्र है जो मन्दिर के लिए उत्तरदायी हैं। इस प्रकार मन्दिर ने अपना उद्देश्य सदा के लिए खो दिया है।

यीशु ने अपने इस काम से थोड़ी देर के लिए बलिदान की सेवा रोक दी। इसके द्वारा उसने प्रतीक के रूप में मन्दिर पर न्याय और बलिदान की सेवा के अन्त का संकेत दिया। **उसका काम पुनर्स्थापना का नहीं, बल्कि अन्त का संकेत देता है।** मन्दिर का हाल अंजीर के पेड़ जैसा होना था। मन्दिर अब वह नहीं रहा था जो उसे होना चाहिए था। उसका समय समाप्त हो रहा था। उसे एक नए, आत्मिक मन्दिर के लिए जगह छोड़नी थी, जिसमें सब जातियों के लोग शामिल होने थे। यह प्रधान याजकों और शास्त्रियों ने सुना। वे आपे

से बाहर हो गए और उसे मार डालने का निश्चय किया। यीशु ने एक ही वाक्य से उनकी पोल खोल दी थी। वे ही वे डाकू थे जिन्होंने मन्दिर को अपना अड्डा बना लिया था। वे उस प्रभाव से डरते थे जो यीशु का लोगों पर था। वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। क्योंकि लोग उसकी शिक्षा से गहराई से प्रभावित थे। मन्दिर में यीशु का यह काम ही वह कारण बनता है जिसके चलते अंततः यीशु पर मुकद्दमा चलाया जाता है। जिसका परिणाम मृत्यु है।

अंजीर का पेड़ सूख गया है – प्रार्थना, विश्वास और क्षमा ही वह है जिस पर सब कुछ निर्भर है – किसी मन्दिर-भवन पर नहीं

अगली सुबह नगर जाते हुए वे फिर उस अंजीर के पेड़ के पास से निकले। वह पूरी तरह सूख गया था। पेड़ को देखकर पतरस को याद आया और उसने यीशु से कहा: हे रब्बी, देखिए, यह अंजीर का पेड़ जिसे आपने शाप दिया था। यह सूख गया है। यीशु ने उसे उत्तर दिया: बात विश्वास की है! परमेश्वर पर भरोसा रखो! क्योंकि एक बात निश्चित है: यदि कोई अपने मन में संदेह न करे, बल्कि विश्वास करे, तो वह इस पहाड़ से कह सकता है: समुद्र में जा पड़!, और ऐसा ही हो जाएगा। यह सचमुच ऐसा ही है: जो कुछ तुम प्रार्थना में माँगते हो, विश्वास करो कि तुम्हें मिल जाएगा, और वह हो जाएगा। और जब तुम एक साथ खड़े होकर प्रार्थना करते हो, तो पहले उन्हें क्षमा करो जिनके विरुद्ध तुम्हारे मन में कुछ है, ताकि स्वर्ग में तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा कर सके। और इस तरह तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर दे।

जिस पहाड़ की बात यीशु ने की, वह सिय्योन पर्वत था, अपने मन्दिर के साथ, जहाँ अब परमेश्वर निवास नहीं करता था। सच्चा विश्वास और क्षमा करने की तत्परता ऐसे भवन से अधिक महत्वपूर्ण हैं, जो अब केवल राष्ट्रीय पहचान का काम करता है। **प्रार्थना और विश्वास और क्षमा यीशु की नई संगति की पहचान हैं। यह संगति सच्चा प्रार्थना-घर बनने वाली थी, सब यीशु-अनुयायियों से, सब जातियों से बना नया आत्मिक मन्दिर।**

मन्दिर में व्यापारियों को भगाने के यीशु के अधिकार के विषय में शास्त्रियों का प्रश्न

तीसरे दिन यीशु अपने चेलों के साथ यरूशलेम आता है। जब वह मन्दिर में घूम रहा होता है, तो कुछ ऐसे पुरुष यीशु के पास आते हैं जिनका मन बहुत मित्रतापूर्ण नहीं था। वे प्रधान याजक, शास्त्री और पुरनिए थे। वे उससे कहते हैं: तुम्हें यह अधिकार और यह अनुमति कौन देता है कि यहाँ मन्दिर में वह करो जो तुमने कल किया? यीशु ने उत्तर दिया: मैं भी तुमसे एक बात पूछना चाहता हूँ। मुझे उत्तर दो, तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ। तुमसे मेरा प्रश्न है: यूहन्ना का बपतिस्मा परमेश्वर की ओर से था या मनुष्यों की ओर से? तुम क्या कहते हो? तब उन्होंने सिर जोड़कर सोचा कि क्या उत्तर दें। बहुत-से लोग उनके चारों ओर खड़े थे। उन्होंने सोचा, यदि वे कहें, परमेश्वर की ओर से, तो फिर उन्होंने विश्वास क्यों नहीं किया था। यदि वे कहें, वह मनुष्यों की ओर से था, तो उन्हें भीड़ से डरना पड़ेगा। भीड़ को पक्का विश्वास था

कि यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था, परमेश्वर का भेजा हुआ। आख़िरकार उन्होंने दबी आवाज़ में और चाल के तौर पर कहा: हम नहीं जानते। तब यीशु ने उनसे कहा: तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ। इस प्रकार उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले के अंतिम सप्ताह के तीसरे दिन खुला टकराव टल गया। मसीहा की बुद्धि ने उसके हत्यारों को अभी रोके रखा। फिर भी तनाव महसूस हो रहा था।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ ऐसा सीखा है जिसे आप अपने जीवन में उतार सकते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या पाठ के बारे में आपके कुछ प्रश्न हैं? क्या कोई बात आपकी समझ में नहीं आई? उसे लिख लीजिए!

अध्याय 12

ठेके पर दी गई दाख की बारी और दुष्ट किसानों का दृष्टान्त – इस्राएल दाख की बारी के रूप में और उसके ज़िम्मेदार अगुवे हिंसक माली के रूप में: यीशु के अधिकार के प्रश्न का अप्रत्यक्ष उत्तर – वह प्रिय पुत्र है, वह कोने का पत्थर है

फिर यीशु यरूशलेम के लोगों से, नगर के निवासियों से और सारे देश से आए बहुत-से तीर्थयात्रियों से दृष्टान्तों में बात करने लगा। एक मनुष्य ने दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ा बाँधा, रस का कुण्ड खोदा और बारी में एक गुम्मट बनाया। उसने उसे किसानों को ठेके पर दे दिया और परदेश की यात्रा पर चला गया। कुछ समय के बाद स्वामी ने अपने दास को भेजा, ताकि **फलों** में से उचित भाग ले आए। परमेश्वर अपनी प्रजा में आज्ञाकारिता और आराधना के सच्चे फल खोज रहा था। पर ठेकेदारों ने उसे पीटा और ख़ाली हाथ लौटा दिया। फिर उसने एक और को भेजा। पर उसका सिर उन्होंने फोड़ दिया और उसे बहुत बुरा-भला कहा। अगले को तो उन्होंने मार ही डाला। और दाख की बारी का स्वामी बार-बार लोगों को अपना भाग लेने भेजता रहा। उसने असाधारण धीरज दिखाया। फिर भी: कुछ को उन्होंने मार डाला और दूसरों को पीटा। सदियों पुरानी एक विनाशकारी, हठीली परम्परा।

तब स्वामी ने अपने मन में कहा: अब मैं और क्या कर सकता हूँ? मैं **अपने एकमात्र प्रिय पुत्र** को भेजूँगा। कम से कम उसका तो वे आदर करेंगे। पर दाख की बारी के ठेकेदार, जो ऐसा व्यवहार करते थे मानो सब कुछ उन्हीं का हो, आपस में कहने लगे: यह तो वारिस है। आओ, इसे भी मार डालें। तब दाख की बारी सदा के लिए हमारी हो जाएगी। यह एक बड़ा आत्म-धोखा है, दाख की बारी सदा स्वामी की ही रहेगी। और जब वह आया, तो उन्होंने उसे पकड़कर उसकी हत्या कर दी। फिर उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर फेंक दिया।

फिर यीशु ने पूछा: दाख की बारी का स्वामी और प्रभु क्या करेगा? वह आकर ठेकेदारों को मरवा डालेगा और अपनी दाख की बारी दूसरों को दे देगा। क्या यह सब तुम्हें अनसुना लगता है? क्या तुमने पवित्रशास्त्र में, भजन संहिता 118 पद 22 में, नहीं पढ़ा: जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने, प्रजा के आत्मिक अगुवों ने, लापरवाही से एक ओर फेंक दिया, वही कोने का पत्थर, पूरे मन्दिर-निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण पत्थर बन गया है। यह प्रभु की ओर से हुआ है और हमारी दृष्टि में अद्भुत है! परमेश्वर ने अपने पुत्र को धर्मी ठहराया। उसने उसे ईश्वरीय मसीहा के रूप में प्रमाणित किया। जब उसने यह कहा, तो वे उसे पकड़कर मार डालने के लिए और भी दृढ़ हो गए। पर भीड़ का डर, जिसके वे स्वयं अगुवे थे, उन्हें रोके रहा। वे भली-भाँति समझ गए थे कि यह दृष्टान्त उन्हीं के विषय में है। वे ही वे ठेकेदार थे जिन्होंने अतीत में स्वामी के सब भेजे हुओं को बार-बार ठुकराया, पीटा और मार डाला था। प्रजा के अगुवों के रूप में फलहीनता के लिए वे ही ज़िम्मेदार थे। इस दृष्टान्त को किसी व्याख्या की ज़रूरत नहीं थी, न प्रजा के सरदारों के लिए, न चेलों के लिए। यद्यपि अब

भी इस दृष्टान्त के द्वारा उनका ध्यान परमेश्वर के धीरज की ओर दिलाया जाता है, वे एक बार फिर अपने मन कठोर कर लेते हैं और अपने ऊपर वह न्याय ले आते हैं जो ईस्वी सन् 70 में आ पहुँचा। और उन्होंने उसे एक बार फिर छोड़ दिया और फिर पीछे हट गए।

विस्फोटक जाल-भरा प्रश्न: क्या कैसर को कर देना चाहिए?

फिर सरदार, फिर से धूर्त और बुरे इरादे से, कुछ फरीसियों और हेरोदियों को यीशु के पास भेजते हैं। केवल ऐसा ही इरादा इन दोनों समूहों को एक साथ ला सकता था। वे उसके लिए जाल बिछाने की योजना बनाते हैं। व्यंग्य से प्रशंसा करते हुए वे उससे कहते हैं: हे गुरु, हम जानते हैं कि आप सच्चे और निष्पक्ष हैं और किसी की हाँ में हाँ नहीं मिलाते। आपको मनुष्यों में अपनी प्रतिष्ठा की चिन्ता नहीं। आप केवल वही सिखाते हैं जो परमेश्वर हमसे चाहता है। हमें बताइए: क्या हम यहूदियों के लिए, परमेश्वर की प्रजा के लिए, रोमी कैसर को कर देना उचित है? हम दें या न दें? फसह के पर्व के समय मन्दिर के आँगन में यह प्रश्न एक गर्म, विस्फोटक वातावरण में पड़ता है, जिसमें यहूदी रोमियों से स्वतंत्रता और छुटकारे के लिए तरस रहे थे। जिसका स्वागत मसीहा के रूप में हुआ था, वह इस पर क्या कहेगा? यदि वह कर देने के पक्ष में होता, तो उसे एक कायर सहयोगी के रूप में उजागर किया जा सकता था, जो यहूदी पहचान को त्याग देता है। यदि वह कर देने से इनकार करता, तो इसे रोम के विरुद्ध राजनीतिक विद्रोह के रूप में आरोप बनाया जा सकता था। हर उत्तर अपने आप में उस पर आरोप लगाने या उसे रास्ते से हटाने के लिए काफ़ी था। पर यीशु ने उनका कपट भाँप लिया। यह जाल-भरा प्रश्न क्यों? मुझे एक दीनार दो, ताकि मैं यह सिक्का देखूँ। उसके अपने पास कोई नहीं था। हर किसी के पास नहीं होता था। प्रश्न पूछने वालों के पास तो था। वे बड़ी तत्परता से कर देते थे। उन्होंने उसे एक दीनार दिया। वह उनसे पूछता है: इस सिक्के पर किसकी छवि है? वे कहते हैं: कैसर की छवि, तिबिरियुस (Tiberius) की, औगुस्तुस (Augustus) के पुत्र की। तब यीशु ने उनसे कहा: **तो जो कैसर का है वह कैसर को लौटा दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।** तब वे अत्यन्त चकित हुए। उसने उन्हें एक बार फिर निरुत्तर कर दिया था। बड़ी कुशलता से यीशु कैसर के, कर के पैसे और राजनीति के क्षेत्र को परमेश्वर के राज्य से अलग करता है। इस्राएल के परमेश्वर के सामने रोमी कैसर का शायद ही कोई महत्व है। यीशु परमेश्वर को सबसे ऊपर रखता है, उसी को सदा पूरी और पहली आज्ञाकारिता मिलनी चाहिए। उसके सिवाय कोई परम मूल्य नहीं है। **रोम के विरुद्ध हिंसक विद्रोह नहीं, बल्कि परमेश्वर की आज्ञाकारिता ही परमेश्वर के राज्य की सही प्रतीक्षा है।** कर देना इसके विपरीत नहीं है। और जो कैसर का है उसे लौटा देना वास्तव में एक निष्क्रिय, अहिंसक विद्रोह है। लौटा देना इस अर्थ में कि उससे आगे ख़रीदा-बेचा न जाए। तन और प्राण से परमेश्वर की आज्ञाकारिता पहला और सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य बनी रहती है। कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सका।

पुनरुत्थान के विषय में एक जाल-भरा प्रश्न

सदूकी भी उसके पास आए, जो कहते हैं कि पुनरुत्थान है ही नहीं। उन्होंने उससे पूछा: हे गुरु, मूसा ने लिखा है: यदि किसी पुरुष का भाई मर जाए और बिना सन्तान के पत्नी छोड़ जाए, तो वह पुरुष अपने मरे हुए भाई की पत्नी से विवाह करे और अपने भाई के लिए वंश उत्पन्न करे। मान लीजिए, एक बार **सात भाई** थे। पहले ने विवाह किया, पर उसके और उसकी पत्नी के सन्तान होने से पहले ही मर गया। इसलिए उसके छोटे भाई ने उस स्त्री से विवाह किया। पर वह भी सन्तान होने से पहले मर गया। तीसरा भी ठीक ऐसे ही। सातों भाइयों में से किसी ने कोई वंश नहीं छोड़ा। अंत में, सातों भाइयों के बाद, वह स्त्री भी मर गई। **पुनरुत्थान** में: **वह स्त्री उनमें से किसकी पत्नी होगी?** क्योंकि वह सातों भाइयों की पत्नी थी। यीशु ने उनसे कहा: क्या तुम इसीलिए भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न पवित्रशास्त्र को जानते हो और न परमेश्वर की सामर्थ्य को? क्योंकि जब वे जी उठेंगे, तो न विवाह करेंगे और न विवाह में दिए जाएँगे। बल्कि वे स्वर्ग में स्वर्गदूतों के समान होंगे। परमेश्वर के नए संसार में मनुष्यों का उत्पन्न होना और बढ़ना फिर नहीं होगा। मुर्दों के जी उठने के विषय में – क्या तुमने मूसा की पुस्तक में नहीं पढ़ा कि परमेश्वर ने झाड़ी के पास उससे कैसे कहा: मैं अब्राहम का परमेश्वर और इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ? **वह तो मुर्दों का नहीं, बल्कि जीवितों का परमेश्वर है**। तुम बड़ी भूल में हो। अब्राहम, इसहाक और याकूब अभी से परलोक के स्वर्गीय संसार में जीवित हैं और जब यीशु फिर आएगा, तब वे जी उठेंगे। मृत्यु अंतिम शब्द नहीं है, बल्कि परमेश्वर से मिलने वाला जीवन। शास्त्रियों में से एक उनके पास आया। उसने सुना था कि वे कैसे बहस कर रहे थे और यीशु ने कितना अच्छा उत्तर दिया था। इसलिए उसने यीशु से पूछा: सब आज्ञाओं में सबसे बड़ी आज्ञा कौन-सी है?

पहली आज्ञा का प्रश्न

सब आज्ञाओं में सबसे बड़ी आज्ञा कौन-सी है? यीशु ने उत्तर दिया: सबसे बड़ी आज्ञा यह है: **हे इस्राएल, सुन: प्रभु हमारा परमेश्वर एक ही प्रभु है। तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से, अपने सारे प्राण से, अपनी सारी बुद्धि से और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रख। दूसरी यह है: तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख!**

इन दोनों से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं। शास्त्री ने उससे कहा: अच्छा उत्तर है, हे गुरु, आपने सच कहा: वह एक ही है और उसके सिवाय और कोई नहीं। और उससे सारे मन से और सारी समझ से और सारी शक्ति से प्रेम रखना और पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना, सब होमबलियों और बलिदानों से बढ़कर है। जब यीशु ने देखा कि उसने समझदारी से उत्तर दिया, तो उससे कहा: तुम परमेश्वर के राज्य से दूर नहीं हो। अब किसी को उससे और कुछ पूछने का साहस न हुआ।

मसीह के विषय में प्रश्न

यीशु ने मन्दिर में शिक्षा देते हुए कहा: शास्त्री कैसे कह सकते हैं कि अभिषिक्त दाऊद का पुत्र है? दाऊद ने स्वयं पवित्र आत्मा की अगुवाई में कहा: प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा: मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ। दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो फिर वह उसका पुत्र कैसे हुआ? और बड़ी भीड़ उत्सुकता से उसकी बातें सुन रही थी। यीशु केवल इसलिए मसीहा नहीं है कि वह दाऊद का पुत्र है। वह साथ ही उससे बढ़कर है। वह दाऊद का प्रभु है, क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र है, जो दाऊद से पहले था। भविष्य की ओर देखते हुए दाऊद भजन संहिता 110 में यीशु का आदर करता है। यह बात शास्त्रियों की आँखों से ओझल हो गई थी या उन्होंने इसे कभी इस तरह देखा ही नहीं था।

शास्त्रियों के विषय में चेतावनी

अपनी शिक्षा में उसने सलाह दी: शास्त्रियों से सावधान रहो, जो सुन्दर लबादे पहनकर घूमते हैं और बाज़ारों में नमस्कार पसंद करते हैं। वे आराधनालयों में और भोजों में ख़ास आसन चाहते हैं। जो विधवाओं के घर-बार को निगल जाते हैं और दिखावे के लिए बड़ी लंबी-लंबी प्रार्थनाएँ करते हैं, उन्हें और भी कठोर दण्ड मिलेगा। क्योंकि वे पवित्रशास्त्र को जानते थे और उनके पास कोई बहाना नहीं होगा। घमण्ड और प्रतिष्ठा के चिन्ह और लंबी प्रार्थनाएँ किसी को भक्त नहीं बनाते। यीशु शास्त्रियों के समूह की कड़ी आलोचना करता है। बाकी सबसे अधिक कड़ी, क्योंकि वे घमण्ड करते थे कि वे पवित्रशास्त्र को और इस तरह परमेश्वर की इच्छा को जानते हैं। परमेश्वर के वचन का पाखंड और कपट से कोई लेना-देना नहीं है।

गरीब विधवा का दान

और यीशु दान-पेटी के सामने बैठकर देखने लगा कि लोग कैसे अपनी भेंटें उसमें डालते हैं; बहुत-से धनवानों ने बहुत डाला। तब एक गरीब विधवा अकेली आई और उसने ताँबे के दो सिक्के डाले, जो एक क्वाद्रान्स (Quadrans) के बराबर है। यीशु ने अपने चेलों को अपने पास बुलाया और उनसे कहा: मैं तुमसे सच कहता हूँ: इस गरीब विधवा ने उन सबसे अधिक दान-पेटी में डाला है जिन्होंने इससे पहले कुछ डाला। **क्योंकि सबने अपनी बढ़ती में से कुछ डाला, पर इसने अपनी घटी में से अपना सब कुछ डाल दिया जो इसके पास था, अपनी सारी जीविका।** यह यीशु की शिक्षा का एक शिखर है। मनुष्यों के सामने नहीं, बल्कि परमेश्वर के सामने आदर इकट्ठा करना। अपने आप को उसे समर्पित कर देना, यही वह है जो यीशु इस गरीब विधवा में पाता है और जिसकी प्रशंसा करता है।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ ऐसा सीखा है जिसे आप अपने जीवन में करना चाहते हैं?

यीशु में आपको किस बात से उत्साह मिलता है?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए! उसके प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं? उन्हें लिख लीजिए!

अध्याय 13

अन्त समय का प्रवचन: मन्दिर का विनाश

जब यीशु मन्दिर के भवन से निकल रहा था, तो चेलों में से एक ने उससे कहा: हे गुरु, क्या यह विशाल पत्थरों से बना एक शानदार भवन नहीं है! यीशु ने उसे उत्तर दिया, और सबने सुना: क्या तुम ये सब मन्दिर-भवन देखते हो? यहाँ पत्थर पर पत्थर भी नहीं बचेगा। नींव तक सब कुछ ढा दिया जाएगा। फिर वे किद्रोन की घाटी से होकर उस पार ऊँचे जैतून के पहाड़ पर गए। वहाँ से मन्दिर-परिसर का एक प्रभावशाली दृश्य दिखता था। तब चेलों में से चार, पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास, अकेले यीशु के पास आए और उससे पूछा: यह कब होगा कि मन्दिर नष्ट किया जाएगा? और इसका चिन्ह क्या है कि ये सब बातें होने वाली हैं?

अन्त समय की प्रसव-पीड़ाओं का आरंभ

यीशु ने उन्हें वैसा उत्तर नहीं दिया जैसा वे और हम चाहते: सावधान रहो कि कोई तुम्हें न बहकाए या भटकाए! क्योंकि बहुत-से आएँगे और दावा करेंगे कि वे मसीह हैं। और बहुत-से बहकाए जाएँगे। बहुत-से बिना सोचे-समझे उन पर भरोसा कर लेंगे। पर मेरा फिर आना अलग होगा। पर जब तुम यहाँ-वहाँ युद्धों के बारे में सुनो, तो घबराना मत। ऐसा होना ही है। और अन्त तक ऐसा ही रहेगा। जब तुम यह सब सुनो और अनुभव करो, तो यह अभी अन्त नहीं होगा। एक बिना मेल-मिलाप वाले संसार में एक जाति दूसरी जाति से लड़ेगी और एक राज्य दूसरे राज्य पर चढ़ाई करेगा। भूकम्प और अकाल होंगे। पर यह तो अन्त का आरंभ ही है। ये प्रसव-पीड़ाएँ हैं, नए संसार के जन्म की पीड़ाओं का आरंभ। सन् 70 में तीतुस (Titus) के द्वारा मन्दिर के विनाश के साथ क्लेश की एक श्रृंखला शुरू होती है, जो अन्त के दिनों में यीशु के दृश्य रूप में प्रकट होने तक चलती रहती है।

अन्त तक हर जगह सताव और क्लेश

अपने आप पर ध्यान दो! केवल इधर-उधर देखते और सुनते न रहो, बल्कि अपने आप पर ध्यान दो! वे तुम्हें, मेरे चेलो, अदालतों के हाथ सौंपेंगे। तुम्हें कोड़े लगाए और पीटा जाएगा, क्योंकि तुम मेरे गवाह हो। मेरे कारण तुम शासकों और राजाओं के सामने खड़े होगे। उनके लिए गवाही के रूप में, ताकि वे मेरे नाम के बारे में सुनें। केवल उन्हें ही नहीं, मेरे फिर आने से पहले सारी पृथ्वी की सब जातियों में शुभ संदेश का प्रचार होना ज़रूरी है। जब तुम अदालत की सुनवाई में पहुँचो, तो पहले से चिन्ता न करना कि कैसे उत्तर दोगे और अपना बचाव करोगे। उन क्षणों में परमेश्वर की ओर से जो तुम्हें दिया जाए, वही कहना। क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा है। सारी पृथ्वी पर मेरे गवाहों और चेलों के लिए कठिनाई होगी। मनुष्य अपने

भाई को धोखा देकर इस तरह मृत्यु के लिए सौंप देगा। पिता अपने बच्चों को। बच्चे अपने माता-पिता को धोखा देकर मृत्यु के हाथ सौंप देंगे। वे ऐसा इसलिए करेंगे कि इससे उन्हें लाभ मिले या वे स्वयं हानि से बचे रहें। **तुम, मेरे मित्रो, मेरे नाम के कारण सब लोगों की घृणा के पात्र बनोगे। डटे रहो! अन्त तक। जब तक मैं फिर न आऊँ। जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।**

चेलों के जीवनकाल में यरूशलेम में क्लेश

पर जब तुम उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को वहाँ खड़ी देखो जहाँ उसे नहीं होना चाहिए — पढ़ने वाला ध्यान दे! —, तब जो यहूदिया में हों, वे पहाड़ों पर भाग जाएँ; जो अपनी छत पर हो, वह अपने घर से कुछ लेने नीचे न उतरे; और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने पीछे न लौटे। गर्भवती और दूध पिलाने वाली स्त्रियों के लिए यह विशेष रूप से बुरा होगा। प्रार्थना करो कि यह जाड़े में न हो! क्योंकि वह समय सबसे बुरा होगा, उससे पहले की हर बात और उसके बाद की हर बात से बुरा। यदि प्रभु उस समय को न घटाता, तो कोई न बचता। पर अपने चुने हुओं के कारण उसने उस समय को घटा दिया है। यदि कोई तुमसे कहे: “देखो, यह रहा मसीह!” या: “वह वहाँ है मसीह!” – तो विश्वास न करना, क्योंकि झूठे मसीह और भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे और चिन्ह और चमत्कार दिखाएँगे और चुने हुओं को भटकाने की कोशिश करेंगे। **इसलिए सावधान रहो, क्योंकि मैंने सब कुछ पहले से बता दिया है।**

मनुष्य के पुत्र यीशु मसीह का प्रकट होना

संसार भर के क्लेश के बाद के दिनों में अचानक वह समय आ जाएगा। मैं फिर आऊँगा। सब मनुष्यों को दिखाई देता हुआ। ब्रह्माण्डीय और राजनीतिक उथल-पुथल के द्वारा आरंभ होकर और अचूक रूप से घोषित होकर। सूर्य अँधेरा हो जाएगा और चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा। तारे आकाश से गिरेंगे। हाँ, आकाश की शक्तियाँ हिल जाएँगी। पहले कभी न हुए ये चिन्ह महिमा में मसीहा के तुरन्त आने की घोषणा करते हैं।

तब लोग मनुष्य के पुत्र को आकाश में बादलों पर आते देखेंगे। बड़ी सामर्थ्य, अधिकार और महिमामय ज्योति के तेज के साथ। उसका प्रकट होना सब कुछ थाम देगा। उसके चेलों में अकथनीय आनन्द, बाकी सबमें घबराहट, अचम्भा और कंपकंपी। वह अपने स्वर्गदूतों को चारों दिशाओं में भेजेगा, ताकि अपनी चुनी हुई प्रजा को, अपने चेलों को, सारी पृथ्वी से इकट्ठा करे। वह उन्हें सब क्लेशों से बचाएगा। जैसे यीशु के दिनों में और उससे पहले इस्राएल मन्दिर के चारों ओर इकट्ठा होता था, वैसे ही तब, नई सृष्टि के आरंभ में, परमेश्वर की विश्वव्यापी प्रजा उस परमेश्वर-पुत्र के चारों ओर इकट्ठी होगी जो दीन किया गया और ऊँचा उठाया गया।

अंजीर का पेड़

अंजीर का पेड़ एक उपमा है: जब उसकी डालियाँ कोमल हो जाती हैं और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्मकाल निकट है। इसी तरह जब ये बातें होने लगें, तो समझ लेना कि अब अधिक देर

नहीं है। सचमुच, मैं तुमसे कहता हूँ: यह पीढ़ी, यह अभक्त मनुष्य-जाति, अन्त तक, मेरे फिर आने तक बनी रहेगी। जब तक वह सब पूरा न हो जाए जो मैंने कहा है। चुने हुओं के साथ-साथ वे बने रहेंगे और उन्हें सताएँगे और उन पर अत्याचार करेंगे। पर अंत में वे मिट जाएँगे और अंतिम रूप से उनका न्याय होगा।

आकाश और पृथ्वी नश्वर हैं, पर मेरे वचन सदा लागू रहते हैं। चाहे जो हो और यीशु और चेलों के विरोधियों की शत्रुता कितनी ही डरावनी हो, यीशु फिर आएगा और अपनी प्रतिज्ञाओं को सच करेगा।

यह कब होगा, न स्वर्ग के स्वर्गदूत जानते हैं, न पुत्र, बल्कि केवल पिता।

सदा तैयार रहो! — क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह समय कब आ जाएगा।

एक मनुष्य यात्रा पर जाता है

यह उस मनुष्य के समान है, जो यात्रा पर जाने के लिए घर छोड़ने से पहले अपने हर दास को अपना-अपना काम सौंप देता है और द्वारपाल को आज्ञा देता है कि जागता रहे। इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा — साँझ को, आधी रात को या भोर को — ताकि जब वह अचानक आए, तो तुम्हें सोते हुए न पाए। जो मैं तुमसे कहता हूँ, वही सबसे कहता हूँ: **जागते रहो**!

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, कुछ ऐसा जिसे आप अपने जीवन में करना चाहते हैं?

यीशु में आपको किस बात से उत्साह मिलता है?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए! उसके प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं? क्या कोई बात आपको स्पष्ट नहीं है? उसे लिख लीजिए!

अध्याय 14

प्रधान याजकों का षड्यंत्र और साज़िश

दो दिन बाद फसह और अख़मीरी रोटी का पर्व शुरू होने वाला था। प्रधान याजकों और शास्त्रियों का निश्चय इतना दृढ़ था कि वे बड़ी उतावली से कोई चाल ढूँढ रहे थे, जिससे उसे पकड़कर मार डालें। यीशु ने उनके पूरे अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया था। उसे हटाना ज़रूरी था। पर उन्हें ऐसा कारण चाहिए था जिसे जनता भी मान ले। क्योंकि जनता उसका आदर करती थी। यह जितनी जल्दी हो सके होना था, ताकि पर्व के दौरान न हो, क्योंकि तब जनता में दंगा हो जाता।

बैतनिय्याह में यीशु का अभिषेक

यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के यहाँ अतिथि था। वह उनमें से एक था जिन्हें यीशु ने चंगा किया था। भोजन के समय एक स्त्री साहस करके भीतर आई, जिसके हाथ में शुद्ध, बहुमूल्य जटामासी के इत्र की संगमरमर की एक छोटी शीशी थी। उसने शीशी की गर्दन तोड़ी और इत्र यीशु के सिर पर उण्डेल दिया। वहाँ उपस्थित सबके लिए यह एक अजीब स्थिति थी। इस स्त्री ने यीशु के प्रति अपने आदर को एक अनोखे ढंग से प्रकट किया। वह उनके बिलकुल विपरीत है जो उसे मार डालने की योजना बना रहे थे। भोजन पर बैठे लोगों में एक श्रद्धा भरा सन्नाटा छा गया था। यीशु ने यह सब होने दिया, मानो यह पहले से तय हो। पर फिर चेले भड़क उठे। यह बर्बादी किसलिए?, उन्होंने आपस में कहा। यह बहुमूल्य इत्र 300 दीनार से अधिक में बेचकर पैसा गरीबों को दिया जा सकता था। 300 दीनार एक मज़दूर की लगभग एक वर्ष की मज़दूरी के बराबर थे। और वे उस स्त्री को बहुत डाँटने लगे। पर यीशु ने कहा: उसे छोड़ दो! तुम उसे क्यों परेशान करते हो? उसने मेरे साथ भलाई की है। गरीब तुम्हारे साथ सदा रहेंगे, और जब भी तुम चाहो, उनका भला कर सकते हो। सचमुच ऐसा करो भी! **पर मैं अब अधिक समय तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। जो वह कर सकती थी, उसने किया, और मेरे शरीर का गाड़े जाने के लिए पहले से अभिषेक किया है।** और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ: सारे संसार में जहाँ कहीं शुभ संदेश सुनाया जाएगा, वहाँ उसकी भी चर्चा होगी जो इस स्त्री ने किया है। शुभ संदेश के विश्वव्यापी प्रचार में यीशु के साथ की सब शिक्षाएँ और अनुभव शामिल होने थे, इसी तरह यह घटना भी, जिसे यीशु विशेष और स्थायी महत्व देता है।

जो किसी ने नहीं समझा: यीशु ही वह गरीब था जिसके पास कुछ नहीं था। और साथ ही एक दुःख उठाने वाला, जिसे हिंसक मृत्यु मरना था। उस स्त्री का यह भला काम यीशु को भाता है और उसे आनन्द देता है। जो इतना व्यर्थ और फ़िज़ूलख़र्ची लगता था, वह भले कामों का एक अचूक निशाना है। क्योंकि सचमुच मरे हुए यीशु का अभिषेक करने का समय न मिलने वाला था और वह असंभव होने वाला था। उसने उसे ठोस

रूप में पहले ही कर दिया था। और चेलों के विपरीत, उसने उसकी मृत्यु का पहले से आभास पा लिया था और उसका मूल्य समझा था।

यहूदा विश्वासघाती बनता है

इसके बाद बारहों में से एक, यहूदा सिकारी (Sicarius), प्रधान याजकों के पास गया और उन्हें प्रस्ताव दिया कि वह यीशु को उनके हाथ पकड़वा देगा। वे बहुत प्रसन्न हुए। इससे अच्छे अवसर की वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे। उन्होंने इसके लिए उसे पैसे देने का वचन दिया। तब से वह किसी अच्छे अवसर की खोज में रहा कि यीशु को पकड़वाए और उसके ठहरने का स्थान बता दे।

फसह के भोज की तैयारी

पर्व-सप्ताह का पहला दिन आया, जिसमें केवल अख़मीरी रोटी खाई जाती है। वह दिन, जिसमें फसह के मेम्ने बलि किए जाते हैं। इन्हें यरूशलेम की शहरपनाह के भीतर ही खाना होता था।

फसह का पर्व हर वर्ष मिस्र से इस्राएल प्रजा के छुटकारे की याद दिलाता है। मूसा अगुवे के रूप में और फसह का मेम्ना, जिसका लहू द्वार के बाज़ुओं पर लगाया गया था। इस तरह इस्राएल न्याय से बच गया। यह कहानी यीशु के दिनों में एक ऊँचे और साथ ही गहरे ढंग से दोहराई जाती है। यीशु मूसा की तरह चमत्कार करता है, स्वयं फसह का मेम्ना है, जिसका प्राण बहुतों के लिए छुड़ौती के रूप में दिया जाता है। अब बात एक बड़े न्याय से बचाए जाने की है। अब वह क्षण आ गया है, जब यीशु लाक्षणिक अर्थ में मूसा की तरह लाल समुद्र के सामने खड़ा है और ऐसी चीज़ से भिड़ता है जिससे अधिक भयानक कुछ हो ही नहीं सकता।

तब चेलों ने यीशु से पूछा: हम आपके लिए फसह का भोज कहाँ तैयार करें? यीशु ने उनमें से दो को यह काम देकर भेजा: नगर में जाओ! वहाँ तुम्हें एक मनुष्य मिलेगा जो पानी का घड़ा उठाए हुए होगा। उसके पीछे चलो, जब तक वह एक घर में न जाए, और वहाँ घर के स्वामी से कहो: हमारे गुरु पुछवाते हैं: तुम मुझे कौन-सा कमरा दे सकते हो, कि मैं वहाँ अपने चेलों के साथ फसह का भोज मनाऊँ? तब वह तुम्हें ऊपर की मंज़िल पर एक बड़ा कमरा दिखाएगा, जो गद्दियों से सजा है और उत्सव के लिए तैयार है। वहाँ हमारे लिए सब कुछ तैयार करो। वे दोनों नगर में गए। उन्होंने सब कुछ वैसा ही पाया जैसा यीशु ने उनसे कहा था, और फसह का भोज तैयार किया। ये तैयारियाँ इस तरह इसलिए करनी पड़ीं, क्योंकि हत्या की योजनाओं और अपने ही लोगों में एक विश्वासघाती के कारण यीशु को अपने चेलों के साथ छिपकर रहना था।

फसह का भोज – विश्वासघाती भी साथ है

जब साँझ हुई, तो यीशु बारहों के साथ वहाँ आया। भोजन के समय उसने कहा: मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ: तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा – एक, जो अभी मेरे साथ खा रहा है। वे घबरा गए, और एक-एक करके उससे पूछने लगे: आपका मतलब मुझसे तो नहीं है? यीशु ने उत्तर दिया: तुम बारहों में से एक यह करेगा; एक, जो मेरे साथ एक ही कटोरे में अपनी रोटी डुबोता है। मनुष्य के पुत्र को तो मरना ही है, जैसा उसके

विषय में लिखा है। पर हाय उस मनुष्य पर, जो मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है! उसके लिए भला होता कि वह कभी पैदा ही न होता!

प्रभु-भोज की स्थापना

अब यीशु अपने अनुयायियों के लिए एक नया भोज स्थापित करता है, जो स्वयं उसके द्वारा **नई वाचा** का उत्सव मनाता है। और साथ ही पुराने फसह के भोज को, जो पुरानी वाचा की अभिव्यक्ति था, सदा के लिए पीछे छोड़ देता है। भोजन के समय यीशु ने एक रोटी ली, उस पर आशीष की प्रार्थना की, उसे टुकड़ों में तोड़ा और यह कहते हुए उन्हें दी: **लो, यह मेरी देह है!** फिर उसने कटोरा लिया, उस पर धन्यवाद की प्रार्थना की, वह भी उन्हें दिया, और सबने उसमें से पिया। इसके साथ उसने उनसे कहा: **यह मेरा लहू है, जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। यह नई वाचा का लहू है।** मैं तुमसे कहता हूँ: मैं दाखरस तब तक फिर नहीं पिऊँगा, जब तक उस दिन उसे नया न पिऊँ, जब परमेश्वर का राजकीय शासन आरंभ हो चुका होगा। सरदारों और जातियों के हाथों मेरा मरना मेरा अन्त नहीं है। मैं जीवित रहूँगा! परमेश्वर का राज्य आ रहा है! फिर उन्होंने, जैसा फसह के पर्व पर रीति थी, हल्लेल के भजन 115–118 गाए और बाहर जैतून के पहाड़ पर चले गए।

यीशु “बड़े मूसा” के रूप में बारहों के आगे-आगे चलता है। वह इस्राएल के आगे चलता है, हाँ, सारे संसार के आगे चलता है। ऐसे दास-स्वामी का सामना करने के लिए जो पुराने मिस्री फ़िरौन से बड़ा है। वह एक ऐसी आँधी और ऐसे भय में जाता है जो उस समय लाल समुद्र पर के भय से बड़ा है। ताकि संसार को स्वतंत्रता में ले जाए। **प्रभु का भोज, रोटी तोड़ना, एक भोजन में यह याद करने का अद्वितीय और गहरा, इन्द्रियों से अनुभव किया जाने वाला ढंग है कि यीशु ने उनके लिए क्या सहा और क्या जीतकर प्राप्त किया। सारे संसार के लिए।**

क्रूस पर मृत्यु के लिए उसका स्वेच्छा से अपने आप को दे देना ही सच्चा और बड़ा फसह का मेम्ना है, जिसका लहू सदा के लिए छुटकारा देता है, पापों से शुद्ध करता है और पवित्र करता है। और एक अनन्त वाचा की नींव डालता है। आज का प्रभु-भोज भोज के प्रतीकों में यीशु का लगातार, नया बलिदान नहीं है। रोटी और दाखरस प्रतीक हैं। वे लाक्षणिक अर्थ में स्मरण के सहारे के रूप में और साथ ही घोषणा के रूप में यीशु के उस उद्धार के काम की बात करते हैं, जो उसकी अक्षरशः देह के बलिदान में हुआ। मसीह की आत्मिक-अदृश्य पर उतनी ही वास्तविक उपस्थिति हर उस जगह निश्चित है जहाँ यह स्मरण-भोज मनाया जाता है। पर वह उतनी ही वहाँ और उनके साथ भी है जो उसके पास इकट्ठे होते हैं, यह भोज मनाए बिना भी।

पतरस यीशु का इनकार करेगा

तुम सब मुझे छोड़ दोगे, यीशु ने उनसे कहा, क्योंकि भविष्यद्वक्ता जकर्याह अध्याय 13 पद 7 में लिखा है: मैं चरवाहे को मारूँगा, और भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी। पर अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे अच्छे चरवाहे

के रूप में तुमसे पहले गलील जाऊँगा। वहाँ हम मिलेंगे। तब पतरस ने उससे कहा: चाहे सब आपको छोड़ दें – मैं कभी नहीं! मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ, यीशु ने उत्तर दिया, तुम आज ही रात, मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले, तीन बार मेरा इनकार करोगे। नहीं!, पतरस ने पूरी दृढ़ता से उत्तर दिया। चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े! मैं कभी आपका इनकार नहीं करूँगा! बाकी सबने भी यही बात ज़ोर देकर कही। अपने बारे में उनका यह आकलन हवा हो जाएगा, जब थोड़ी ही देर में मृत्यु का ख़तरा सामने होगा। मरकुस रोम की सताई जा रही कलीसिया को दुःखों में दृढ़ बने रहने के लिए उत्साहित करता है। और हर एक को उत्साहित करता है कि अपनी शक्ति और अपना साहस अपने आप में न खोजे।

गतसमनी – प्रार्थना में यीशु का जीवन-मरण का संघर्ष

वे जैतून के एक बाग़ में आए, जिसका नाम गतसमनी था। इस नाम का अर्थ है तेल का कोल्हू। यह जैतून के पहाड़ की तलहटी में था। यीशु ने बारहों से कहा: जब तक मैं प्रार्थना करूँ, तुम यहाँ बैठे रहो! पतरस, याकूब और यूहन्ना को वह अपने साथ ले गया। अत्यन्त भय और घबराहट ने उसे घेर लिया, और उसने उनसे कहा: जो मुझ पर आने वाला है, उसके कारण मैं बहुत व्याकुल हूँ। मेरा प्राण मृत्यु की-सी पीड़ा में है। यहाँ मेरे पास ठहरो और जागते रहो! मेरे साथ! फिर वह थोड़ा आगे गया और भूमि पर गिर पड़ा। उसने भय से भरी आवाज़ में परमेश्वर से प्रार्थना की कि यदि संभव हो, तो यह भारी घड़ी उससे टल जाए। हे अब्बा, हे पिता, उसने कहा, तेरे लिए सब कुछ संभव है! मुझे यह कटोरा पीने से बचा ले! दुःख का यह कटोरा मुझसे हटा ले। पर वही हो जो तू चाहता है, वह नहीं जो मैं चाहता हूँ।

दुःख के इस कटोरे का अर्थ था पापियों के हाथों में पड़ना, उनके और अन्धकार की शक्तियों के हाथ असहाय होकर सौंप दिया जाना। बहुतों के पापों को उठाना। और अंत में मृत्यु से, उस बड़े शत्रु से, हार जाना। यह दीनता पिता की उद्धार की इच्छा का भाग थी। न्याय की इस घड़ी में प्रवेश करने और उसे सहने के सिवाय उद्धार का कोई और रास्ता नहीं हो सकता था। उसकी क्रूर क्रूस-मृत्यु के द्वारा सबके लिए उद्धार लड़कर प्राप्त किया जाना था। पाप, मृत्यु और शैतान से छुटकारा, जिनके हाथ यीशु सब परिणामों के साथ अपने आप को सौंप देता है। इस घड़ी में यह सब चेलों से छिपा है। वे नहीं समझते कि यहाँ क्या हो रहा है। हम भी इस अविश्वसनीय दृश्य को भय के साथ देखते हैं और हमारे पास शब्द नहीं कि इसका थोड़ा-सा भी उचित मूल्य आँक सकें और इसकी गहराई को समझ सकें। फिर वह चेलों के पास लौटा और देखा कि वे सो गए थे। तब उसने पतरस से कहा: हे शमौन, तुम सो रहे हो? क्या तुम एक घड़ी भी नहीं जाग सके? क्या तुम मेरे लिए अपना प्राण भी नहीं देना चाहते थे? फिर उसने उन सबसे कहा: जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, ताकि आने वाली परीक्षा में तुम दृढ़ रहो। तुममें आत्मा तो तैयार है, पर तुम्हारा मानवीय स्वभाव दुर्बल है। उस पर तुम भरोसा नहीं कर सकते। दूसरी बार यीशु चला गया और पहले जैसे शब्दों में प्रार्थना की। जब वह लौटा, तो वे फिर सो रहे थे। उनकी आँखें भारी हो गई थीं। और वे नहीं जानते थे कि उसे क्या उत्तर दें। जब यीशु तीसरी बार लौटा, तो उसने उनसे कहा: क्या तुम अब भी सो रहे

हो और आराम कर रहे हो? बस अब, घड़ी आ पहुँची है! अब मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के, पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। उठो, चलें; मुझे पकड़वाने वाला आ पहुँचा है।

पुत्र की अपने अब्बा से तीन प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं मिला। कटोरा हटाया नहीं गया। आज्ञाकारी होकर यीशु अपने आप को आने वाली घटनाओं को सौंप देता है। यहाँ से शुरू होने वाले दुःखभोग को – यीशु गतसमनी में पकड़ा जाता है – पुत्र अकेले सहता है, वह सब जो उसके साथ किया जाता है और अन्धकार की शक्ति का जो अर्थ है। फिर भी उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलता है। पर तभी, जब कटोरा ख़ाली हो जाता है। सबसे बाद में पुनरुत्थान में उसकी गिड़गिड़ाती पुकार का उत्तर मिल जाता है। यीशु सब दुःखों को सदा के लिए पीछे छोड़ देता है।

यीशु पकड़ा जाता है

उसने यह कहा ही था कि यहूदा, बारह चेलों में से एक, हथियारबंद लोगों की एक बड़ी टोली के साथ आ पहुँचा। वे तलवारें और लाठियाँ लिए हुए थे और प्रधान याजकों, व्यवस्था के शिक्षकों और पुरनियों के भेजे हुए थे। पकड़वाने वाले ने उनके साथ एक संकेत तय किया था: जिसे मैं अभिवादन में चूमूँ, वही है। उसे पकड़ लेना और कड़े पहरे में ले जाना। तो यहूदा सीधे यीशु के पास गया। हे रब्बी!, उसने पुकारा और उसे चूमा। तब उन्होंने उसे पकड़ लिया और बन्दी बना लिया। कायरता भरी धूर्तता से वे रात को आते हैं, जितना हो सके चुपके से। यहूदा का व्यंग्य भरा प्रेम-प्रदर्शन मनुष्य के अन्धकार की एक खाई में झाँकने देता है। **वह छुटकारा न पाई हुई मानवजाति के खोए हुए और अन्धकारमय मन का प्रतिनिधि है।** जो पुरुष यीशु के साथ थे, उनमें से एक ने तलवार खींची। उसने महायाजक के दास पर वार किया और उसका एक कान उड़ा दिया। यह यीशु को अच्छा नहीं लग सकता था, जो बिना हिंसा और बिना विरोध के पिता का कटोरा ग्रहण करता है। यही अहिंसा प्रकट करती है कि परमेश्वर वास्तव में कैसा है। अद्वितीय दीनता में यीशु परमेश्वर का बढ़ाया हुआ हाथ है। न्याय के लिए नहीं, बल्कि उद्धार के लिए। यीशु ने उन पुरुषों से कहा: क्या मैं कोई अपराधी हूँ कि तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे पकड़ने निकले हो? मैं तो प्रतिदिन मन्दिर में तुम्हारे बीच था और वहाँ शिक्षा देता था। तब तुमने मुझे नहीं पकड़ा। पर जो पवित्रशास्त्र ने मेरे विषय में पहले से कहा है, उसका पूरा होना ज़रूरी है। **तब उसके सब चेले उसे छोड़कर भाग गए।** एक जवान यीशु के पीछे-पीछे चला। उसने अपने शरीर पर केवल एक मलमल की चादर ओढ़ी हुई थी, और जब लोगों ने उसे पकड़ा, तो वह चादर छोड़कर नंगा भाग निकला। यह अनुमान किया जाता है कि यहाँ लेखक मरकुस अपना ही वर्णन कर रहा है।

यहूदी महासभा के सामने यीशु – उस पर दण्ड की आज्ञा

वे यीशु को महायाजक के पास ले गए। वहाँ सब प्रमुख याजक और सब पुरनिए और व्यवस्था के शिक्षक इकट्ठे हुए। पतरस बहुत दूरी पर यीशु के पीछे-पीछे चला। पहले वाली निकटता अब नहीं रही। वह महल के भीतरी आँगन तक आ गया। वहाँ वह सेवकों के साथ बैठकर आग ताप रहा था। प्रमुख याजकों और सारी

महासभा ने गवाहों के बयानों के द्वारा यीशु पर दोष लगाने की कोशिश की, ताकि उसे पहले से मृत्यु-दण्ड के योग्य ठहरा सकें; पर वे सफल न हुए। बहुत-से झूठे गवाहों ने यीशु के विरुद्ध बयान तो दिए, पर उनके बयान आपस में मेल नहीं खाते थे। फिर कुछ लोगों ने खड़े होकर दावा किया: हमने उसे यह कहते सुना है: मैं इस मन्दिर को, जो मनुष्यों का बनाया हुआ है, ढा दूँगा और तीन दिन में दूसरा बनाऊँगा, जो मनुष्यों का बनाया हुआ नहीं होगा। पर उनके बयान भी एक-दूसरे से मेल नहीं खाते थे। तब महायाजक स्वयं खड़ा हुआ, क्योंकि उसे डर था कि कोई ठोस आरोप नहीं मिल पाएगा जिसका जनता भी समर्थन कर सके। वह बीच में आया और यीशु से पूछा: ये तेरे विरुद्ध जो कह रहे हैं, क्या तुझे उसके बारे में कुछ नहीं कहना? पर यीशु चुप रहा और दुःख उठाने वाले सेवक के रूप में एक शब्द भी नहीं बोला। इस पर महायाजक ने उससे सीधे पूछा: **क्या तू मसीह है, प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्ता, परम धन्य का पुत्र?** यीशु के कुछ वचनों से, जो उसने खुले में कहे थे और जो शायद यरूशलेम तक पहुँच गए थे, और जो उसने पिछले दिनों में यरूशलेम में खुले रूप से कहा था, उससे यह प्रश्न उठा था। और यह प्रश्न सब कुछ दाँव पर लगाने वाला था। और अब बम फटना था। **मैं हूँ, यीशु ने कहा, और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे!** तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़े और कहा: अब हमें गवाहों की क्या ज़रूरत? तुमने स्वयं सुना कि उसने परमेश्वर की निन्दा कैसे की है। वह अपने आप को ईश्वरीय सम्मान तक ऊँचा उठाता है और इस तरह परमेश्वर का सम्मान छीन लेता है। यीशु केवल मसीहा होने का दावा नहीं करता, बल्कि पुत्र के रूप में परमेश्वर के बराबर होने का। तुम्हारा क्या निर्णय है? उन्होंने एक स्वर से घोषित किया कि वह मृत्यु के योग्य है। मूसा की व्यवस्था के अनुसार परमेश्वर की निन्दा का दण्ड मृत्यु था। कुछ लोग यीशु पर थूकने लगे। उन्होंने उसके सिर पर एक कपड़ा डाल दिया, ताकि वह कुछ देख न सके; फिर उन्होंने उसे घूँसे मारे और कहा: बता, किसने मारा? तू तो भविष्यद्वक्ता है! फिर अदालत के प्यादों ने उसे ले लिया और थप्पड़ मारे। सब उपस्थित लोग, सरदारों से लेकर नौकरों और साथ बहने वालों तक, उसके मसीहा होने के दावे और उसके परमेश्वर का पुत्र होने पर विश्वास नहीं करते। सबके लिए वह केवल एक परमेश्वर-निन्दक है। पर क्योंकि वह एक लोकप्रिय व्यक्ति है, वे मृत्यु-दण्ड को स्वयं लागू नहीं कर सकते और न उन्हें ऐसा करने की अनुमति है। उन्हें विवश होकर रोमी हाकिम पिलातुस के पास जाना पड़ा।

पतरस अपने गुरु का इनकार करता है

पतरस अभी नीचे आँगन में था। महायाजक की एक दासी पास से गुज़री। जब उसने पतरस को आग के पास देखा, तो उसे ध्यान से देखकर कहा: तू भी तो उस नासरत के यीशु के साथ था! पतरस मुकर गया: मुझे कुछ पता नहीं; मैं बिलकुल नहीं जानता कि तू किस बारे में बात कर रही है! फिर वह बाहर ड्योढ़ी में चला गया। उसी क्षण एक मुर्गे ने बाँग दी। दासी ने पतरस को वहाँ फिर देखा और आस-पास खड़े लोगों से कहा: यह भी उन्हीं में से है! पर वह फिर मुकर गया। थोड़ी देर बाद आस-पास खड़े लोग फिर कहने लगे: तू निश्चय उन्हीं में से है, तू भी तो गलील का है, जहाँ से वह नासरी आता है! तेरी बोली साफ़ बता रही है! अब

पतरस शपथ तक खा बैठा: यदि मैं झूठ बोलूँ, तो परमेश्वर मुझे दण्ड दे! जिस मनुष्य की तुम बात कर रहे हो, मैं उसे नहीं जानता। उसी क्षण मुर्गे ने दूसरी बार बाँग दी, और पतरस को याद आया कि यीशु ने उससे कहा था: मुर्गे के दो बार बाँग देने से पहले तुम तीन बार मेरा इनकार करोगे और कहोगे कि तुम मुझे नहीं जानते। तब वह रोने लगा। वह लज्जित था कि उसकी विश्वासयोग्यता की सारी शपथ कितनी जल्दी मिट्टी में मिल गई थी। जैसे उसके साथ, वैसे ही यह किसी भी मसीही के साथ हो सकता है!

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, कुछ ऐसा जिसे आप अपने जीवन में करना चाहते हैं?

यीशु में आपको किस बात से उत्साह मिलता है?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए! उसके प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त कीजिए!

अध्याय 15

रोमी हाकिम पिलातुस के सामने यीशु – जल्दबाज़ी का मुकद्दमा

शुक्रवार की भोर को प्रधान याजकों, शास्त्रियों और पुरनियों ने, हाँ, सारी यहूदी महासभा ने, सन्हेड्रिन (Synedrium) ने, आपस में सलाह की। उन्होंने यीशु को रोमी हाकिम पुन्तियुस पिलातुस के हाथ सौंपने का निर्णय किया। क्योंकि वे स्वयं न मृत्यु-दण्ड सुना सकते थे और न उसे लागू कर सकते थे। हाँ, वे 100 % निश्चित नहीं हो सकते थे कि पिलातुस उनके निर्णय को मानेगा या नहीं। तो उन्होंने यीशु को बाँधा और बँधे हुए ही उसे एस्सेनी मुहल्ले में महायाजक के घर से पिलातुस के पास ले गए। उसे उन्होंने यीशु इस आशा में सौंप दिया कि वह उसे जल्दी मृत्यु-दण्ड दे देगा। पिलातुस का निवास साधारणतः कैसरिया में था। पर पर्व के समय वह सुरक्षा की राजनीति के कारणों से यरूशलेम में रहता था। अपने सैनिकों के साथ वह शायद हेरोदेस के महल में ठहरता था। पिलातुस ने यीशु से सीधे पूछा: **क्या तू यहूदियों का राजा है?** तू आप ही कह रहा है, यीशु ने उत्तर दिया। यीशु का यह हाँ भरा उत्तर पिलातुस को यह सोचने का कारण देता है कि क्या यह राजनीतिक स्थिति के लिए कोई ख़तरा हो सकता है। पर प्रधान याजक उस पर बहुत-सी बातों का दोष लगाने लगे। पिलातुस को अचम्भा हुआ कि यीशु ने उनके किसी भी आरोप का उत्तर नहीं दिया। तो उसने उससे पूछा: क्या तू उत्तर नहीं देता? क्या तू अपना बचाव नहीं करता? देख, वे तुझ पर कितनी बातों का दोष लगा रहे हैं! पर यीशु ने कुछ भी नहीं कहा, जिससे पिलातुस बहुत चकित हुआ। यीशु अपने आप को दुःख उठाने वाले सेवक की उस भूमिका में सौंप देता है जो पिता के प्रति आज्ञाकारी है। उसकी चुप्पी और उसका निष्क्रिय रहना संकेत देते हैं कि इतिहास का प्रभु, स्वयं परमेश्वर, एक रहस्यमय योजना पर चल रहा है, जिसके अधीन पुत्र सबसे बड़े विरोध और दुःख के बावजूद अपने आप को कर देता है।

बरअब्बा छूट जाता है – यीशु को मृत्यु-दण्ड दिया जाता है

यह एक रीति थी कि फसह के पर्व पर रोमियों का एक बन्दी छोड़ दिया जाता था। और वही, जिसे यहूदी चाहते थे। वहाँ बरअब्बा नाम का एक व्यक्ति था, जिसने एक बलवे में एक मनुष्य की हत्या की थी। अब यहूदियों के उन सरदारों के भड़काने पर, जो यीशु को नष्ट करना चाहते थे, भीड़ पिलातुस के पास आई। वह अपनी पसंद के एक बन्दी को छुड़वाने के अपने अधिकार पर अड़ी रही। पिलातुस ने यीशु को, जो उसकी दृष्टि में निर्दोष था, छोड़ देने का अवसर देखा। तो उसने पूछा: क्या मैं तुम्हारे लिए यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ? यह एक व्यंग्य भरी टिप्पणी थी। क्या वह भीड़ का मन बदलना चाहता था? उसे स्पष्ट था कि प्रधान याजकों ने यीशु को डाह के कारण उसके हाथ सौंपा था। इन्होंने ही लोगों को भड़काया था कि हत्यारे बरअब्बा की रिहाई माँगें। पिलातुस ने हार नहीं मानी और लोगों से कहा: तो जिसे तुम यहूदियों का राजा

कहते हो, उसका मैं क्या करूँ? पर लोग पागलों की तरह चिल्लाए: **उसे क्रूस पर चढ़ाओ!** पिलातुस ने पूछा: उसका अपराध क्या है? उसने क्या बुराई की है? अब वे और भी ज़ोर से चिल्लाए: **क्रूस पर चढ़ाओ!** पिलातुस हर वर्ष की तरह लोगों को प्रसन्न करना चाहता था और उसने हत्यारे बरअब्बा को छोड़ दिया, जो अपने इस संयोग से मिले सौभाग्य पर विश्वास ही नहीं कर पा रहा था। यहूदियों के प्रति अपने कुछ असंवेदनशील व्यवहारों के कारण पिलातुस पर एक तरह का दबाव था। अब यहूदियों की इच्छा न मानना उसके लिए बहुत ही प्रतिकूल होता। अपनी सत्ता की कुर्सी बचाने के लिए वह एक सिकारी (Sicarius) के, एक आतंकवादी के, जो रोम का शत्रु है, बदले उस निर्दोष नासरी की बलि चढ़ा देता है। यीशु को उसने उनकी इच्छा पर छोड़ दिया और उसे कोड़े लगवाए और उसे क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दी। अंततः क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए पिलातुस ज़िम्मेदार है। पर उसके साथ वे सब यहूदी भी, जिन्होंने अपने मसीहा को नहीं पहचाना या पहचानना नहीं चाहा।

रोमी सैनिकों का ठट्ठा और क्रूरता

सैनिक यीशु को महल के भीतरी आँगन में ले गए। सैनिकों की सारी पलटन बुला ली गई, ताकि क्रूस पर चढ़ाने के समय सुरक्षा और शान्ति बनी रहे। मृत्यु-दण्ड देने वाली टुकड़ी के सैनिक यह प्रक्रिया जानते थे और उन्होंने इसे एक तमाशा बना दिया। उन्होंने यीशु को लाल चोगा पहनाया और उसके सिर पर काँटों का मुकुट रख दिया। फिर उन्होंने घायल और लहूलुहान यीशु को व्यंग्य से नमस्कार किया: हे यहूदियों के राजा, नमस्कार! उन्होंने एक सरकण्डे से उसके सिर पर मारा, ताकि काँटों का मुकुट उसके सिर की खाल में धँस जाए। उन्होंने उस पर थूका और ठट्ठे में उसके सामने घुटने टेके, मानो उसे दण्डवत् कर रहे हों। जब वे इस अकल्पनीय रूप से अन्यायपूर्ण तमाशे को कर चुके, तो उन्होंने उसे फिर उसके कपड़े पहनाए, ताकि क्रूस पर चढ़ाने के स्थान की ओर चल पड़ें।

क्रूस पर चढ़ाने के स्थान की ओर

फिर वे दण्ड पाए हुए नासरत के यीशु को बाहर ले जाते हैं, ताकि उसे क्रूस पर चढ़ाएँ। लकड़ी दण्ड पाने वाले को स्वयं उठानी होती है। पर वह बहुत दुर्बल है और सैनिकों की दृष्टि में यह जोखिम बहुत बड़ा है कि वह पहले ही मर जाए। चमड़े के उन कोड़ों की मार ने, जिनमें हड्डियों के नुकीले टुकड़े लगे होते हैं, यीशु की पीठ चीर डाली है और भारी रक्तस्राव और भयानक पीड़ा पहले ही दे दी है। इसलिए वे संयोग से पास से गुज़रते हुए कुरेनी शमौन को उसका क्रूस उठाने के लिए विवश करते हैं। वह, सिकन्दर और रूफुस का पिता, अभी-अभी खेत से आ रहा था।

गुलगुता – यीशु क्रूस पर चढ़ाया जाता है

वे उसे यरूशलेम के फाटकों के बाहर मृत्यु-दण्ड के स्थान पर लाते हैं। एक जगह, जिसका नाम गुलगुता है, जिसका अनुवाद है खोपड़ी का स्थान। सैनिकों ने उसे गन्धरस मिला दाखरस पीने को दिया, ताकि उसकी

पीड़ा कुछ सुन्न हो जाए। पर उसने उसे नहीं लिया। उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया। उसके हाथों को आड़ी लकड़ी पर कीलों से ठोकते हैं और क्रूस को खड़ा करते हैं। यह 9 और 12 बजे के बीच हुआ। उसके वस्त्र पर जल्लादों ने चिट्ठियाँ डालीं कि वह किसे मिले। दण्ड पाए हुओं की सम्पत्ति सैनिकों की होती थी। उसके मृत्यु-दण्ड का आरोप क्रूस के ऊपर एक पट्टी पर लिखा था: **यीशु, यहूदियों का राजा।** यह पिलातुस का लगाया हुआ आरोप था, जिसने उसे एक संभावित विद्रोही ठहराया। साथ ही यह यहूदियों के लिए एक तीखा व्यंग्य था। क्योंकि यह एक सच्ची बात थी, जिसे सरदारों को सहना पड़ा, यद्यपि वे इसे रोकना चाहते थे। उसी समय दो हथियारबंद स्वतंत्रता-सेनानी, बरअब्बा के साथी, यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए। एक उसके बाएँ और दूसरा उसके दाहिने। रोमियों के लिए क्रूस पर चढ़ाना डराने का एक नियमित साधन था। मृत्यु-दण्ड देने का यह तरीका केवल मृत्यु-दण्ड लागू करने के लिए नहीं था। बात विनाश और डराने की थी। बाहरी दृष्टि से यीशु रोमियों की डराने की नीति के बहुत-से शिकारों में से एक था। यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना कोई अनोखी बात नहीं थी। जो लोग क्रूस के पास से गुज़रते, वे सिर हिलाकर उसकी निन्दा करते थे: वाह, तू तो मन्दिर को ढाकर तीन दिन में फिर बनाना चाहता था? यदि तू ऐसा कर सकता है, तो अब क्रूस से उतर आ और अपने आप को छुड़ा ले। इसी तरह प्रधान याजक और शास्त्री भी, जो आख़िरकार अपने लक्ष्य तक पहुँच गए थे, ठट्ठा करते थे: इसने दूसरों को बचाया और चंगा किया और स्वस्थ किया, पर अपने आप को नहीं बचा सकता। यदि यह प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह है, इस्राएल का राजा, तो अब क्रूस से नीचे उतर आए, ताकि हम विश्वास करें!

यदि यीशु अब क्रूस से उतर आता, जो उसके लिए निश्चय संभव था, तो वह अपने आप को एक झूठा मसीहा सिद्ध कर देता। क्योंकि केवल क्रूस से होकर ही सच्चा मसीहा, वास्तविक मसीह होना संभव था। सरदारों का ठट्ठा और क्रूस से उतर आने के उनके शब्द यीशु के लिए एक बड़ी परीक्षा थे। ठीक इसलिए कि यह उसके लिए संभव था और वह सबको दिखा सकता था कि उसके पास अधिकार है। पर उनके लिए भी और सबके लिए वह मरने तक उस लकड़ी पर बना रहा। उसके साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दोनों अपराधी भी उसकी निन्दा करते थे। वे उसकी निन्दा करते थे, क्योंकि वह कोई विरोध नहीं करता और निष्क्रिय रहता है। इसके विपरीत वे शाप देते और कोसते हैं। दुःख, और सताव भी, परमेश्वर की शक्तिहीनता के कारण नहीं हैं। पर इसी तरह, और किसी तरह नहीं, परमेश्वर अपनी सामर्थ्य और महिमा फैलाता है – दीनता, दुःख और सताव के द्वारा। इसमें दिखाई देता है कि परमेश्वर कैसा है। उन मनुष्यों से भिन्न, जो उसके विपरीत सत्ता खोजते हैं, हिंसा करते हैं और छोटों का शोषण करते हैं। यीशु की दीनता में परमेश्वर अपना हृदय प्रकट करता है!

यीशु मरता है

लगभग दोपहर 12.00 बजे से लेकर तीसरे पहर 15.00 बजे तक सारे देश पर, हाँ, सारे संसार पर घना अन्धकार छा गया। इस प्रमाणित प्राकृतिक घटना को लोग ऐसे अनुभव करते हैं मानो ब्रह्माण्ड बिखर रहा हो। सूर्यग्रहण नहीं, बल्कि ऐसा अन्धकार जो पुकार-पुकारकर कहता है कि कुछ अद्वितीय, कभी न हुआ घट

रहा है, और ऐसा फिर कभी नहीं होगा। जैसे कभी मिस्र में अन्धकार के समय, जब परमेश्वर के न्याय से पहिलौठे मरे। यहाँ परमेश्वर का पहिलौठा मरता है और बहुतों के स्थान पर न्याय को अपने ऊपर ले लेता है। एक प्रलय-जैसा वातावरण। यीशु मृत्यु की पीड़ा में, परमेश्वर और मनुष्यों से त्यागा हुआ, बाहर धकेला हुआ, तुच्छ समझा हुआ, सताया हुआ, क्रूस पर चढ़ाया हुआ। उसका सामना अन्धकार की शक्ति से होता है। वह संसार के पाप के लिए बलिदान बनता है। वही वह बोझ उठाता है जिसे हम कभी नहीं उठा सकते। अन्धकार के अन्त के निकट, लगभग 15.00 बजे, यीशु ने ऊँचे शब्द से पुकारा: इलोई, इलोई, लमा शबक्तनी! अरामी भाषा से अनुवाद करें, तो ये भजन संहिता 22 के आरंभ के शब्द हैं: **हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?** जब कुछ लोगों ने उसे पुकारते सुना, तो उन्होंने कहा: यह एलिय्याह को पुकार रहा है। फिर एक व्यक्ति दौड़ा और सिरके से भरा एक स्पंज लाया, उसे एक सरकण्डे पर रखा, ताकि उसके होठों तक लगाए। साथ ही उसने कहा: देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है या नहीं। यीशु ने ऊँचे शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए। उसी क्षण मन्दिर का वह परदा, जो पवित्रस्थान को परमपवित्र स्थान से अलग करता था, ऊपर से नीचे तक फट गया। मन्दिर का महत्व और उसकी आवश्यकता स्वयं परमेश्वर के हाथ से सदा के लिए निष्फल कर दी जाती है। क्रूस पर कुछ नया और बेहतर आरंभ हो गया है!

रोमी सूबेदार और यीशु की शिष्याएँ

रोमी सूबेदार, जो क्रूस पर चढ़ाने के काम के लिए ज़िम्मेदार था और क्रूस के सामने खड़ा था, अपने कठोर मन की गहराई तक द्रवित हो गया। वह बहुत-से क्रूस-दण्डों की निगरानी कर चुका था। पर जब उसने देखा और सुना कि यीशु अपने शत्रुओं को शाप दिए बिना, बल्कि उन्हें क्षमा करते हुए, कैसे मरा, तो उसके मुँह से लड़खड़ाते हुए ये शब्द निकले: **सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था।** इस पूरे सुसमाचार में एक रोमी ही अकेला है जो ये शब्द कहता है और मान लेता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। यह उन स्त्रियों ने भी देखा जो क्रूस से थोड़ी दूर खड़ी देख रही थीं। वे जानना चाहती थीं कि उनके रब्बी के साथ क्या हो रहा है। वे क्रूस के पास खड़ी थीं, उन चेलों के विपरीत जो यूहन्ना को छोड़ सब भाग गए थे। उनमें मगदला की मरियम थी, छोटे याकूब और योसेस की माता मरियम, और सलोमी भी। ये गलील में यीशु के पीछे चलती थीं और उसकी सेवा करती थीं। पर और भी बहुत-सी स्त्रियाँ जो उसके पीछे चलती थीं, वहाँ थीं, जो यीशु के पीछे-पीछे गलील से यरूशलेम आई थीं। कोई चेला दिखाई नहीं दे रहा था – स्त्रियाँ वहाँ थीं, यीशु की सच्ची मित्र।

क्रूस यीशु के मित्रों और शत्रुओं को अलग करता है। हर एक के सामने यह प्रश्न है कि वह क्रूस के किस ओर खड़ा है। रोमी सूबेदार इस बात का प्रमाण है कि कोई पक्ष बदल सकता है और उसी पहचान तक पहुँच सकता है जिस तक वह पहुँचा।

यीशु को क़ब्र में रखा जाता है

जब साँझ हुई और सूर्यास्त के साथ सब्त शुरू हो रहा था, तो अरिमतियाह का यूसुफ साहस करके पिलातुस के पास भीतर गया और यीशु का शव माँगा। वह उसे दफ़नाना चाहता था। वह महासभा का एक प्रतिष्ठित सदस्य था और परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा में था। वह एक गुप्त चेला था, कम से कम यीशु का प्रशंसक। पिलातुस को अचम्भा हुआ, जब उसने सुना कि यीशु मर भी चुका है। कभी-कभी क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों को मरने में कई दिन लग जाते थे। उसने निश्चित होने के लिए क्रूस के पास वाले सूबेदार से पुछवाया। उसने इसकी पुष्टि की और तब उसने यूसुफ को यीशु का शव दे दिया। उसने एक महीन मलमल की चादर ख़रीदी। उसने उसे सावधानी से क्रूस से उतारा। उसने उसे चादर में लपेटा। उसने उसे अपनी नई क़ब्र में रखा, जो चट्टान में खोदी गई थी। फिर उसने गुफा-क़ब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़का दिया। यीशु की दो शिष्याओं ने ध्यान से देखा कि उसने उसे कहाँ रखा। वे मरियम मगदलीनी और योसेस की माता मरियम थीं। दुःख भरे क्षण, यह देखना और रब्बी की मृत्यु को स्वीकार कर लेने के सिवाय और कुछ न कर पाना।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, कुछ ऐसा जिसे आप अपने जीवन में उतार सकते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

क्या आपके कुछ प्रश्न हैं? उन्हें लिख लीजिए!

अध्याय 16

तीन स्त्रियाँ यीशु के शव पर सुगन्धित तेल मलने की योजना बनाती हैं

जब शनिवार की साँझ को सब्त बीत गया और यीशु का शव अरिमतियाह के यूसुफ की नई क़ब्र में एक दिन पड़ा रह चुका था, तो तीन स्त्रियों ने यीशु का अभिषेक करने के लिए बहुमूल्य और सुगन्धित तेल मोल लिए: मरियम मगदलीनी, याकूब की माता मरियम, और सलोमी। वे अपने प्रिय मसीहा के प्रति एक अंतिम कर्तव्य निभाना और उसे अंतिम सम्मान देना चाहती थीं। रविवार को बहुत तड़के, सप्ताह के पहले दिन, ठीक जब सूरज निकल रहा था, वे क़ब्र पर आती हैं। वे सोच रही थीं कि क़ब्र के भीतर जाने के लिए कौन उनके लिए उस टनों भारी पत्थर को एक ओर लुढ़काएगा। वे किसी असाधारण बात की आशा नहीं कर रही थीं और केवल अपना दुःख भरा कर्तव्य पूरा करना चाहती थीं। जब वे पहुँचती हैं, तो चकित होकर देखती हैं कि वह विशाल गोल पत्थर पहले ही लुढ़का दिया गया है। जब वे क़ब्र के भीतर जाती हैं, तो घबरा जाती हैं। सफ़ेद वस्त्र पहने एक जवान सिरहाने बैठा है, जहाँ शव होना चाहिए था। मानो यह जवान उनकी प्रतीक्षा कर रहा हो, वह कहता है: घबराओ मत! तुम यीशु नासरी को, जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ रही हो। वह अब यहाँ नहीं है। क्योंकि वह मृत्यु में से जिलाया गया है। देखो, यह वह जगह है जहाँ उन्होंने उसे रखा था। और अब यह आनन्द का संदेश उसके चेलों को सुनाओ। और विशेष रूप से पतरस को, जो अपने इनकार के कारण बहुत निराश है। वह तुमसे पहले गलील जाएगा, जैसा उसने अपनी मृत्यु से पहले कहा था। वहाँ तुम उससे मिलोगे और उसे देखोगे।

पर वे क़ब्र से दौड़कर निकलीं और भाग गईं। कंपकंपी और घबराहट ने उन्हें जकड़ लिया। और उन्होंने किसी से इसके बारे में कुछ भी कहने का साहस नहीं किया। बड़ा भय उन पर छा गया था।

“यीशु का जिलाया जाना परमेश्वर की अकल्पनीय, अभिभूत कर देने वाली उपस्थिति का भय पीछे छोड़ता है। परमेश्वर की अनुभव की जा सकने वाली उपस्थिति स्त्रियों के चेहरों पर पहचानी जा सकती है। पाठक यह जान ले: गवाहों के इस वृत्तान्त में बात केवल साधारण इतिहास की नहीं, बल्कि **इतिहास में परमेश्वर के सच्चे हस्तक्षेप** की है।”

जी उठा हुआ अपने आप को दिखाता है

सप्ताह के पहले दिन, सुबह तड़के, यीशु सबसे पहले मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया। उसमें से उसने सात दुष्टात्माएँ निकाली थीं। वह तुरन्त गई और उसने चेलों को, जो शोक कर रहे थे और रो रहे थे, यह समाचार सुनाया। जब मरियम ने उनसे कहा कि वह जीवित है और उसने उसे देखा है, तो उन्होंने उसकी एक भी बात पर विश्वास नहीं किया। इसके बाद यीशु ने अपने आप को दो और चेलों पर, अपनी मृत्यु से पहले से

भिन्न रूप में, प्रकट किया, जब वे देहात से होकर घर जा रहे थे। वे भी, जब उससे मिल चुके, तुरन्त लौट गए और बाकी लोगों को यह समाचार सुनाया। पर मरियम की तरह उन पर भी उन्होंने विश्वास नहीं किया। फिर यीशु स्वयं ग्यारहों से मिला, जब वे साथ भोजन कर रहे थे। उसने उनके अविश्वास और उनके मन की कठोरता पर उन्हें उलाहना दिया, क्योंकि उन्होंने उन गवाहों पर विश्वास नहीं किया था जिनसे वह मिला था।

यीशु का भेजने का आदेश

फिर यीशु ने उनसे कहा: सारे संसार में जाओ! सारी सृष्टि में राज्य के सुसमाचार का प्रचार करो! सब इसे सुनें! सब विश्वास करें! जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसका उद्धार होगा। जो विश्वास न करे, वह दोषी ठहराया जाएगा। जो विश्वास करते हैं, उनके साथ परमेश्वर की सामर्थ्य और राज्य और सुसमाचार के ये अलौकिक चिन्ह होंगे: मेरे नाम से वे दुष्टात्माओं को निकालेंगे और लोगों को छुड़ाएँगे। वे नई-नई भाषाएँ बोलेंगे। वे विषैले साँपों को उठा लेंगे और उन्हें झटक देंगे। यदि उन्हें मार डालने के लिए कुछ विषैला पिलाया जाए, तो उससे उनकी कोई हानि नहीं होगी। वे दुर्बलों और बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएँगे।

स्वर्ग पर उठाया जाना

जब प्रभु यीशु अपने चेलों से बातें कर चुका, तो वह उनकी आँखों के सामने स्वर्ग पर उठा लिया गया। **वहाँ वह परमेश्वर के दाहिने बैठ गया।** अमरता के लिए जी उठे हुए यीशु को उसके जीवन और मृत्यु की पीड़ा का प्रतिफल मिलता है और वह स्वर्गीय संसार में अपने पिता के पास लौट जाता है। चेले निकल पड़े और हर जगह सुसमाचार का प्रचार करने लगे। प्रभु उनके इस प्रचार के साथ रहा, जैसा उसने कहा था, और चिन्हों और चमत्कारों के द्वारा उनके वचन की पुष्टि करता रहा।

इन घटनाओं में आपको क्या छूता है, आपके मन को क्या स्पर्श करता है:

आपके लिए नया क्या है:

क्या आपने कुछ सीखा है, कुछ ऐसा जिसे आप अपने जीवन में उतार सकते हैं?

आप किस बात के लिए प्रार्थना करते हैं? आपने यहाँ यीशु के विषय में जो पढ़ा है, उसके लिए उसकी आराधना कीजिए!

अंत में

मैं बहुत आशा करता हूँ कि पढ़ते समय आपने अनुभव किया होगा कि परमेश्वर आपसे कैसे बात करता है। कैसे वह उत्साह देता है, सिखाता है, पर साथ ही हर उस बात से सावधान भी करता है जो उसकी ओर से नहीं आती और इसलिए हमें हानि पहुँचाती है।

उसकी हर उस भली बात के लिए धन्यवाद कीजिए, जो उसने आपके विषय में और सीधे आपसे कही है।

यदि आपके कुछ प्रश्न हों, तो हमें लिखिए: hj-ronsdorf@t-online.de

नए नियम के और पाठ आपको www.hans-joerg-ronsdorf.de पर मिलेंगे।

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण सुझाव और:

बाइबल पढ़िए। हो सके तो नियमित रूप से।

बाइबल दूसरे लोगों के साथ मिलकर पढ़िए – और उसके बारे में आपस में बातचीत कीजिए।

प्रार्थना कीजिए कि परमेश्वर अपने वचन को आपके लिए जीवित कर दे – ऐसे, मानो वह सीधे आपसे बोल रहा हो।

पाठ को ज़ोर से और लगातार दो बार पढ़िए।

पाठ से ये प्रश्न पूछिए:

आप इस पाठ को क्या शीर्षक देंगे? पाठ परमेश्वर और यीशु के विषय में क्या कहता है? पाठ मनुष्यों के विषय में क्या कहता है? हम पाठ से क्या सीखते हैं? हमें क्या करना चाहिए? वचन हमें कैसे उत्साहित करता है?

जब आप फिर मिलें, तो अपने अनुभवों और घटनाओं के बारे में बात कीजिए।

ऐसे मसीहियों से संपर्क और संगति खोजिए, जो यीशु मसीह से प्रेम करते हैं और उसका आदर करते हैं और बाइबल को मूल्यवान समझते हैं, पढ़ते हैं और गंभीरता से लेते हैं।